जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 46 संख्याः 73 प्रभात बीकानेर, गुरुवार 3 अक्टूबर, 2024 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रू.

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को शासन सचिवालय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तथा पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि इन दोनों महापुरूषों ने देश को एक नई दिशा देने का काम किया। गांधीजी के सत्य-अहिंसा के आदर्शों का अनुसरण करते हुए देश उनके पदचिन्हों पर चल रहा है। उनके सिद्धांतों तथा विचारों को पूरा विश्व मानता हैं। देश की आज़ादी से लेकर आज तक भी उनके सिद्धांत प्रासंगिक हैं। इस अवसर पर उपमुख्य मंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा सहित अनेक मंत्री उपस्थित थे। इसके बाद मुख्यमंत्री ने जेएलएन मार्ग स्थित गांधी सर्किल पर महात्मा गांधी तथा लाल बहादुर शास्त्री को पुष्पांजलि अर्पित की।

'अमेरिका हमेशा इज़रायल के साथ खड़ा मिलेगा, अगर-ईरान ने इज़रायल पर आक्रमण किया'

पर, अगर इज़रायल ने जवाबी हमला किया ईरान पर तो क्या अमेरिका इस हमले में भी इज़रायल के साथ खड़ा होगा?

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 अक्टूबर। मिडिल ईस्ट में पूर्ण युद्ध शुरु हो गया, भले ही इसे औपचारिक तौर पर युद्ध घोषित नहीं किया गया है। ईरान ने इज़राइल पर अटैक किया और संघर्ष दो देशों इज़राइल और ईरान के बीच है। ईरान के मिसाइल हमले का जवाब कभी भी आ सकता है।

अमेरिका के नैशनल सिक्योरिटी एडवाइज़र जैक सुलिवन ने पत्रकारों को बताया कि मिसाइलों को रास्ते में ही नष्ट करने के अभियान में अमेरिका पूर्ण सक्रिय था और लगभग 180 मिसाइलों को रास्ते में ही नष्ट कर दिया गया।

अमेरिकन राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि इज़राइल की सुरक्षा के प्रति अमेरिका का समर्थन एकदम मजबूत है और अगर ईरान से सीधा हमला होता है तो अमेरिका इज़राइल के साथ खड़ा है।

- **यह सवाल बार-बार उठ रहा है, वर्तमान इज़रायल-ईरान युद्ध के बारे में, क्योंकि ईरान द्वारा इज़रायल पर 400 मिसाइल दागने के बाद, अब इज़रायल के जवाबी हमले का इंतजार है, जो अब जल्द ही आयेगा, ऐसी आशंका है।**
- **ईरान की 400 मिसाइल इज़रायल की और बढ़ रही थीं, अमेरिका भी पूरी तरह सक्रिय था, इज़रायल के साथ इन मिसाइल्स को मार गिराने में और 180 मिसाइल नष्ट कर दी गई थी, इज़रायल पहुंचने से पहले।**
- **अगर, अमेरिका पूरी तरह इज़रायल के पक्ष में कूद पड़ता है, युद्ध का आयाम ही बदल जायेगा।**

अब देखना यह है कि ईरान पर इज़राइल का जवाबी हमला किस हद तक होगा और उसमें अमेरिका की भागीदारी कितनी होगी।

स्पष्ट रुप से ईरान ने जो मिसाइलें इज़राइल पर छोड़ी, उनमें से कुछ जमीन पर गिरीं और इज़राइल को नुकसान भी पहुंचा। ईरान ने इज़राइल के सघन आबादी वाले क्षेत्रों को अपना निशाना बनाया, जबकि पूर्व में उसने इज़राइल के सैन्य अड्डों पर निशाना साधा था।

इज़राइल पर हमले के बाद ईरान के लोगों को जश्न मनाते देखा गया। ईरान के लोगों ने अपनी सरकार से इज़राइल हमला और तेज करने के लिए आग्रह किया। ईरान ने अप्रैल में भी मिसाइल हमला किया था, जब इज़राइल ने लैबनान में कुछ सैन्य अधिकारियों की हत्या कर दी थी। तब अमेरिका और इज़राइल के कॉमबैट सिस्टम ने इन हमलों को बेअसर कर दिया था।

अब चर्चा है कि क्या इज़राइल और इसके पश्चिमी समर्थक ईरान पर और इसके परमाणु संयंत्रों पर हमले तेज करेंगे। इससे युद्ध और भीषण हो जाएगा। मिसाइल हमले के समानान्तर इज़राइल दक्षिणी लैबनान में आगे बढ़ रहा है, और पता चला है कि इसने हिजबुल्लाह के कई संसाधनों पर कब्जा कर लिया है। इज़राइली सेना को ऐसी कई सुरंगे मिली हैं, जहां हिजबुल्लाह के अड्डे हैं। इज़राइली सेनाएं उन गांवों पर कब्जा कर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राष्ट्रपति मुर्मू 3 और 4 अक्टूबर को राजस्थान दौरे पर

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 अक्टूबर। भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 3 व 4 अक्टूबर को राजस्थान की यात्रा पर रहेंगी। तीन अक्टूबर को राष्ट्रपति, उदयपुर के मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय

- **3 अक्टूबर को राष्ट्रपति मुर्मू उदयपुर के मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में तथा 4 अक्टूबर को माउण्ट आबू में ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय के कार्यक्रम में शामिल होंगी।**

के 32 वें दीक्षांत समारोह में शामिल होंगी। राष्ट्रपति चार अक्टूबर को, माउन्ट आबू में प्रजापिता ब्रह्म कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा "स्प्रिचुएलिटी फॉर क्लीन एण्ड हैल्दी सोसायटी" विषय पर आयोजित ग्लोबल समिट में भाग लेंगी। उसी दिन वे, बांसवाड़ा के मानगढ़ धाम में राजस्थान सरकार द्वारा आयोजित आदि गौरव सम्मान समारोह में शामिल होंगी।

कोटा संभागीय आयुक्त के जयपुर सहित कई ठिकानों पर ए.सी.बी. ने छापे मारे

ए.सी.बी. ने कोटा संभागीय आयुक्त आई.ए.एस. ऑफिसर राजेंद्र विजय के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति का मामला दर्ज कर इस कार्रवाई को अंजाम दिया

जयपुर/कोटा, 2 अक्टूबर (निसं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने कोटा संभागीय आयुक्त, आईएएस ऑफिसर राजेंद्र विजय के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति का मामला दर्ज कर बुधवार को जयपुर, कोटा और दौसा में उनके चार ठिकानों पर छापा मारकर तलाशी अभियान चलाया। इस दौरान 13 रैज़िडैंशियल और कॉमर्शियल प्रॉपर्टी के डॉक्युमेंट और 2 लाख 22 हजार रु. से अधिक की नकदी मिली। इसके अलावा 335 ग्राम सोने व 11 किलो 800 ग्राम चांदी के जेवर और तीन फोर व्हीलर मिले हैं। वहीं 16 बैंक खाते मिले हैं, जिनमें लाखों रुपए जमा हैं। उनके कोटा में 2 ठिकानों और जयपुर के एक ठिकाने पर 8 घंटे तक सर्च की कार्रवाई चली। वहीं, दौसा में उनके पैतृक घर को फिलहाल सील किया गया है।

छापेमारी के बाद राज्य सरकार ने राजेंद्र विजय को एपीओ कर कोटा संभागीय आयुक्त के पद से हटा दिया है। उनका चार्ज कलेक्टर डॉ.रविंद्र गोस्वामी को सौंपा है।

- **राजेंद्र विजय ने सात दिन पहले ही कोटा के डिविज़नल कमिश्नर का पदभार ग्रहण किया था**
- **तलाशी के दौरान 13 रेजिडेंशियल और कॉमर्शियल प्रॉपर्टी के डॉक्युमेंट और 2 लाख 22 हजार से अधिक की नकदी मिली। इसके अलावा 335 ग्राम सोने व 11 किलो 800 ग्राम चांदी के जेवर और तीन फोर व्हीलर तथा 16 बैंक खाते मिले हैं, जिनमें लाखों रुपए जमा हैं।**
- **राज्य सरकार ने राजेंद्र विजय को एपीओ कर कोटा संभागीय आयुक्त का चार्ज कलेक्टर डॉ.रविंद्र गोस्वामी को सौंपा है।**

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के महानिदेशक श्री डॉ. रवि प्रकाश मेहरडा ने बताया कि ब्यूरो मुख्यालय को गोपनीय सूत्र सूचना प्राप्त हुई थी कि कोटा संभागीय आयुक्त आई.ए.एस. राजेन्द्र विजय भ्रष्टाचार कर अपने एवं अपने परिजनों के नाम से आय से अधिक चल-अचल सम्पत्तियाँ अर्जित की है, जिनकी अनुमानित बाजार कीमत करोड़ों रुपयों से अधिक है।

इस सूचना का ए.सी.बी. की इन्टैलिजैंस शाखा द्वारा गोपनीय रूप से सत्यापन किया गया एवं तथ्यों की पुष्टि होने पर आय से अधिक सम्पत्तियाँ अर्जित का मामला दर्ज किया गया। एसीबी जयपुर के पुलिस उप महानिरीक्षक कालूराम रावत के सुपरवीजन में ए.सी.बी. की स्पेशल यूनिट जयपुर के अतिरिक्त पुलिस

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'भाजपा सरकार किसानों को बेवकूफ बना रही है'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 अक्टूबर। बुधवार को कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने कहा कि भाजपा सरकार ने 24 फसलों पर एम.एस.पी (मिनिमम सपोर्ट प्राइज) घोषित करके किसानों को बेवकूफ बनाया है क्योंकि 24 में से 10 फसलें तो हरियाणा में उगती ही नहीं हैं।

हरियाणा के जुलाना में एक जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने

- **कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने कहा कि भाजपा सरकार ने जिन 24 फसलों पर एम.एस.पी. घोषित की है, उनमें से दस तो हरियाणा में उगाई तक नहीं जाती हैं।**

बताया कि किसान आंदोलन के समय कैसे दिल्ली की सीमाओं पर 750 किसानों ने बलिदान दिया था। उन्होंने हरियाणा के किसानों, जवानों तथा पहलवानों के साथ किए गए अन्यायों को भी गिनाया। उन्होंने कहा, सरकार ने अग्निवीर योजना शुरू की, ताकि जवान शहीद हो जाए तो उसके माता पिता को पैंशन तक न मिले, और चार साल बाद

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'जब मैं ओलंपिक्स में डिस्क्वालिफाई हुई, मोदी जी का फोन आया था'

"पर, मैंने प्र.मंत्री जी से बात नहीं की, क्योंकि मैं अपनी भावनाओं को "सोशल मीडिया" पर हंसी मज़ाक का पात्र नहीं बनाना चाहती थी," विनेश फोगाट ने चुनावी आमसभा में जनता को संबोधित करते हुए कहा

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 2 अक्टूबर। चुनावाधीन हरियाणा में कांग्रेस उम्मीदवार तथा ओलम्पियन पहलवान विनेश फोगाट का प्रचार करते हुये, कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी ने बुधवार को जुलाना में महिलाओं से भावनात्मक रिश्ता जोड़ा। उन्होंने एक किसान परिवार से जुड़ी स्नेहपूर्ण बातें साझा की, राज्य की बालिकाओं के पक्के इरादों की सराहना की तथा फोगाट की हिम्मत की मुक्तकंठ से प्रशंसा कीं।

- **प्रियंका गांधी ने भी इस आम सभा में हरियाणा से जुड़े अपने उन अनुभवों को सुनाकर अभिभूत किया, जब उनकी पुत्री हरियाणा बॉस्केटबॉल का कोचिंग कैम्प "अटैन्ड" कर रही थी और उन्हें हरियाणा के लोगों का, विशेषकर महिलाओं का अपनापन व हिम्मत रूबरू देखने का व महसूस करने का मौका मिला था और जो संबंध उस समय बने आज भी बरकरार हैं, बल्कि समय के साथ और मजबूत हुए हैं।**

विवादित कृषि कानूनों, अग्निवीर योजना तथा बेरोजगारी को लेकर, भाजपा पर प्रहार किया। प्रियंका ने आठ साल पुरानी एक घटना का जिक्र किया, जब उनकी बेटी हरियाणा के एक बास्केटबॉल कोचिंग कैम्प में पंजीकृत हुई थी। उन्होंने कहा कि एक दिन वे अपनी बेटी को छोड़ने वहां आई थीं। तब उन्होंने कुछ समय आसपास के खेतों में गुजारा। उन्होंने सुनाया, "एक वृद्ध व्यक्ति, जिन्हें मैंने "दादू" कहा था, अपनी फसल काट रहे थे। अपने बारे में कुछ भी बताये बिना मैं उनके पास गई, मैंने उनसे कहा कि मुझे फसल काटना सिखाएं, उन्होंने मुझे सिखाया तथा वे मुझे अपने घर ले गये। उनके पूरे परिवार ने अपनी बेटी की तरह मेरा स्वागत-सत्कार किया।"

जब मुझे उनके घर पर चार-पाँच घंटे हो चुके थे, तो उनका बेटा मनोज वहाँ आया। इसे संयोग ही कहा जायेगा कि मनोज ने रायबरेली में कांग्रेस के लिये काम किया था, इसलिये वह मुझे तुरंत पहचान गया। इस बात को करीब आठ साल हो गये हैं तथा मनोज, उसके दादू और (नई दिल्ली में) मेरे घर अब भी आते-जाते हैं। यह हरियाणा की संस्कृति है। देख लीजिये, हरियाणा के लोग कितने स्नेहिल प्रकृति के हैं।"

गांधी ने एक और घटना का जिक्र किया और सुनाई, जब उनकी बेटी को

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सुप्रीम कोर्ट ने ऑर्गन ट्रांसप्लांट में चिकित्सक पर कार्यवाही पर रोक लगाई

जयपुर, 2 अक्टूबर। सुप्रीम कोर्ट ने फर्जी एन.ओ.सी. के जरिए ऑर्गन ट्रांसप्लांट करने से जुड़े मामले में फोर्टिस अस्पताल के डॉक्टर ज्योति बंसल के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई पर रोक लगा दी है। इसके साथ ही अदालत ने याचिकाकर्ता को पुलिस अनुसंधान में

- **फोर्टिस अस्पताल की डॉ. ज्योति बंसल की विशेष अनुमति याचिका पर सर्वोच्च न्यायालय ने दंडात्मक कार्यवाही पर रोक लगाई।**

शामिल होकर सहयोग करने के लिए कहा है। सुप्रीम कोर्ट ने यह निर्देश डॉ. ज्योति बंसल की विशेष अनुमति याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

एस.एल.पी. में अधिवक्ता सुमेर सिंह ओला ने कहा कि एस.ओ.जी. को

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड ने आवंटी महिला को मकान देने की बजाय 36 साल तक प्रताड़ित किया

वर्ष 1989 में विभाग द्वारा आवंटित आवास का कब्जा पीड़िता को अब राष्ट्रीय उपभोक्ता न्यायालय ने दिलाया है

-यादवेन्द्र शर्मा-

जयपुर, 2 अक्टूबर । राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड में आमजन को आवास मिलना कितना मुश्किल है, भारी भ्रष्टाचार और कितने ही अफसरों की तानाशाही झेलनी पड़ती है, इसका "उत्कृष्ट उदाहरण" अब सामने आया है। सरला जैन ने वर्ष 1988 में एचआईजी श्रेणी (उच्च आय वर्ग) में 60 हजार रु. की पूरी रकम एकमुश्त जमा करके जवाहर नगर स्कीम जयपुर में राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड से मकान खरीदा था। विभाग के तत्कालीन अफसरों ने सरला जैन को आवास नंबर "4 ट 24" आवंटन के लिए रिज़र्व किया था और उसे आवंटन पत्र जारी किया था, लेकिन भ्रष्टाचार और अफसरों की लालफीताशाही के चलते उन्हें 36 साल बाद भी मकान नहीं मिल सका। इस बीच अफसरों ने यह भूखंड़ उपलब्ध नहीं होने की बात कहकर आवास नंबर "4 स 24" देने का वादा किया था, लेकिन बाद में यह प्लॉट भी किसी अन्य को आवंटित कर दिया गया। अब 30 सितंबर 2024 को राष्ट्रीय उपभोक्ता आयोग ने राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड के आयुक्त और सचिव को लताड़ लगाई है। साथ ही जिला उपभोक्ता मंच और राज्य उपभोक्ता आयोग के द्वारा पीड़ित के पक्ष में दिए गए दोनों फैसलों को जायज़ ठहराया और हाऊसिंग बोर्ड की अपील खारिज कर दी है। अदालत ने निचली अदालत के फैसले को सही ठहराते हुए कहा कि सरला जैन को जवाहर नगर स्कीम में प्लॉट नंबर "4 स 24" दिया जाये और उस आवास में किसी का कब्जा है तो उसे खाली करवाया जाये। साथ ही पीड़ित सरला जैन को 40 हजार रुपए मानसिक हानि

- **जयपुर की जवाहर नगर स्कीम में पीड़िता सरला जैन ने हाऊसिंग बोर्ड से वर्ष 1988 में आवास "4 ट 24" खरीदा था, लेकिन विभाग ने उन्हें यह आवास देने के बजाय पहले तो दूसरा आवास "4 स 24" देने का झांसा दिया, लेकिन बाद में दोनों में से एक का भी कब्जा नहीं दिया।**
- **हैरानी की बात यह है कि हाऊसिंग बोर्ड ने आवास "4 ट 24" उपलब्ध नहीं होने की बात कही थी, लेकिन यह मकान विभाग के पास वर्ष 2000 तक उपलब्ध था, जिसे 14 जून 2000 को राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड के तत्कालीन वरिष्ठ अधिकारी अब्दुल मजीद की पत्नी सीमा मतीम को आवंटित कर दिया।**
- **इससे भी ज्यादा हैरतअंगेज़ बात यह है कि, हाऊसिंग बोर्ड ने सरला जैन को दूसरा आवास "4 स 24" देने का जो वादा किया था, वह भी नहीं निभाया। पहले तो उन्हें पत्र लिखकर बताया गया कि, राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड ने यह आवास "हाऊसिंग कमिश्नर" के नाम पर रिज़र्व कर रखा है।**

पहुंचाने का मुआवजा देने के साथ ही 5 हजार रु. कानूनी खर्च राशि दी जाये। उल्लेखनीय है कि निचली अदालत ने 30 मार्च 2016 को पीड़ित के पक्ष में फैसला सुनाते हुए कहा था कि अगर 2 माह में पीड़ित को आवास का कब्जा और मुआवजा राशि नहीं दी गई तो राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड को उसे 9 प्रतिशत सालाना ब्याज दर के साथ यह रकम चुकानी पड़ेगी।

इस मामले में याचिकाकर्ता सरला जैन की ओर से अधिवक्ता सिद्धार्थ रांका ने पैरवी की। उन्होंने बताया कि राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड ने सरला जैन को 17 नवंबर 1988 को जवाहर नगर स्कीम में आवास "4 ट 24" आवंटित किया था। इसके बदले पीड़ित ने 60 हजार रु. की रकम एकमुश्त चुकाई थी। इसके बाद 20 मार्च 1989 को यह हाऊसिंग बोर्ड ने पत्र जारी करके सरला जैन को कहा कि, विभाग के पास

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नड्डा 5 अक्टूबर को जयपुर रहेंगे

जयपुर, 2 अक्टूबर । भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा शनिवार को जयपुर प्रवास पर रहेंगे। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने बताया कि राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा शनिवार शाम 7 बजे जयपुर एयरपोर्ट पर आएंगे। इस दौरान सांगानेर एयरपोर्ट पर नड्डा का भव्य

- **वे चार्टर्ड अकाउन्टैंट्स से मुकालात करेंगे व उन्हें भाजपा का सदस्य बनायेंगे। प्रदेश कार्यालय में प्रदेश के जनप्रतिनिधियों से भी सदस्यता अभियान पर संवाद करेंगे।**

स्वागत किया जाएगा। राठौड़ ने बताया कि राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा शाम 7.30 बजे से स्टेच्यू सर्किल स्थित एक होटल में जयपुर के चार्टर्ड अकाउंटेंट्स से संवाद करेंगे और सदस्य बनाएंगे। भाजपा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

नशा करने वाले मित्र से भले कोई कितना ही प्रेम क्यों ना करता हो, पर जब निर्भर करने का अवसर आता है तो वह भरोसा उस पर करता है जो नशा न करता हो। -शरतचंद्र

सुरक्षा मानकों की ही जानकारी नहीं तो कैसे रुकेंगे सड़क हादसे

बात थोड़ी समझ में कम आने वाली है पर इसे सिरे से खारिज भी नहीं किया जा सकता कि देश की राजधानी दिल्ली में निवास करने वाले 90 प्रतिशत लोगों को सड़क सुरक्षा मानकों की पूरी तरह से जानकारी नही है। साल दर साल सड़क हादसों और सड़क हादसों के कारण हताहत व मौत के मुहं में समाने वालों के आंकड़े कम होने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। कम्युनिटी अगेंस्ट ड्रंकन ड्राइविंग (कैड) द्वारा अगस्त, 2023 से 31 दिसबंर 2023 तक दिल्ली में कराये गये सर्वे की रिपोर्ट तो यही कह रही है। थोड़ी देर के लिए सर्वे रिपोर्ट को भी अत्यधिक बढ़ा-चढ़ा कर बताई हुई मान लें तब भी सड़क दुर्घटना के आंकड़ों से तो मुंह नहीं मोड़ा जा सकता। एक बात और साफ हो जाती है कि जब देश की राजधानी दिल्ली के यह हाल है तो फिर गांव कस्बावासियों में सड़क सुरक्षा मानकों का पूरा ज्ञान होने की अपेक्षा करना पूरी तरह से बेमानी होगी। कैड के संस्थापक प्रिस सिंघल की माने तो सड़क हादसों का सबसे बड़ा कारण लोगों को सड़क सुरक्षा मानकों की जानकारी नहीं होना है।

सरकार द्वारा भले ही लाख दावें किये जाते हों कि वाहनों के चलाने के लिए जारी होने वाले ड्राइविंग लाइसेंस जारी करने से पहले परीक्षा ली जाती है। जांच परख कर ही लाइसेंस जारी होते हैं पर हकीकत कुछ और ही सामने आती है। कैड के दिल्ली के सर्वे में ही यह सामने आया है। सही मायने में लोगों को अधिकांश जानकारी एक-दूसरे को देखकर ही मिलती है। यही कारणा है कि नियमों की पालना के प्रति जो गंभीरता होनी चाहिए वह दिखाई ही नहीं देती। दिल्ली में ही 93 फीसदी लोगों को पता नहीं है ब्लेक स्पॉट कहां-कहां है? सड़क पर चलने वाले 67 फीसदी लोग अपने आपको असुरक्षित महसूस करते हैं। कहा तो यहां तक जाता है कि अधिकांश लोगों द्वारा लाइसेंस लेने के लिए टेस्ट ही नहीं दिया जाता। दलालों के माध्यम से घर बैठे लाइसेंस मिल जाते हैं। ऐसे में सड़क हादसों में कमी की आश करना दिवा स्वप्न देखने की तरह ही है।

आज जो हालात सामने हैं उसमें घर से निकलने के बाद सकुशल वापिस पहुंचना किसी उपलब्धि से कम नहीं माना जाता। एक और सड़कों की हालात, दूसरी और यातायात के बढ़ते दबाव के चलते रोड रेज की घटनाएं और रही-सही कसर यातायात नियमों की पूरी जानकारी नहीं होने से सड़क हादसों में कमी होने का नाम ही नहीं लिया जा रहा है। कहा तो यहां तक जाता है कि अधिकांश लोगों द्वारा लाइसेंस लेने के लिए टेस्ट ही नहीं दिया जाता। दलालों के माध्यम से घर बैठे लाइसेंस मिल जाते हैं। ऐसे में सड़क हादसों में कमी की आश करना दिवा स्वप्न देखने की तरह ही है।

आज जो हालात सामने हैं उसमें घर से निकलने के बाद सकुशल वापिस पहुंचना किसी उपलब्धि से कम नहीं माना जाता। एक और सड़कों की हालात, दूसरी और यातायात का बढ़ता दबाव, तीसरा युवाओं में अत्यधिक आक्रामकता के चलते रोड रेज की घटनाएं और रही-सही कसर यातायात नियमों की पूरी जानकारी नहीं होने से सड़क हादसों में कमी होने का नाम ही नहीं लिया जा रहा है। मजे की बात तो यहां तक है कि रेड लाईट पर वाहन जेब्रा क्रॉस पर ही खड़े मिलेंगे तो दूसरी और अधिकांश आम नागरिक भी सड़क पार करते समय ना तो जेब्रा क्रॉस या फुट आवेर ब्रिज का उपयोग ही नहीं करते। यह अपने आप में बड़ी लापरवाही होने के साथ ही हादसों को न्योता देने वाली स्थिति है। वाहनों में जिस तरह से लाईट लगी आने लगी है और जिस तरह से आधी लाईट को पहले काला करके रखने की सख्ती से पालना होती थी और यहां तक देखा जाता था कि पुलिस वाले या एनजीओ के लोग चौराहों पर काला कलर लेकर खड़े रहने के साथ ही स्वंय वाहन की लाईट के उपरी आधे हिस्से को काले रंग से पोत देते थे ताकि सामने वाले पर सीधे रोशनी ना पड़े और वह आसानी से देख सके कि सामने वाहन किस गति से आ रहा है। वाहनों में साइड में मुड़ने के पहले इंडिकेटर देने के लिए इंडिकेटर तो होते हैं पर उसके उपयोग में भी लापरवाही देखने को मिल जाती है। दरअसल देखा जाए तो आम आदमी भी सड़क सुरक्षा मानकों की पालना के प्रति उतना गंभीर नहीं दिखता जितना होना चाहिए। इसमें एक बड़ा कारण नियमों की जानकारी की कमी व अवेयरनेस की कमी होना आम है।

दर असल सड़क हादसें रोकने हैं तो हमें लोगों को जागरुक तो करना ही होगा। किसी जमाने में जब सिनेमा हॉल में कोई पिक्चर देखने जाते थे तो जागरुकता से जुड़ी सरकारी डॉक्यूमेंटरी को भी दिखाया जाता था। सामान्यत: इंटरवेल के ठीक बाद फिल्म ऐसी जागरुकता वाली डॉक्यूमेंटरी के बाद ही चलती थी। चैनलों पर आने वाले कार्यक्रमों के बीच विज्ञापनों की तरह ही जागरुकता की इस तरह की डॉक्यूमेंटरी दिखाने के लिए बाध्य किया जाएं भले ही दिन में एकाध बार ही हो तो उसका असर देखने को मिलेगा। इसके लिए लोकप्रिय धारावाहिकों या न्यूज के दौरान कुछ सेकेण्ड्स की क्लिपिंग के माध्यम से किया जा सकता है। एक बात साफ हो जानी चाहिए कि सड़क हादसों को रोकना है, न्यूनतम स्तर पर लाना है तो सुरक्षा मानकों की जानकारी और पालना सुनिश्चित करने के लिए गंभीर होना ही होगा।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल गुरूवार 3 अक्टूबर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

अश्विन मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, हस्त नक्षत्र दिन 3:32 तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि 4:24 तक, किस्तुघ्न करण दिन 1:39 तक, चन्द्रमा शुक्रवार प्रात: 5:06 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-वृष, शुक्र-तुला, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज से शारदीय नवरात्रा आरम्भ होगा। आज अग्रसेन जयन्ती और महामातामह श्राद्ध है। आज घट स्थापना का सर्वश्रेष्ठ समय प्रात: 6:24 से 8:45 तक है। उसके अलावा अभिजित मुहूर्त दिन 11:52 से 12:39 तक भी घट स्थापना की जा सकती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:32 तक, चर 10:48 से 12:16 तक, लाभ-अमृत 12:16 से 3:12 तक, शुभ 4:39 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:24, सूर्यास्त 6:08

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृष

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। रचनात्मक कार्यों में समय व्यतीत होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कर्क

परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

सिंह

आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कन्या

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में परेशानी अभी बनी रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा।

वृश्चिक

व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

मकर

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

मीन

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

समाजवाद के प्रणेता अहिंसावादी प्रथम वैश्य सम्राट महाराजा अग्रसेन

डॉ. जे.के. गर्ग

निर्विवाद रूप से किसी भी राष्ट्र या समाज एवं परिवार को उन्नत विकसित और कल्याणकारी बनाने के लिये उसके आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्तम्भों का मजबूत होना अति आवश्यक है। इन चारों स्तंभों को दृढ़ करके ही राष्ट्र को प्रगतिशील एवं विकसित देश बनाया जा सकता है। लगभग 5144 वर्ष पूर्व महाराजा अग्रसेनजी इन्हीं चार स्तंभों को मजबूत कर समद्धशाली, कल्याणकारी समाजवादी एवं शक्तिशाली राज्य का निर्माण करने में सफल हुए थे। अग्रसेन का जन्म द्वापर युग के अंत वह कलयुग के प्रारंभ में लगभग 5145 वर्ष पूर्व अश्विनशुक्ल प्रतिपदा के दिन प्रताप नगर के सूर्यवंशी राजा वल्लभसेन के यहाँ हुआ था उनकी माताजी का नाम भगवतीदेवी था। प्रतापनगर राजस्थान एवं हरियाणा राज्य के बीच सरस्वती नदी के किनारे स्थित हुआ करता था।

ऐसा भी कहा जाता है कि महाराजा अग्रसेन भगवान श्रीराम के पुत्र कुश की 34 व्रीं पीढ़ी के थे। इस मान्यता के मुताबिक अग्रवंशी भगवान राम के वंशस होते है। कहा जाता है कि महाभारत के दसवें दिन राजा वल्लभसेन वीर गति को प्राप्त हो गये थे। पन्द्रह वर्ष की अल्प आयु मे ही अग्रसेनजी ने महाभारत के धर्मयुद्ध में पांडवों की तरफ से भाग लिया था। भगवान श्रीकृष्ण भी उनकी बुद्धीमता, शोर्य, पराक्रम, समझबूझ से अत्यंत प्रभावित हुए थे और उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि युवा अग्रसेन भविष्य में एक पराक्रमी सम्राट एवं युग पुरुष होंगे।

युवा अग्रसेन ने सर्पों के राजा नागराज की बेटी राजकुमारी माधवी के स्वयंवर में अनेकों राजाओं, राजकुमारों और स्वर्ग के सम्राट इंद्रदेव के साथ भाग लिया था। स्वयंवर में राजकुमारी माधवी ने राजकुमार अग्रसेन का चयन कर उनका वरण किया। अग्रसेन माधवी के विवाह से दो विभिन्न संस्कृतियों एवं परिवारों का मिलन हुआ क्योंकि राजकुमार अग्रसेन जहाँ एक सूर्यवंशी थे वहीं राजकुमारी माधवी एक नागवंशी थी। राजकुमारी माधवी का विवाह अग्रसेन जी के साथ हो जाने से इंद्रदेव ने अपने आप को अपमानित महसूस किया और वे ईर्ष्या ग्रस्त होकर बहुत क्रोधित हुए और इन्द्र ने प्रताप नगर के निर्दोष स्त्री-पुरुषों, बालक-बालिकाओं को प्रताड़ित करने हेतु प्रताप नगर पर कई वर्षा तक बारिश नहीं होने दी जिससे प्रताप नगर में भयानक अकाल पड गया। सम्राट अग्रसेन ने अपनी प्रजा एवं प्रताप नगर की सुरक्षा और राजधर्म के पालनार्थ इंद्र के खिलाफ धर्मयुद्ध प्रारम्भ कर दिया। युद्ध में इंद्र की पराजय हुई। पराजित इंद्र ने नारदमुनि से अनुनय-विनय कर उनकी सम्राट अग्रसेन से सुलह कराने का निवेदन किया। नारद मुनि ने दोनो के बीच में मध्यस्थता करके सुलह करवा दी।

यहाँ यह स्मरण रखने वाली बात है कि महाभारत के युद्ध के कारण जन धन की बहुत तबाही हुई थी इसलिए अपने राज्य की खुशहाली के वास्ते महाराजा अग्रसेन ने काशी जाकर भगवान शिव की कठोर तपस्या की जिससे खुश हो कर भगवान शिवजी ने उन्हें दर्शन दिया और उनको आदेश दिया कि वे महालक्ष्मी जी की पूजा और ध्यान करे। अग्रसेन ने महालक्ष्मी की पूजा आराधना शुरू कर दी। माँ लक्ष्मी ने उनकी परोपकार हेतु की गई तपस्या से खुश होकर उन्हें दर्शन दिए और आदेश दिया कि वे अपना एक नया राज्य बनायें और क्षत्रिय परम्परा के स्थान पर वैश्य परम्परा अपना लें। माता लक्ष्मी ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि उनके और उनके अनुयायियों को कभी भी किसी चीज की कमी नहीं होगी, वे सभी सदैव सुख-सुविधा युक्त जीवन व्यापन करगें। लक्ष्मी माता का आदेश मान कर अग्रेसेन महाराज ने क्षत्रिय कुल को त्याग वैश्य धर्म को अपना लिया, इस प्रकार महाराजा अग्रसेन प्रथम वैश्य सम्राट बने।

देवी महालक्ष्मी से आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद राजा अग्रसेन ने नए राज्य की स्थापना एवं उस राज्य की राजधानी के चयन हेतु रानी माधवी के साथ भारत का भ्रमण किया, अपनी यात्रा के दौरान वे एक जगह रुके जहाँ उन्होंने देखा कि कुछ शेर और भेड़िये के बच्चे साथ खेल रहे थे। राजा अग्रसेन ने रानी माधवी से कहा के ये बहुत ही शुभ दैवीय संकेत है जो हमें इस पुण्य भूमि पर हमारे राज्य की राजधानी को स्थापित करने का इशारा कर रहा है। ऋषि मुनियों और ज्योतिषियों की सलाह पर नये राज्य का नाम अग्रेयगण रखा गया जिसे कालान्तर में यह स्थान अग्रोहा नाम से जाना गया। अग्रोहा हरियाणा में हिसार के पास हैं। आज भी यह स्थान अग्रवाल समाज के लिए तीर्थ स्थान के समान है। यहां भगवान अग्रसेन, माता माधवी और कुलदेवी माँ लक्ष्मी जी के भव्य और दर्शनीय मंदिर है।

महाराजा अग्रसेन जी के राज्य में यह परंपरा थी कि जो भी व्यक्ति या परिवार उनके राज्य में आकर बसता था, अग्रोहा के सभी निवासी नवागंतुक नागरिक को सम्मान और स्वागत के रूप में एक रुपया और एक ईंट भेंट करते थे। कहा जाता है कि उस समय अग्रोहा में लगभग एक लाख से अधिक परिवार बसते थे। इस प्रकार उनके राज्य में आने वाला हर नागरिक एक लाख रुपये तथा एक लाख ईंटों का स्वामी बन जाता था। इन रुपयों से वह अपना व्यवसाय प्रारम्भ कर लेता था वहीं ईंटों से अपना खुद का मकान बना लेता था। यही परंपरा समाजवाद की ही मिसाल है निसंदेह अग्रसेन जी ने विश्व में सबसे पहले समाजवादी राष्ट्र की स्थापना की थी।

पशु बलि बंद करने वाले प्रथम सम्राट कुलदेवी माता लक्ष्मी की कृपा से भगवान अग्रसेन के 18 पुत्र हुये। महर्षि गर्ग ने भगवान अग्रसेन के 18 पुत्र के साथ 18 यज्ञ करने का संकल्प करवाया। उन दिनो यज्ञों में पशुबलि दी जाती थी। जिस समय 18 वें यज्ञ में जीवित पशुओं की बलि देने की तैयारी की जा रही थी उस वक्त एक घोडा बली के लिए लाया गया। महाराज अग्रसेन ने देखा कि घोड़े की निरीह आँखों से अविरल आंसू बह रे थे और वो निरीह पशु यज्ञ की वेदी से दूर जाने और वहां से भागने की कोशिश कर रहा था। इस दृश्य को देख कर महाराज अग्रसेन का दिल दया से भर गया और वे आहत भी हुए। उन्होंने सोचा कि ये कैसा यज्ञ है जिसमें हम मूक जानवरों की बलि चढ़ाते है? महाराजा अग्रसेन ने पशु वध को बंद करने के लिये अपने मंत्रियों के साथ विचार-विमर्श किया और अपने मंत्रिमंडल के विचारों के विपरीत जाकर उन्हें समझाया कि अहिंसा कभी भी कमजोरी नहीं होती है बल्कि अहिंसा तो एक दूसरे के प्रति प्रेम और अपनापन जगाती है। महाराजा अग्रसेन ने तुरंत प्रभाव से मुनादी करवा दी की उनके राज्य मे कभी भी कोई हिंसा और जानवरों की हत्या नहीं होगी। अग्रसेन जी अहिंसा परमो धर्म का संदेश देने वाले प्रथम महाराजा बन अहिंसा का संदेश उन्होंने भगवान बुद्ध और भगवान महावीर के अहिंसा के संदेश से 2500 साल पहले दे दिया था।

भगवान अग्रसेन ने एक तांत्रिक शासन प्रणाली के स्थान पर एक नयी प्रजातांत्रिक राज्य व्यवस्था को जन्म दिया। महाराजा अग्रसेन जी पहले शासक थे जिन्होंने सहकारिता के आदर्श को सामाजिक जीवन में प्रतिस्थापित किया। अग्रवाल के 18 गोत्र एवं उनका नामकरण हममें से अधिकांक्ष लोगों की मान्यता है कि अग्रवालों के 18 या साढ़े सत्तरह गोत्रो के नाम उनके 18 पुत्रों के नाम से रखें गये है किन्तु वास्तविकता में गोत्रो के नाम 18 यज्ञ करवाने वाले ऋषियों के नाम से है। महर्षि गर्ग ने भगवान अग्रसेन को 18 पुत्र के साथ 18 यज्ञ करने का संकल्प करवाया। माना जाता है कि इन 18 यज्ञों को ऋषि मुनियों ने सम्पन्न करवाया और इन्हीं ऋषि-मुनियों के नाम पर ही अग्रवंश के गोत्रों का नामकरण हुआ। प्रथम यज्ञ के पुरोहित स्वयं गर्ग ऋृषि बने, उन्होंने राजकुमार विभु को दीक्षित कर उन्हें गर्ग गोत्र से मंत्रित किया। इस प्रकार अग्रवालों के 18 गोत्र हैं। ऋृषियों द्वारा प्रदत्त अठारह गोत्रों को भगवान अग्रसेन के 18 पुत्रों के साथ भगवान द्वारा बसाई 18 बस्तियों के निवासियों ने भी धारण कर लिया एक बस्ती के साथ प्रेम भाव बनाये रखने के लिए एक सर्वसम्मत निर्णय हुआ कि अपने पुत्र और पुत्री का विवाह अपनी बस्ती में नहीं दूसरी बस्ती में करेंगे। आगे चलकर यह व्यवस्था गोत्रों में बदल गई जो आज भी में प्रचलित है। राज्य के उन्हीं 18 गणों से एक-एक प्रतिनिधि लेकर उन्होंने लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना की, जिसका स्वरूप आज भी हमें भारतीय लोकतंत्र के रूप में दिखाई पडता है। महाराजा अग्रसेन ने परिश्रम से खेती, व्यापार एवं उद्योगों से धनोपार्जन के साथ-साथ उसका समान वितरण और आय से कम खर्च करने पर बल दिया। जहां एक ओर अग्रसेन जी ने वैश्य जाति को न्याय पूर्ण व्यवसाय का प्रतीक तराजू प्रदान किया वहीं दूसरी ओर उन्होंने अपनी प्रजा को आत्मरक्षा के लिए शास्त्रों के उपयोग की शिक्षा भी प्रदान करवाई थी। कुलदेवी महालक्ष्मी से परामर्श पर वे आग्रेय गणराज्य का शासन अपने ज्येष्ठ पुत्र विभु के हाथों में सौंपकर तपस्या करने चले गए। वर्तमान में अग्रवंशियों की संख्या लगभग आठ करोड़ है। अग्रसेन जी के वंशज आज भी उन्हीं की विचारधारा से प्रभावित होकर जनकल्याण के हितार्थ धर्मशाला, मंदिर, अनाथालय, अस्पताल पुस्तकालय, स्कूल एवं कालेज की स्थापना करने में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

सच्चाई तो यही है कि महाराजा अग्रसेन ने अपने विशाल परिवार को हमेशा एकता के सूत्र मे बांध कर एकजुट रक्खा। इसलिए सम्राट अग्रसेनजी ने अपने आपको एक महान एवं सफल मैनेजमेंट गुरु के रूप में स्थापित किय। महाराजा अग्रसेन ओर माता माधवी ने अपने सभी 18 पुत्रों को श्रेष्ठतम संस्कार प्रदान किये थे। महाराजा अग्रसेन को समाजवाद का प्रवर्तक, अहिसां के पुजारी, सुयोग्य प्रशासकएवं आदर्श मैनेजमेंट गुरु के रूप में जाना जाता है आठ करोड़ से ज्यादा अग्रवालों के लिये उनके सिद्धांत हमेशा अनुकरणीय और प्रेरक बने रहेगें। याद करने योग्य बात यह भी है सम्राट अकबर के नवरत्नों में दो नवरत्न अग्रवाल थे। अग्रसेनजी के 5145वें जन्मदिवस पर कोटि कोटि प्रणाम।

-डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर

शारदीय नवरात्र आज से, घर-घर होगी घट स्थापना

गरबा-डांडिया की रहेगी धूम, तृतीया तिथि बढ़ने से 10 दिन के होंगे नवरात्र

■ नवरात्र पर चुनरी, पूजन सामग्री, मनियारी, फल और बर्तन तथा कन्या पूजन का सामान बेचने वाली दुकानों पर ग्राहकों की भीड़ जुटी रही

अजमेर/जोधपुर, (कासं)। सनातन संस्कृति हिंदू धर्म में पितृपक्ष के बाद शारदीय नवरात्रि की शुरुआत होती है, जोकि हर साल आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि के दिन से शुरू होते हैं। तीन अक्टूबर गुरुवार से शारदीय नवरात्र की शुरुआत के साथ ही शहर में गरबा-डांडिया की धूम शुरू हो जाएगी। तृतीय तिथि बढ़ने से नवरात्र दस दिनों 12 अक्टूबर तक होंगे।

शारदीय नवरात्र 3 से 12 अक्टूबर तक मनाए जाएंगे। नवरात्र के पहले दिन से श्रद्धालु घरों में घट स्थापना करेंगे और 10 दिनों तक नियमों का पूर्ण विधि से पालन करते हुए मां दुर्गा की अराधना की जाएगी। नौ दिनों तक चलने वाले नवरात्र पर्व में श्रद्धालु उपवास रख माता के विभिन्न रूपों की पूजा करेंगे, माता की चौकी सजाई जाएगी। जौ रोपाई कर पूजा अर्चना होगी तथा अष्टमी को कंचक पूजन होगा। नवरात्र के पहले दिन शैलपुत्री की पूजा होती है। नवमी के दिन श्रद्धालु कन्या पूजन कर नवरात्र पूजन संपन्न करेंगे।

नवरात्र के अवसर पर श्रद्धालु चुनरी, पूजन सामग्री, मनियारी, फल और बर्तन तथा कन्या पूजन का सामान बेचने वाली दुकानों पर ग्राहकों की भीड़ जुटी रही। त्यौहारी सीजन शुरू होने के साथ ही बाजारों में भीड़ उमड़ रही है, दुकानदारों के चेहरे पर भी रौनक दिख रही है।

पांडाल में गरबा-डांडिया की मचेगी धूम :-नवरात्रि पर इस बार भी शहर पूरी तरह उत्सव में डूबने को आतुर दिखाई दे रहा है। शहर में छोटे-बड़े पांडालों में भक्त नाचते गाते मां अंबे को रिझाएंगे। शहरवासी के साथ इवेंट आयोजक भी तैयारी जोर-शोर से कर रहे हैं। विभिन्न स्थानों पर गरबा डांडिया होगा। कई जगह प्रतियोगिताएं भी आयोजित होंगी।

पंडित आचार्य पवन शर्मा ने बताया कि तृतीया तिथि की वृद्धि होने के कारण शारदीय नवरात्रि 3 से 12 अक्टूबर तक दस दिनों तक होंगे। नवमी की पूजा और विजयादशमी पर्व भी एक ही दिन मनाया जाएगा। इस बार 5 एवं 6 अक्टूबर को तृतीया तिथि रहेगी। इस कारण शारदीय नवरात्रि का समापन 12 अक्टूबर को होगा और इसी दिन दशहरा भी मनाया जाएगा। अनीष व्यास ने बताया कि तृतीया तिथि 5 अक्टूबर को प्रातरू 5:31 बजे शुरू होकर अगले दिन 6 अक्टूबर सुबह 7:50 बजे तक रहेगी। यह तिथि दोनों दिन के सूर्योदय को स्पर्श करेगी। इसलिए दोनों दिन तृतीया का पूजन होगा।

मेहरानगढ़ दुर्ग में चामुण्डा माताजी के दर्शन प्रात: सात बजे से सायं पांच बजे तक होंगे : जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग में चामुण्डा माताजी के मंदिर में आसोजी नवरात्रा का प्रारम्भ कुंभ स्थापना के साथ गुरूवार 3 अक्टूबर की होगा। नवरात्रा में मंदिर में दर्शन की व्यवस्था प्रात: 7 बजे से शाम 5 बजे तक रहेगी। मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट के महाप्रबंधक जगत सिंह राठौड़ ने बताया कि सतवर्ती पाठ का संकल्प और स्थापना का मुहूर्त सुबह 1 2.15 से 1. 15 बजे के बीच का निकला है। जोधपुर राजपरिवार की इष्ट देवी मां चामुण्डा की पूजा अर्चना करने के लिए पूर्व महाराजा गजसिंह व हेमलता राज्ये उपस्थित रहेंगे। घनश्याम त्रिवेदी ब्रह्म मुहूर्त्त में मां चामुण्डा, मां कालकाजी, मां सरस्वती एवं बच्छराजजी की मूर्तियों को पवित्र जल से स्नान करायेंगे और लाल रंग की कोर तुर्रियां लगी पोषाक धारण करवायेंगे। प्रात: काल मंदिर के शिखर पर मुख्य ध्वजा चढ़ाई जायेगी और चारों दिशाओं में छोटी ध्वजाएं चढ़ाई जायेगी।

श्री चामुण्डा मंदिर के पास 'उपासनालय' कक्ष में नौ वेदपाठी ब्राह्मण स्थापना 3 अक्टूबर से 11 अक्टूबर तक दुर्गापाठ का वाचन करेंगे। नवरात्रा के अंतिम दिन से पूर्व होमाष्टमी की रात हवन प्रारंभ किया जायेगा जिसकी पूर्ण आहुति शनिवार ,12 अक्टूबर नवमी को प्रात: 10.35 से 11 बजे के बीच में गजसिंह एवं हेमलता राज्ये द्वारा की जायेगी व गज सिंह की तिलक आरती प्रात: 11.01 से 11.25 तक व नवमी को प्रात: 11.55 से 12.10 के बीच थापना जी के उत्थापना का मुहूर्त्त होगा।

उन्होंने बताया कि प्रतिवर्ष की भांति इस बार भी प्रशासन के सुझावानुसार सभी व्यवस्थाओं को अन्तिम रूप दिया गया है। जयपोल के बाहर से ही एक पंक्ति में लाईनों की व्यवस्था की गई जो मंदिर तक रहेगी तथा डी.एफ.एम.डी. गेट से ही जयपोल व फतेहपोल से दर्शनार्थियों को प्रवेश दिया जायेगा। पट्टे पर महिलाओं, बच्चों एवं वृद्धजनों के लिये आने-जाने की व्यवस्था की गई है वे वहीं से जायेंगे और वहीं से आयेगे। इसी प्रकार पुरुषों एवं युवाओं के लिये सलीम कोट से होते हुए बसन्त सागर से आने-जाने की व्यवस्था की गई है।

'यूरिया-डीएपी के साथ टैगिंग कर अन्य उत्पाद बेचने वालों पर कार्यवाही करें'

■ आयुक्त कृषि चिन्मयी गोपाल ने जिलों में कार्यरत विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि उर्वरक विक्रेताओं के प्रतिष्ठानों का समय-समय पर निरीक्षण कर उर्वरकों के विक्रय पर निरन्तर निगरानी रखें

जयपुर। राज्य में इस वर्ष अच्छा मानसून रहने के कारण फसलों की बुआई का क्षेत्रफल बढ़ने के साथ उर्वरकों की मांग भी बढ़ रही है। कृषकों को मांग के अनुसार समय पर उर्वरक उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार हर सम्भव प्रयास कर रही है। आयुक्त कृषि चिन्मयी गोपाल ने बताया कि उर्वरक विक्रेताओं द्वारा यूरिया, डीएपी, एसएसपी एवं एनपीके उर्वरको के साथ अन्य उत्पाद सल्फर, हरबीसाईट, पेसटीसाईड, सुक्ष्म तत्व मिश्रण, बायो फर्टिलाईजर आदि उत्पाद कृषकों द्वारा नही चाहने पर भी टैगिंग कर बेचे जा रहे है, जो कि अनुचित है। कृषि आयुक्त ने जिलों में कार्यरत विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि उर्वरक विक्रेताओं के प्रतिष्ठानों का समय-समय पर निरीक्षण कर उर्वरको के विक्रय पर निरन्तर निगरानी रखते हुये उर्वरकों के साथ अन्य उत्पादों की टैगिंग करने वाले विक्रेताओं के विरूद्ध उर्वरक नियंत्रण आदेश, 1985 के प्रावधन के अनुसार कार्यवाही करें।

उन्होंने कहा कि विभागीय अधिकारी उर्वरक विक्रेताओ के पास उपलब्ध स्टॉक का पीओएस स्टॉक से मिलान कर भौतिक सत्यापान करें। जिलें में उर्वरको की कही भीं कोई कालाबाजारी एवं जमाखोरी नही हो। जिले में उर्वरकों के वितरण पर सतत् निगरानी रखते हुये जिलें के कृषकों को ही उर्वरको का वितरण करें।

रामप्रसाद सराफ चूरू नागरिक परिषद कोलकाता के अध्यक्ष बने

■ परिषद की वार्षिक बैठक में ताराचन्द मनोत, पवन धानुका उपाध्यक्ष, जगतसिंह बैद सचिव, भरत बैद सचिव व सुमित सेकसरिया कोषाध्यक्ष चुने गए

जयपुर। चूरू मूल के कोलकाता प्रवासी अतिंद्रा ग्रुप के मुखिया रामप्रसाद सराफ चूरू नागरिक परिषद कोलकाता के नये अध्यक्ष चुने गए हैं।

परिषद की वार्षिक बैठक में ताराचन्द मनोत, पवन धानुका उपाध्यक्ष, जगतसिंह बैद सचिव, भरत बैद सचिव व सुमित सेकसरिया कोषाध्यक्ष चुने गए। वहीं निर्वतमान अध्यक्ष बीएल सोती बतौर आईपीपी परिषद से जुड़े रहेंगे। अध्यक्ष सराफ ने कहा कि वे कोलकाता एवं चूरू में सामाजिक सरोकारों से परिषद को और अधिक जोड़ेंगे तथा अपने कार्यकाल में सभी को जोड़ते हुए अपना अधिकतम योगदान देंगे। इस अवसर पर अध्यक्ष रामप्रसाद सराफ एवं नवीन कार्यकारिणी का आईपीपी नारायण जैन, डॉ. एस.के. शर्मा, बसंत पारख, प्रकाश पारख, राजेंद्र बछावत, सुनील सारड़ा, शांतिलाल कोठारी, कांतिलाल सुराणा, पवन अग्रवाल, दीपक जैन, मंजु अग्रवाल, कुलदीप मनोत आदि ने अभिनंदन किया।

साहित्य, संस्कृति एवं सामाजिक सरोकारों से जुड़ी प्रयास संस्थान चूरू के सचिव कमल शर्मा के मुताबिक संस्था को भूमि क्रय हेतु सराफ ने दो लाख इक्कावन रूपये की सहायता प्रदान की थी। साथ ही संस्थान की तिमाही राजस्थानी पत्रिका लीलटांस के प्रकाशन के लिए भी अस्सी हजार से अधिक राशि का आंशिक आर्थिक सहयोग किया था।

'महात्मा गांधी ने दुनियां को सत्य और अहिंसा के पथ पर चलना सिखाया'

बीकानेर,(कासं)। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री स्व. लालबहादुर शास्त्री की जयंती के अवसर पर बुधवार को गांधी पार्क में सर्वधर्म प्रार्थना सभा आयोजित की गई।

इस दौरान प्रभुदयाल गहलोत द्वारा बापू के प्रिय भजन और रामधुन प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर विधायक व्यास ने कहा कि महात्मा गांधी ने दुनियां को सत्य और अहिंसा के पथ पर चलना सिखाया। युवा पीढ़ी को उनके आदर्शों का अनुसरण करना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दुनियां में भारत को नई पहचान दिलाई है। यह हम सबके लिए गर्व का विषय है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक नागरिक को देश के विकास में सकारात्मक सहयोग देना चाहिए।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर विधायक जेठानंद व्यास ने श्रद्धांजलि दी।

इस दौरान नगर निगम द्वारा स्वच्छता पर आधारित नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया। इसके माध्यम से आमजन को साफ-सफाई रखने, खाद्य पदार्थों को ढक कर रखने, ताजा भोजन खाने तथा हाथ धोने की सीख दी गई। कार्यक्रम के अंत में अतिथियों ने चरखा चलाकर सूत काता। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। इससे पहले सभी अतिथियों में महात्मा गांधी की प्रतिमा के समक्ष पुष्पांजलि अर्पित की गई।

रब्बान कोहरी ने इस्लाम, रोजलिम ने ईसाई, इंद्रजीत सिंह ने सिख तथा बैद ने जैन धर्म की प्रार्थना प्रस्तुत की। इस दौरान बीकानेर (पश्चिम) विधायक जेठानंद व्यास, जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि, पुलिस अधीक्षक कावेन्द्र सागर, नगर निगम आयुक्त मयंक मनीष, नगर विकास न्यास सचिव डॉ. अपर्णा गुप्ता, अतिरिक्त कलेक्टर (प्रशासन) डॉ. दुलीचंद मीना, एडीएम सिटी रमेश देव, निगम उपायुक्त यशपाल आहूजा, सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग के संयुक्त निदेशक एल.डी. पवार, बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष एडवोकेट जुगल किशोर व्यास, किशोर न्याय बोर्ड सदस्य किरण गौड़, समाज कल्याण अधिकारी सुरेंद्र सिंह राजपुरोहित, पूर्व पार्षद हजारीमल देवड़ा, राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड के सहायक राज्य संगठन आयुक्त रामजस लेखाला, सीओ जसवंत सिंह राजपुरोहित, बशीर अहमद, महिला अधिकारिता विभाग की उपनिदेशक डॉ. अनुराधा सक्सेना, अनुसूचित जाति जनजाति वित्त और विकास निगम की परियोजना प्रबंधक कविता स्वामी आदि मौजूद थे।

कांग्रेसजनों ने जयंती मनाई : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर आज बीकानेर शहर देहात जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा गांधी की प्रतिमा स्थल गांधी पार्क में स्मरण सभा और विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। विचार गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए शहर जिला कांग्रेस कमेटी के यशपाल गहलोत ने दोनों ही महापुरूषों स्मरण करते हुए कहा कि महात्मा गांधी और शास्त्रीजी का जीवन हमें सिखाता है। महात्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धांत का आज पूरा विश्व अनुसरण कर रहा है। मजबूत अंग्रेजी दासता से भारत जैसे टुकड़ों में बंटे हुए देश को ना सिर्फ मुक्त करवाया बल्कि उस वक्त फैले वैमनस्य को सबसे पहले सर्व धर्म समभाव का अनुसरण करते एक माला के मोती के रूप में पिरोने का कार्य किया। लाल बहादुर शास्त्री देश के ऐसे पहले प्रधानमंत्री बने जिन्होंने जय जवान और जय किसान का नारा देते हुए हरित क्रांति की तरफ कदम उठाए। दोनों ही महापुरूषों का जीवन देश को आजादी के बाद में एक नए रूप में पिरोने वाला रहा है। इन दोनों महापुरूषों का जीवन आज भी प्रेरणास्पद है और युग पुरूष के रूप में सदैव पूजनीय रहेगा। युवाओं को इनके जीवन को पढ़कर देश सेवा के लिए खुद को तैयार करना चाहिए।

- राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर सर्वधर्म प्रार्थना सभा आयोजित

प्रदेश उपाध्यक्ष पूर्व मंत्री गोविंदराम मेघवाल ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आज के दिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्म और उसी दिन लाल बहादुर शास्त्री का जन्म एक बहुत ही सुखद संयोग है। दोनों ही व्यक्ति देश में अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले रहे हैं। हमे उनके जीवन दर्शन को अधिकतम लोगों के समक्ष ले जाना होगा ताकि नई पीढ़ी इनको समझ सके। प्रदेश कांग्रेस महसचिव जिया उर रहमान आरिफ ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की छवि का अनुसरण करते हुए आज सबको पुनः टुकड़ों में बंट रहे भारत को जोड़ने का कार्य करना है। आज माहौल विपरीत है लेकिन सबको साधते हुए हमे मजबूत और ताकतवर भारत बनाना है।

श्रीगंगानगर को मिलेगी नई ट्रेन की सौगात

श्रीगंगानगर, (कासं)। उत्तर-पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक अमिताभ ने कहा कि श्रीगंगानगर को जल्द ही नई ट्रेन की सौगात मिलेगी। हनुमानगढ़ की पिट लाइन भी जल्द शुरू हो जायेगी। महाप्रबंधक ने यह बात यहां पत्रकारों से बातचीत में कही।

रेलवे महाप्रबंधक यहां के रेलवे स्टेशन पर अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत चल रहे पुनर्निर्माण कार्यों के निरीक्षण के सिलसिले में विशेष ट्रेन से यहां पहुंचे थे। पुनर्निर्माण कार्यों पर संतोष जताते हुए उन्होंने कहा कि श्रीगंगानगर की जनता को शीघ्र ही स्टेशन का नया स्वरूप देखने को मिलेगा। यात्री सुरक्षा के सवाल पर महाप्रबंधक ने कहा कि वर्तमान में हमारा ज्यादा से ज्यादा फोकस सुरक्षा पर है। इसके लिए रेलवे स्टेशन पर ज्यादा से ज्यादा सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है।

रेलवे स्टेशन के विस्तार के सवाल पर उन्होंने कहा कि विस्तार के लिए श्रीगंगानगर में जमीन उपलब्ध नहीं है। इसके बावजूद अमृत भारत स्टेशन योजना में रेलवे स्टेशन का निर्माण यात्री सुविधाओं को ध्यान में रखकर किया जा रहा है। महाप्रबंधक ने श्रीगंगानगर स्टेशन के बाहर की व्यवस्थाएं देखी व परिसर में चल रहे नए निर्माण का जायजा लिया। उन्होंने वेटिंग रूम, ऑफिस ब्लॉक, प्लेटफॉर्म आदि का अवलोकन किया। स्टेशन के बाहर उन्होंने कार पार्किंग, बिल्डिंग का पुराना हिस्सा, नए निर्माण, टिकिट बुकिंग काउंटर, रेस्ट रूम, ऑफिस ब्लॉक आदि देखे। जेडआरयूसीसी के पूर्व सदस्य भीम शर्मा ने महाप्रबंधक से जनता से मिले सुझावों पर चर्चा की।

सार-समाचार

बालिका सुरक्षा जागरूकता संगोष्ठी

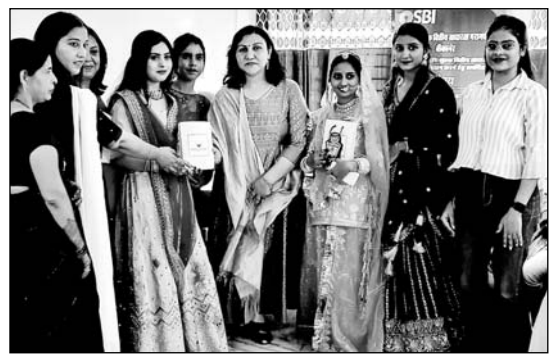

बालिका सुरक्षा जागरूकता विषय पर संगोष्ठी में विजेता बालिकाओं को प्रमाण पत्र सौंपे।

बीकानेर, (कासं)। नापासर रोड स्थित भारतीय स्टेट बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान द्वारा आयोजित ब्यूटी पार्लर मैनेजमेंट से जुड़ी छात्राओं के लिए बालिका सुरक्षा जागरूकता विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। संस्थान डायरेक्टर दिनेश जैन ने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य बालिकाओं को जागरूक कर अपराध से बचाना है। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता समाजसेवी डॉ.अर्पिता गुप्ता ने कहा बालिकाओं के खिलाफ हो रहे अपराधों की रोकथाम समाज के हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है। इसके लिए सभी को जागरूक होना होगा। सामाजिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत जिम्मेदारी व जागरूकता जरूरी है। साथ ही बालिकाओं से सोशल साइट्स के उपयोग के समय बरती जाने वाली सावधानियों से अवगत कराया। इस अवसर पर बालिकाओं ने विभिन्न मनमोहक व भावनात्मक सांस्कृतिक नृत्य गायन अभिनय की प्रस्तुतियां देकर महिला सुरक्षा का संदेश दिया। इस अवसर पर फैकल्टी कोऑर्डिनेटर सना मिर्जा ने संस्थान द्वारा संचालित निशुल्क स्वरोजगार योजनाओं के बारे में बताया। साथ ही छात्रों के निशुल्क आवास व भोजन व्यवस्था की भी जानकारी दी। ट्रेनर मोहिनी देवी ने कहा यहां बालिकाओं को प्रशिक्षित कर सर्टिफिकेट दिया जाता है जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें। कार्यक्रम में विजेता रही सुमन सुथार, श्रेया सिंह, संगीता, खुशबू आदि को डॉ. अर्पिता गुप्ता द्वारा पुरस्कृत किया गया। सभी प्रतिभागियों को मैडल दिए गए। कार्यक्रम में ज्योति सैनी, जया, सरिता कस्वां, प्रियंका छिपा आदि उपस्थित थी।

मुक्तिधाम में की सफाई

महात्मा गांधी की जयंती पर भाजपा गोपेश्वर मंडल ने मुक्तिधाम में श्रमदान करके सफाई की।

बीकानेर, (कासं)। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री की जयंती के अवसर पर स्वच्छता ही सेवा अभियान व स्वच्छ भारत मिशन अभियान के 10 वर्ष पूर्ण होने पर आज भाजपा गोपेश्वर मंडल ने स्वच्छता अभियान के तहत श्रीरामसर के मुक्ति-धाम में सफाई अभियान चलाया। इस अभियान में भाजपा शहर जिलाध्यक्ष विजय आचार्य, जिला महामंत्री श्यामसुन्दर चौधरी, नरेश नायक, मंडल अध्यक्ष चन्द्र गहलोत, पार्षद मुकेश पंवार, मंडल महामंत्री प्रेम गहलोत, शक्ति केन्द्र संयोजक शिवबन, जगदीश सोलंकी, तुलसीराम, हनुमान गहलोत, दुलीचन्द, आकाश, रजत, लक्ष्मण, ओम पंवार, मूलचंद आदि सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ताओं ने श्रमदान किया।

प्राथमिक स्कूल क्रमोन्नत की मांग

अनूपगढ़, (कासं)। ग्राम पंचायत 72 जीबी के अंतर्गत आने वाले गांव 71 जी.बी. (मोगी) में आंगनबाड़ी केन्द्र गांव की एक धर्मशाला में संचालित हो रहा है, लेकिन वहां भी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। जिससे छोटे बच्चों को प्राथमिक शिक्षा और पोषण सेवाएं प्राप्त करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि धर्मशाला भवन में न तो पर्याप्त बिजली है और न ही शौचालय तथा पानी की उचित व्यवस्था, जिसके चलते केन्द्र का संचालन बेहद मुश्किल हो रहा है। इसके अलावा गांव में विद्यालय भी प्राथमिक स्तर तक है। कक्षा 5 के बाद उच्च प्राथमिक स्तर की शिक्षा के लिए 5 किलोमीटर दूर दूसरे गांव में जाना पड़ता है, जिससे खासकर छात्राएं शिक्षा से वंचित रह रही है। ग्रामीणों के अनुसार धर्मशाला में संचालित आंगनबाड़ी केन्द्र की खराब स्थितियों के कारण गांव के बच्चों को समय शिक्षा नहीं मिल पा रही है। कई बार बिजली न होने के कारण बच्चों को असुविधा होती है, वहीं शौचालय नहीं होने से स्वच्छता से जुड़ी समस्याएं भी उत्पन्न हो रही हैं। इस स्थिति के चलते अभिभावक अपने बच्चों को केन्द्र भेजने से हिचकिचाते हैं। गांव में आंगनबाड़ी केन्द्र के संचालन के लिए धर्मशाला भवन में बिजली, पानी और अन्य आवश्यक सुविधाओं की कमी को लेकर ग्रामीणों ने कई बार प्रशासन को अवगत कराया है। अब तक इन समस्याओं का समाधान नहीं हुआ है, जिससे ग्रामीणों में निराशा बढ़ रही है। ग्रामीणों का कहना है कि यदि जल्द ही सुधारात्मक कदम उठाने चाहिए। रमेश कुमार, विकास कुमार, मेघाराम, महेन्द्र लाल, आई.डी. पंच परमेश्वरी देवी, राजेन्द्र कुमार, धोलाराम, सुनील कुमार और मुकेश कुमार ने आंगनबाड़ी केन्द्र को एक नए और बेहतर भवन में स्थापित करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि धर्मशाला में वर्तमान संचालन व्यवस्था के चलते बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने प्रशासन से अनुरोध किया है कि जल्द से जल्द इस दिशा में कोई ठोस कदम उठाया जाए। समस्या समाधान के लिए ग्रामीणों ने डायरेक्टर मेघराज नायक के माध्यम से एक ज्ञापन भी प्रशासन को भेजा है।

देशनोक के मां करणी मंदिर में नवरात्र महोत्सव आज से

बीकानेर,(कासं)। जिला मुख्यालय से 30 किलोमीटर दूर देशनोक स्थित श्रीकरणी मंदिर में नौ दिवसीय नवरात्र महोत्सव का शुभारंभ आज से होगा।

श्रीकरणी मंदिर निजी प्रन्यास के अध्यक्ष बादल सिंह देपावत ने बताया कि गुरूवार से शुरू हो रहे शारदीय नवरात्रा महोत्सव में देशभर से श्रद्धालु दर्शन करने पहुच रहे हैं। श्रद्धालुओं के पहुंचने का क्रम नवरात्रा स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर शुरू हो गया। बुधवार को देश प्रदेश सहित जिले के विभिन्न स्थानों से पैदल यात्रियों की सैकडों टोलियां देशनोक की ओर जाते देखी गई।

उल्लेखनीय है कि करणी माता का मन्दिर एक प्रसिद्ध मन्दिर है जो बीकानेर जिले में स्थित है। इसमें देवी करणी माता की मूर्ति स्थापित है। यह बीकानेर से 30 किलोमीटर दक्षिण दिशा में देशनोक में स्थित है। करणी माता का जन्म चारण क्षत्रिय कुल में हुआ। यह मन्दिर काबों (चूहों) का मन्दिर भी कहलाता है।

- इस मन्दिर में सफेद चूहे का दर्शन मंगलकारी माना जाता है

मन्दिर में सफेद चूहे का दर्शन मंगलकारी माना जाता है। करणी मां की कथा एक सामान्य ग्रामीण कन्या की कथा है। लेकिन उनके संबंध में अनेक चमत्कारी घटनाएं भी जुड़ी बताई जाती हैं, जो उनकी उम्र के अलग-अलग पड़ाव से संबंध रखती हैं। बताते हैं कि संवत 1595 की चैत्र शुक्ल नवमी गुरूवार को श्री करणी ज्योर्तिलीन हुई। संवत 1595 की चैत्र शुक्ला 14 से यहां श्री करणी माता की सेवा पूजा होती चली आ रही है।

इस मन्दिर का निर्माण बीकानेर के महाराजा गंगासिंह ने राजपूत शैली में लगभग 15-20 वीं सदी में करवाया था। मन्दिर के सामने महाराजा गंगासिंह ने चांदी के दरवाजे भी बनाए थे। देवी की छवि अंदरूनी गर्भगृह में निहित है। मां करणी मंदिर तक पहुंचने के लिए बीकानेर से बस, जीप व टैक्सियां आसानी से मिल जाती हैं। यह मंदिर बीकानेर-जोधपुर रेल मार्ग पर स्थित देशनोक रेलवे स्टेशन के पास ही है। वर्ष में दो बार नवरात्रों पर चैत्र व आश्विन माह में इस मंदिर पर विशाल मेला भी लगता है। तब भारी संख्या में लोग यहां पहुंचकर मनौतियां मनाते हैं। श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए मंदिर के पास धर्मशालाएं भी है। श्रीकरणी मंदिर निजी प्रन्यास के अध्यक्ष बादल सिंह देपावत ने बताया कि मंदिर में गुरूवार सुबह 9.55 बजे से 11.30 बजे तक घट स्थापना होगी।

अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस मनाया

बीकानेर, (कासं)। सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के मानव विकास और परिवारिक अध्ययन विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर डिजिटल पोस्टकार्ड और पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में महाविद्यालय के स्नातक तथा स्नातकोत्तर विद्यार्थियों ने भाग लिया। महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ. विमला डुंकवाल ने बताया कि अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस का विषय गरिमा के साथ वृद्धावस्था : दुनिया भर में वृद्धजनों के लिए देखभाल और सहायता प्रणालियों को मजबूत करने का महत्व था। यह दुनियाभर में वृद्ध लोगों के लिए सहायता प्रणालियों में सुधार की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। उन्होंने कहा कि बुजुर्गों के प्रति सम्मान दिखाने से वरिष्ठ नागरिकों और देखभाल करने वालों का लाभ होता है। उन्हें नई पीढ़ी को गर्व की अनुभूति होनी चाहिए।

कर्ज से परेशान परिवार ने विषाक्त खाकर दी जान

बीकानेर, (कासं)। जिले में एक हंसता खेलता परिवार ने कर्ज के बोझ के नीचे दबने से अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। परिवार पर यह कर्ज पत्नी की बीमारी के चलते हुए हुआ था। उसके बाद साहूकारों ने गृहस्वामी को परेशान करना शुरू कर दिया जिससे तंग आकर पूरा परिवार ने विषाक्त खाकर जान दे दी।

- पत्नी के इलाज में कर्जा होने पर जब साहूकार परेशान करने लगे तो पूरे परिवार ने दी जान

परिवार में बस अब किशोर बचा है, जिसकी भी हालत गंभीर बनी हुई है। बीकानेर जिले में हुए इस हृदय विदारक घटना ने हर किसी को झकझोर कर रख दिया। पुलिस अधीक्षक कावेन्द्र सिंह सागर ने बताया कि मूर्ति सर्कल 5 सी 42 में चार जनों ने विषाक्त पदार्थ पी लिया। इससे राहुल (44) पुत्र मूलचंद मारू, उसकी पत्नी रूचि मारू (42) एवं बेटे अराध्य मारू (7) की मौत हो गई। जबकि 15 वर्षीय चैतन्य उर्फ चीकू को गंभीर हालत में पीबीएम अस्पताल में भर्ती कराया गया है। प्रथमदृष्टया मौत का कारण आर्थिक तंगी माना जा रहा है। ये लोग किराए के मकान में रहते थे। मृतक राहुल दवाओं का होलसेल व्यापारी था। राहुल की पत्नी रूचि ब्रेन हेमरेज से पीडित थी। जिसके इलाज में काफी रूपया खर्च हुआ। उसने कई लोगों से रूपए उधार लिए थे। बैंकों से भी कर्ज ले रखा था। कर्ज देने वाले तकाजा करने लगे थे। पुलिस अधीक्षक सागर ने बताया कि पति-पत्नी ने विषाक्त खाया और दोनों बेटों को दूध में मिलाकर पिलाया था। दोपहर में चीकू को होश आया तो उसने अपनी बुआ को हादसे की जानकारी दी।

गांधी व शास्त्री जयंती पर स्वच्छता अभियान

बीकानेर,(कासं)। राजस्थान सरकार के 'स्वच्छता ही सेवा' कार्यक्रम के अंतर्गत महात्मा गांधी जयंती एवं लालबहादुर शास्त्री जयंती के अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय बीकानेर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा स्वच्छता अभियान चलाया गया।

अभियान का शुभारंभ वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित द्वारा किया गया। इस अवसर पर आचार्य दीक्षित ने संकाय सदस्यों और छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि युवा हमारे देश का भविष्य है और उन्हें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के आदर्शों को अपने जीवन में अंगीकार कर एक जिम्मेदार नागरिक का दायित्व निभाना चाहिए। इसके साथ ही स्वच्छता का जीवन में महत्व भी बताया।

स्वच्छता अभियान में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों एवं सभी संकाय सदस्यों ने सक्रिय भागीदारी निभाई। इस अवसर पर अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय प्रो.हेमंत दाधीच, प्रो. राजेश कुमार धूड़िया निदेशक प्रसार शिक्षा, प्रो. प्रवीण बिश्नोई अधिष्ठाता छात्र कल्याण, प्रो. राहुल सिंह पाल, निदेशक डीपी एमई भी मौजूद रहे एवं श्रमदान किया। इस स्वच्छता अभियान का आयोजन डॉ नीरज कुमार शर्मा कार्यक्रम अधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना और डॉ. मोहनलाल प्रभारी भू-सदृश्य इकाई के सहयोग से किया।

रोलर स्केटिंग प्रतियोगिता 5 को

बीकानेर, (कासं)। जिला रोलर स्केटिंग संघ द्वारा 5 व 6 अक्टूबर को जिला स्तरीय रोलर स्केटिंग प्रतियोगिता का आयोजन बसंत कुंज स्केटिंग रिंक गंगाशहर बीकानेर में होगा।

संघ की अध्यक्षा अंजना खत्री ने बताया कि 5 अक्टूबर को सायं 4 बजे रिंक रेस प्रथम तथा 6 अक्टूबर को प्रात: 6 बजे डूंगर महाविद्यालय में रोड रेस एवं सायं 3.30 बजे से रिंक रेस द्वितीय होगी। यह प्रतियोगिता क्वाट्ज एवं इनलाइन श्रेणी में होगी। इस प्रतियोगिता में चयनित खिलाड़ी राज्य स्तरीय रोलर स्केटिंग प्रतियोगिता में भाग लेंगे। प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक खिलाड़ी 4 अक्टूबर को सायं 7 बजे तक अपनी प्रविष्टि बसन्त कुंज स्केटिंग रिंक पर जमा करवा सकते हैं। समापन विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार वितरण के साथ होगा।

मूंगफली की समर्थन मूल्य पर 40 क्विंटल तुलाई की मांग

बज्जू, (कासं)। बज्जू क्रय- विक्रय सहकारी समिति की साधारण सभा का आयोजन बज्जू स्थित समिति कार्यालय में समिति चेयरमैन एडवोकेट खींवसिंह भाटी की अध्यक्षता में हुई। इस दौरान उपस्थित लोगों ने आगामी समर्थन मूल्य पर मूंगफली की सरकारी खरीद 25 क्विंटल से बढ़ाकर 40 क्विंटल करने की मांग की।

समिति की ओर से पिछले वर्ष किये गए कार्यों पर विस्तार से चर्चा की और आगामी कार्यों की रणनीति बनाई गई। क्रय विक्रय सहकारी समिति के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सांवरिया लाल पालीवाल ने बताया कि समिति की साधारण सभा में समिति द्वारा किसान हित में किए जा रहे कार्य से अवगत करवाया गया। साधारण सभा में समिति के पूर्णकालिक सदस्यों ने भाग लिया। बैठक में सर्वसम्मति से विभिन्न कार्य योजनाओं के प्रस्ताव लिए गए। उपस्थित लोगों को क्रय विक्रय सहकारी समिति तथा कृषि विभाग की लाभकारी योजनाएं विस्तार से बताई गई।

- बैठक में सर्वसम्मति से विभिन्न कार्य योजनाओं के प्रस्ताव लिए गए

बज्जू क्रय विक्रय सहकारी समिति की साधारण समिति के अधिकारियों ने कहा कि इस पर सभा आयोजित की जायेगी। बैठक में योजना गत वर्ष के व्यापार, लाभ-हानि, खाद-बीज की समय पर आपूर्ति, कृषि विभाग के माध्यम से किसानों के लिए संचालित अनुदान आधारित योजनाओं का लाभ किसानों को अधिकाधिक दिलवाने इत्यादि विषयों पर चर्चा की गई।

आम सभा में समिति उपाध्यक्ष कानाराम, संचालक मडंल सदस्य मालूराम, राहुल सेन, सीसीबी पूर्व चेयरमैन मांगीलाल सेन, बाबूलाल बेनीवाल, कृषि अधिकारी प्रदीप कुमार पंचायत समिति सदस्य मदन सिंह भाटी, रामकुमार गोदारा, जीएसएस अध्यक्ष हेतराम खीचड, रामस्वरूप भादू, ओमप्रकाश मांझु आदि मौजूद थे।

विमुक्त, घुमंतू एवं अर्द्ध घुमंतू आवासहीन व्यक्तियों को पट्टे बांटे

बीकानेर,(कासं)। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने बुधवार को जयपुर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान विमुक्त, घुमंतू एवं अर्द्ध घुमंतू आवासहीन व्यक्तियों को पट्टे वितरित किए। इसका जिला स्तरीय कार्यक्रम बीकानेर में रविन्द्र रंगमंच पर आयोजित हुआ।

कार्यक्रम में बीकानेर (पश्चिम) विधायक जेठानंद व्यास, जिला प्रमुख मोडाराम मेघवाल, जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि, बीकानेर प्रधान लालचंद आसोपा, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सोहन लाल, एसीईओ दिलीप कुमार, डॉ. सत्यप्रकाश आचार्य, राज्य सरकार के नामित प्रतिनिधि टेकचंद बरडिया, मुरलीधर सोलंकी, विष्णु बंजारा, सोहन सांसी, विकास अधिकारी भोम सिंह इंदा सहित अनेक लोग मौजूद थे।

मुख्यमंत्री ने बीकानेर के मनफूल नाथ से वीडियो कांफ्रेंस के जरिए संवाद किया। कालबेलिया जाति के मनफूल नाथ ने बताया कि वह घुमक्कड़ परिवार के हैं। वे कई वर्षों से भटक रहे हैं, लेकिन किसी ने उनकी सुध नहीं ली। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री का आभार जताया और कहा कि उनकी पहल के कारण यह पट्टा मिला है। मुख्यमंत्री ने विश्वास दिलाया कि पट्टा मिला है तो जल्दी ही घर भी बनेगा। राज्य स्तरीय कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने लगभग 21 हजार पट्टे वितरित किए। वहीं जिले के 2007 लाभार्थियों को पट्टे दिए गए। इस दौरान मुख्यमंत्री ने स्वच्छता के क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने पर पांचू के विकास अधिकारी जसवंत सिंह बिश्नोई का सम्मान किया। जिला स्तरीय कार्यक्रम का संचालन ज्योति प्रकाश रंगा और गोपाल जोशी ने किया।

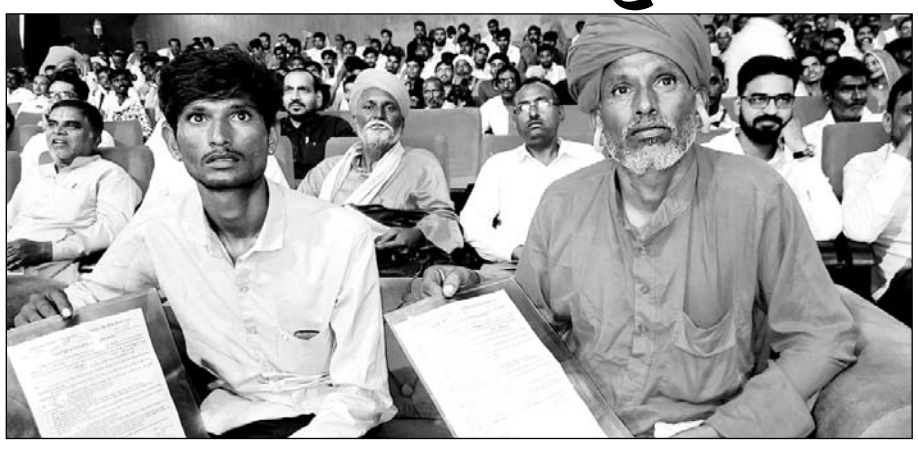

बीकानेर में रविन्द्र रंगमंच पर आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम में विमुक्त, घुमंतू एवं अर्द्ध घुमंतू आवासहीन व्यक्तियों को पट्टे वितरित किए।

- राज्य स्तरीय कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने लगभग 21 हजार पट्टे वितरित किए
- वहीं जिले के 2007 लाभार्थियों को पट्टे दिए गए

वाशिंग लाइन पर यू.टर्न, लालगढ़ शिफ्ट की अटकलें

सूरतगढ़, (कासं)। स्थानीय रेलवे स्टेशन पर वंदे भारत व अन्य ट्रेनों की मेंटेनेंस के लिए स्वीकृत कोच डिपो व वाशिंग लाइन उत्तर पश्चिम रेलवे की अफसरशाही की भेंट चढ़ती नजर आ रही है।

उत्तर पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक अमिताभ ने गत अपने सूरतगढ़ दौरे में स्टेशन पर वाशिंग लाइन व कोच मेंटेनेंस डिपो के प्रस्ताव को रेलवे बोर्ड में विचाराधीन बताया। रेल मंत्रालय व रेलवे बोर्ड उस प्रोजक्ट को आठ माह पूर्व ही स्वीकृत करते हुए करीब 75 करोड़ रूपए का बजट जारी कर चुका है। जिसके बाद स्थानीय प्रशासन को भूमि अधिग्रहण के संबंध में पत्र भी दिया गया था।

जी.एम. के विरोधाभासी बयान से स्पष्ट है कि रेल मंत्रालय की ओर से स्वीकृत प्रोजेक्ट को एनडब्लयूआर अन्यत्र स्थानांतरित करने के प्रयास में हैं। ऐसे में क्षेत्र को वर्षों के इंतजार के बाद केन्द्रीय रेल मंत्रालय से मिली सौगात छीनने की संभावनाएं हैं। जिसको लेकर नागरिकों व रेल यात्रियों में रोष है। रेलवे मंत्रालय रेलवे बोर्ड ने 12 फरवरी 2024 को अंब्रेला वर्क 2023-24 के फेस-2 के अंतर्गत सूरतगढ़ रेलवे स्टेशन पर वंदे भारत सहित अन्य ट्रेनों के रखरखाव के अनुरूप वाशिंग लाइनों तथा कोच मैंटेनेंस डिपो निर्माण कार्य स्वीकृत करते हुए 74.89 करोड़ रुपए की वित्तीय स्वीकृति जारी की थी।

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

Telefax No. 0154-2466652, Email :- SECYUIT.SGNR@RAJASTHAN.GOV.IN Off. Add:- UIT Office, Model Town, Sri Ganganagar (Raj.) 335001

क्रमांक :- नियमन/2024/3926 **सार्वजनिक आपत्ति सूचना** दिनांक : 01.10.2024

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती सुमन रानी पत्नी स्व. श्री राजेश धींगड़ा निवासी म.नं. 43, गली नं. 3, दुर्गा विहार, श्रीगंगानगर के द्वारा न्यास क्षेत्र में स्थित आवासीय भूखंड का न्यास रिकार्ड में नामान्तरण हेतु आवेदन किया गया है। उक्त भूखंड के सम्बन्ध में न्यास रिकार्ड एवं आवेदक के द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज की स्थिति निम्नानुसार है :-

न्यास रिकार्ड के अनुसार भूखंड का विवरण		आवेदक के द्वारा भूखंड के नामांतरण हेतु प्रस्तुत दस्तावेजों का विवरण		
भूखण्ड का विवरण	मूल भूखण्डधारी	मृत्यु प्रमाण पत्र एवं विवरण	जायज वारिसों का विवरण	दस्तावेज का विवरण
चक 4 एमएल मुख्या नं. 01 किला नं. 22, 23 में भूखंड संख्या डी-4 व डी-5 प्रत्येक माप 30 इंटू 60 फीट, विद्यादीप विहार, श्रीगंगानगर	निगमन पट्टा सं. 4970 दिनांक 7.9.2007 पट्टा सं. 4971 दिनांक 7.9.2007 को श्री राजेश धींगड़ा पुत्र श्री रामचन्द्र के नाम से पट्टा जारी है। वर्तमान में भूखंड इन्हीं के नाम से दर्ज है।	श्री राजेश धींगड़ा की मृत्यु दिनांक 16.11.2012 को हो चुकी है।	1. सुमन रानी - पत्नी 2. रचना - पुत्री 3. समीर - पुत्र	श्री राजेश धींगड़ा की मृत्यु उपरांत श्रीमती सुमन रानी द्वारा पंजीकृत दस्तावरदारी दिनांक 5.7.2024 की प्रति प्रस्तुत उक्त भूखंड के नामांतरण बाबत न्यास में आवेदन प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार उक्त भूखण्ड के सम्बन्ध में उपर्युक्तानुसार दस्तावेजों की प्रति इस कार्यालय में प्रस्तुत कर नामान्तरण चाहा गया है इस संबंध में श्रीमती सुमन रानी पत्नी स्व. श्री राजेश धींगड़ा निवासी म.नं. 43, गली नं. 3, दुर्गा विहार, श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज/प्री लीज होल्ड पट्टे के संबंध में कोई आपत्ति है तो सूचना के प्रकाशन के 07 दिवस में पुख्ता दस्तावेजों सहित अपनी आपत्ति/उजर/दावा निम्न हस्ताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत कर सकते है। उक्त अवधि के दौरान इस भूखण्ड से सम्बन्धित समस्त दस्तावेजों को आमखास शिनाख्त व्यक्ति के देखने व पढ़ने के लिये कार्यालय समय में खुला रखा गया है। बाद निपटाए प्रकरण का निस्तारण कर दिया जायेगा एवं कोई आपत्ति/उजर स्वीकार नहीं होगा।

आवेदन सं. :- SGNR/FY24-25/MUT/701, 703

- सचिव, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

पैंथर को गोली मारने हैदराबाद से शार्प शूटर गोगुंदा पहुँचा

राजस्थान के 12 शूटर पहले ही आदमखोर पैंथर की तलाश में पूरे इलाके में तैनात हैं

उदयपुर, (निसं)। उदयपुर के गोगुंदा में आदमखोर पैंथर को मारने के लिए हैदराबाद से शूटर को बुलाया गया है। वर्तमान में राजस्थान के 12 शूटर पैंथर की खोज में जुटे हैं। वन विभाग ने पैंथर को देखते ही गोली मारने के निर्देश दिए हैं।

- **हैदराबाद के शार्प शूटर नवाब शाफत अली खान सुबह 11:30 बजे गोगुंदा पहुँचे। वन अधिकारियों से चर्चा के बाद डेढ़ बजे वे शूटर टीम के साथ जंगल निकल गये।**
- **वन विभाग, पुलिस, सेना व ग्रामीणों की 10 टीमें सर्च ऑपरेशन लगी है। क्षेत्र के थानों के थानाधिकारी भी इस ऑपरेशन में शामिल हैं।**

गोगुंदा के गांवों में एक के बाद एक हुए आदमखोर पैंथर के हमलों से पूरा इलाका खौफ में है। पिछले 14 दिनों में आदमखोर पैंथर ने 8 लोगों को अपना शिकार बनाया है। पैंथर ने 1 अक्टूबर को गोगुंदा के केलवों का खेडा गांव में घर के बाहर काम कर रही महिला को मार डाला था। इसके बाद राजस्थान वन्य जीव विभाग के प्रधान मुख्य संरक्षक, पवन कुमार उपाध्याय ने पैंथर को देखते ही गोरी मारने के आदेश जारी किए थे।

अब प्रशासन ने मामले की गंभीरता को देखते हुए हैदराबाद के शार्प शूटर को बुलाया है। बुधवार को सुबह 11.30 बजे हैदराबाद के शूटर, नवाब शाफत अली खान गोगुंदा पहुंचे। उन्होंने राठौड़ों का गुडा गांव के स्कूल में वन विभाग के अधिकारी सुनील छिद्री व अजय चित्तौड़ा से घटनाओं की विस्तृत जानकारी ली। इसके बाद दोपहर करीब डेढ़ बजे बाद, शूटर टीम के साथ जंगल के लिए निकले। हर टीम में दो शूटर तथा 10 टीमों में 90 से ज्यादा मेंबर हैं। ये लोग सर्च ऑपरेशन में जुटे हैं। इनमें वन विभाग के कर्मचारी, पुलिस, सेना के जवान और ग्रामीण शामिल हैं। पुलिस की टीम भी हथियारों के साथ तैनात है। लाठी और अन्य औजार लेकर ग्रामीण भी टीम के साथ पैंथर सर्च में सहयोग कर रहे हैं। बुधवार सुबह से ही सर्च ऑपरेशन चल रहा है। उदयपुर शहर के अंबामाता थानाधिकारी डॉ. हनुवंत सिंह राजपुरोहित, सुखेर थानाधिकारी हिमांशुसिंह, गोगुंदा थानाधिकारी शैतानसिंह भी वन विभाग की टीम के साथ इस ऑपरेशन में शामिल हैं। शिक्षा विभाग के गोगुंदा ब्लॉक से भी निर्देश जारी किए गए हैं। आदेश में सात बिंदु अंकित किए गए हैं और कहा गया है कि बच्चों की सुरक्षा के लिए इन बिदुओं पर ध्यान दिया जाए।

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी गोगुंदा, प्रेरणा नौसालिया ने बताया कि पैंथर के लगातार हमलों के बाद हमने स्कूलों को निर्देश दिए हैं कि वे बच्चों को सीख दें कि वे समूह में ही स्कूल आएं और घर जाएं तथा सुनसान जगह पर अकेले नहीं जाएं। प्रार्थना सभा में बच्चों को जानवर और खासकर पैंथर की घटनाओं को लेकर सावचेत रहने के लिए निर्देशित किया गया है।

राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू आज उदयपुर में

उदयपुर, (निसं)। राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू गुरुवार और शुक्रवार को उदयपुर, सिरोही और बांसवाड़ा की यात्रा पर आएंगी। जिला कलेक्टर अरविंद पोसवाल ने बताया कि राष्ट्रपति 3 अक्टूबर की सुबह वायुयान से उदयपुर एयरपोर्ट पहुंचेंगी। वे यहां से मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय आएंगी और विश्वविद्यालय के 32वें दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि भाग लेंगी।

राष्ट्रपति मुर्मू इसी दिन अपराह्न एयरपोर्ट पहुंचकर वायुमार्ग से मानपुर आबूरोड़ के लिए प्रस्थान कर जाएंगी। वहां विविध कार्यक्रमों में भाग लेने के पश्चात रात्रि विश्राम माउंट आबू में रहेगा। अगले दिन दोपहर मानगढ़ धाम बांसवाड़ा पहुंच कर विविध कार्यक्रमों में भाग लेंगी। वहां से शाम को उदयपुर पहुंच कर दिल्ली के लिए प्रस्थान करेंगी।

जिला कलेक्टर अरविंद पोसवाल ने राष्ट्रपति एवं राज्यपाल की गुरुवार को प्रस्तावित उदयपुर यात्रा एवं कार्यक्रम आयोजन को लेकर की गई तैयारियों को जायजा लिया। इस अवसर पर यूडीए आयुक्त राहुल जैन, भूमि अवाप्ति अधिकारी कीर्ति राठौड़, डीएसओ मनीष भटनागर, पीडब्लूयूडी की अधिशासी अभियंता निशा व्यास सहित पुलिस व प्रशासन के अधिकारी मौजूद रहे।

महाराव सूरजमल हाड़ा की छतरी तोड़ने पर राजपूत समाज में आक्रोश

श्री राजपूत करणी सेना गंगापुर सिटी व राजपूत समाज ने जिला कलेक्टर कार्यालय में ज्ञापन दिया

श्री राजपूत करणी सेना गंगापुर सिटी व राजपूत समाज ने जिला कलेक्टर के पीए को ज्ञापन दिया।

गंगापुर सिटी, (निसं)। कोटा में बूंदी महाराव सूरजमल हाड़ा की 600 साल पुरानी छतरी को तोड़ने का मामला तूल पकड़ने लगा है। इस संबंध में बुधवार को श्री राजपूत करणी सेना गंगापुर सिटी व राजपूत समाज ने मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टर कार्यालय में ज्ञापन देकर कार्रवाई करने की मांग की है।

- **छतरी को कोटा विकास प्राधिकरण द्वारा गत 20 सितंबर को एयरपोर्ट निर्माण के लिए ध्वस्त कर दिया गया था**

श्री राजपूत करणी सेना और राजपूत समाज के लोगों ने बताया कि पूर्व बूंदी महाराव सूरजमल हाड़ा की बूंदी जिले के तुलसी गांव में लगभग 600 वर्ष पुरानी ऐतिहासिक छतरी बनी हुई है और इस छतरी को कोटा विकास प्राधिकरण द्वारा गत 20 सितंबर को एयरपोर्ट निर्माण के लिए ध्वस्त कर दिया गया है जो कि एक निंदनीय कृत्य है। बूंदी रियासत के शासक महाराव सूरजमल हाड़ा की स्मृति में निर्मित अमूल्य ऐतिहासिक छतरी केवल राजपूत समाज ही नहीं, बल्कि अन्य समाजों के लिए भी श्रद्धा का केन्द्र रही है। ऐसी ऐतिहासिक धरोहर को नष्ट किया जाना एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। इससे सर्व समाज की भावनाओं को ठेस पहुंची है। यह जन आस्था का केंद्र है व स्थानीय लोग उन्हें देवताओं की तरह पूजते है, ऐसी जन आस्था और ऐतिहासिक छतरी को तोड़ना एक गैर जिम्मेदाराना हरकत है। जिससे प्रदेश के सभी समाजों की जन भावना आहत हुई है।

उन्होंने महाराव सूरजमल हाड़ा की छतरी को ध्वस्त करने का अपराध करने वाले दोषी अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने, उक्त छतरी को पूर्ण सम्मान के साथ उसके उसी स्थान पर पुन: निर्मित करने, जिस हवाई अड्डे के लिए उक्त छतरी तोड़ी गई है, उसका नामकरण महाराव श्री सूरजमल हाड़ा के नाम से करवाने की मांग की। साथ ही उन्होंने सरकार से उक्त मामले को गंभीरता से लेकर जनभावनाओं को देखते हुए इन मांगों पर शीघ्र कार्रवाई करने की मांग की और भविष्य में इस तरह ऐतिहासिक धरोहरों के साथ छेड़छाड़ नहीं किया जाए, इसका भी ध्यान रखा जाए।

ज्ञापन देने के दौरान श्री राजपूत करणी सेना जिलाध्यक्ष राजवीर सिंह राजावत, कृष्णपाल जादौन, तहसील अध्यक्ष दीपूसिंह, नीरज सिंह, रघुनन्दन सिंह, विक्रमपाल सिंह, महेशपाल सिंह, जोगेंद्र सिंह, नरेन्द सिंह, प्रध्युमन सिंह, कैप्टेन गोपाल सिंह, जीतेन्द्र परमार, कुलदीप सिंह राठौर एवं राजपूत समाज के अन्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को जोधपुर पहुंचकर पूर्व विधायक एवं भाजपा की वरिष्ठ नेता सूर्यकांता व्यास को श्रद्धांजलि अर्पित की।

50 बच्चों से भरी निजी स्कूल की बस पलटी, दो घायल

सादुलपुर, (निसं)। राजगढ़-हिसार एनएच-52 पर कस्बा राजगढ़ के गुलपुरा मोड़ बाइपास पर बुधवार सुबह करीब सात बजे के आसपास एक निजी स्कूल की बस अचानक से पलटी खा गई। घटना के दौरान बस बच्चों से भरी हुई थी, लेकिन गनीमत ये रही कि कोई बड़ी जनहानि नहीं हुई। हालांकि दो बच्चों को मामूली चोटें लगी। जिनको प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया।

- **बस के आगे गाय आने से संतुलन बिगड़ गया था**

वहीं घटना की मिली सूचना पर राजगढ़ थाने के हैड कास्टेबल राजकुमार मय टीम के मौके पर पहुंचे, जहां घटना की जानकारी ली तथा दो घायल मामूली चोटों से घायल गांव सुरतपुरा निवासी कक्षा 12वीं के दोनों विद्यार्थियों को श्रीनाथजी अस्पताल राजगढ़ में पहुंचाया, जहां से चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी। हैड कास्टेबल राजकुमार ने बताया कि एक निजी स्कूल की बस गांव सुरतपुरा, मधाऊ व लसेड़ी गांव के बच्चों को लेकर राजगढ़ के निजी स्कूल में आ रही थी। उसी दौरान जैसे ही बस एनएच 52 गुलपुरा मोड बायपास के आसपास पहुँची तो अचानक से बस के आगे गाय आ गई, जिसको बचाने के लिए जैसे ही बस के चालक ने बस के ब्रेक लगाये तो बस का संतुलन बिगड़ गया तथा बस पलटी खा गई, लेकिन गनीमत ये रही कि किसी प्रकार की बडी जनहानि नहीं हुई। बस में करीब 50-51 बच्चे सवार थे, जिनमें दो बच्चों को लगी मामूली चोटें लगी। देर शाम तक इस संबंध में किसी प्रकार का मामला दर्ज नहीं हुआ है।

जेल से तीन बंदियों ने भागने की कोशिश

बीकानेर, (निसं)। केन्द्रीय कारागृह में तीन आरोपियों ने बैरक की दीवार में सुराख कर भागने का प्रयास किया, लेकिन सुरक्षाकर्मी की सजगता के चलते तीनों आरोपियों को भागने से से पहले ही दबोच लिया गया। तीनों आरोपी चोरी के मामले में जेल में बंद थे।

बीछवाल थानाधिकारी गोविंदसिंह चारण ने बताया कि जेल प्रहरी अनिल कुमार ने बताया है कि बीती रात (मंगलवार रात) को केंद्रीय जेल के वार्ड नंबर 8 के बैरक नंबर 30 में बंद तीन आरोपी ने बैरक की खिड़की के नीचे लगी ईंटों को निकालकर दीवार में सुराख बनाकर बैरक से भागने का प्रयास किया।

इस दौरान सुरक्षाकर्मी की नजर उन पर पड़ गई, जिसके बाद सभी सुरक्षाकर्मियों को अलर्ट कर इन आरोपियों को तलाशा गया। फिर तीनों आरोपी हाजी, नूर नबी और मोहम्मद सलाम को पकड़ लिया गया। तीनों आरोपी टिब्बी, हनुमानगढ़ जिले के रहने वाले हैं, जिन्हें पूगल थाना पुलिस ने चोरी के मामले में केंद्रीय जेल भिजवाया था। प्रहरी की रिपोर्ट पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

फर्जी डॉक्टरों के मामले के डीडवाना से भी जुड़े तार

डीडवाना, (निसं)। राजस्थान में फर्जी दस्तावेजों के जरिए आरएमसी में रजिस्ट्रेशन करवा कर फर्जी डॉक्टर बनाने के मामले के तार डीडवाना से भी जुड़ रहे हैं। जांच में सामने आया है कि फर्जी तरीके से डॉक्टर बनी एक महिला डीडवाना में निजी सोनोग्राफी सेंटर चला रही थी। यह सोनोग्राफी सेंटर जिले के सबसे बड़े बांगड़ राजकीय जिला अस्पताल के सामने संचालित हो रहा था, जहां फर्जी महिला डॉक्टर धड़ल्ले से महिलाओं की सोनोग्राफी कर रही थी।

इस मामले का खुलासा होने के बाद चिकित्सा विभाग हरकत में आया है और जिला प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य अधिकारी के निर्देश पर ब्लॉक सीएमएचओ डॉक्टर अजीत बलारा ने आज इस सोनोग्राफी सेंटर को सीज कर दिया। बलारा चिकित्सा विभाग की टीम के साथ केंद्र पर पहुंचे और किराए के भवन में संचालित हो रहे इस सोनोग्राफी सेंटर पर ताला लगाकर उसे सीज कर दिया। लेकिन विभाग की इस कार्रवाई से पूर्व ही कथित महिला डॉक्टर गीता कुमारी सोनोग्राफी सेंटर से फरार हो गई और चिकित्सा विभाग की टीम को मौके पर कोई भी डॉक्टर या कार्मिक नहीं मिला। ब्लॉक सीएमएचओ ने बताया कि इस मामले की जांच जारी है और विभागीय स्तर पर दिशा निर्देश के बाद ही आगे की कार्रवाई की जाएगी।

जानकारी के अनुसार दस्तावेजों का वेरिफिकेशन किए बिना ही 12वीं पास लोगों को डॉक्टर बनाने के मामले में हुए खुलासा के बाद चिकित्सा विभाग में हड़कंप मच गया है। इस मामले में जिन 8 फर्जी डॉक्टरों का खुलासा हुआ था, उनमें से एक महिला गीता कुमारी डीडवाना में सोनोग्राफी सेंटर चला रही थी। इससे पहले वह करौली के एक अस्पताल में भी प्रैक्टिस कर चुकी है। अब इस मामले में सरकार ने एक्शन लेते हुए एसीबी को जांच सौंपी है।

साथ ही आरएमसी से रजिस्ट्रार समेत तीन अधिकारियों को भी सस्पेंड किया गया है। वहीं चिकित्सा मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर ने पांच सदस्यीय जांच कमेटी का गठन किया है। चिकित्सा मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर ने आईएमसी के इस गड़बड़ी को स्कैम कर दिया है। साथ उन्होंने कहा कि मामले की पूरी जांच की जाएगी और किसी को भी नहीं बक्शा जाएगा।

कार की टक्कर से बाइक सवार दो जनों की मौत

उदयपुर, (निसं)। गोगुन्दा कस्बे में कार बाइक को चपेट में लेते हुए खाई में जा गिरी। हादसे में बाइक सवार दो व्यक्ति की मौत हो गई तथा कार में सवार पांच जने घायल हो गए।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसर मंगवलार को गोगुंदा थाना क्षैत्र गोगुंदा जसवंतगढ़ रोड़ पर कृष्ण कन्हैया होटल के समीप कार बाइक को चपेट में लेने के बाद करीब पन्द्रह फीट खाई में जा गिरी। हादसे में बाइक सवार जसवन्तगढ़ निवासी गोपीलाल (60) पुत्र रूपलाल एवं फतहपुर खमनोर निवासी मोहनसिंह पुत्र उदयसिंह की मौत हो गई तथा कार चालक बारना रायसेन एमपी निवासी आशीष पटेरिया (32) पुत्र राजेन्द्र कुमार, चन्द्रप्रकाश (32) पुत्र हरिओम मुदगल श्योपुर एमपी, अंजपी पतनीआशिष तथा प्रेरणा पुत्री चेतन्य भार्गव निवासी गुनाराजगढ एमपी तथा लियाना पुत्री आशीष गंभीर घायल हो गए, जिन्हें उपचार के लिए एमबी चिक्तिसालय में भर्ती करवाया।

गोपीलाल व मोहनसिंह दोनों बाइक पर गोगुन्दा से जसवंतगढ़ जा रहे थे। सूचना मिलने पर नन्दलाल एएसआई ने मौके पर पहुंच कर मृतकों को मोर्चरी में रखवाया तथा घायलों को उपचार के लिए एमबी चिकित्सालय में भर्ती करवाया। सूचना मिलने पर हेडकांस्टेबल चरणसिंह ने मृतकों का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की। कार पिण्डवाड़ा से गोगुन्दा की तारफ आ रही थी।

शातिर ठगों ने सेना के जवान को शिकार बनाया

प्रॉफिट का झांसा देकर 5.43 लाख रुपए हड़पे

अजमेर, (कासं)। एक ओर जहां पुलिस अपने आपको हाईटैक बनाने में लगी हुई है तो वहीं दूसरी ओर शातिर आए दिन नए-नए तरीके इजाद कर साइबर ठगी की वारदातें अंजाम दे रहे हैं। ऐसा ही एक मामला बुधवार को सामने आया। भारतीय सेना में कार्यरत अजमेर निवासी जवान से शातिर ठगों ने रेस्टोरेंट में रिव्यू के अलग-अलग टास्क देकर झांसा में लेकर 5 लाख 43 हजार रुपए हड़प लिए। पीड़ित सैनिक वर्तमान में असम में तैनात है। पीड़ित ने अजमेर एसपी के जरिए साइबर थाने में शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

साइबर थाने के सब इंस्पेक्टर मनीष ने बताया कि किशनगढ़ निवासी जितेंद्र यादव ने शातिर ठगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। दर्ज शिकायत में पीड़ित ने बताया कि वह 2012 से भारतीय सेना में असम में कार्यरत है। 10 सितंबर को फोन कॉल आया और एक व्हाट्सऐप पर मैसेज मिला था, जिसमें उसे रेस्टोरेंट में डेमो रिव्यू और 5 स्टार नंबर देने पर प्रॉफिट का झांसा दिया गया, टास्क पूरा करने पर उसे उसके अकाउंट की जानकारी ली गई। बाद में उसे अन्य टास्क के लिए टेलीग्राम के ग्रुप में जोड़ दिया।

- **210 रु. ट्रांसफर कर झांसे में लिया, मुकदमा दर्ज**

पीड़ित ने बताया कि शातिर ठग ने उसे डीसीएक्स डिजिटल मार्केटिंग कंपनी टेलीग्राम ग्रुप में जोड़ लिया। इस बीच उसे उसके पुराने टास्क के 210 रुपए ट्रांसफर कर अपने झांसे में ले लिया। बाद में ठगों ने उसे अलग-अलग टास्क दिए थे। जिसके स्क्रीन शॉट वह हर ग्रुप के एक प्रतिनिधि को भेजता था। हर टास्क को कंप्लीट करने से पहले उससे भी पैसे लिए जाते और बाद में उसे डबल करके दिए जाते थे। पीडित ने बताया कि बाद में उसे हर टास्क के नाम पर अलग-अलग ट्रांजैक्शन के जरिए पैसा लिया गया। झांसे में लेकर लाखों रुपए हड़प लिए। जब उसने अपना पैसा मांगा तो उसे क्रेडिट स्कोर 80 पॉइंट बताया और कहा कि 100 पॉइंट होने पर ही उसे उसका भुगतान किया जाएगा, जिससे पीड़ित को अपने साथ ठगी महसूस हुई। पीड़ित ने पुलिस को बताया कि करीब 5 लाख 43 हजार रुपए ठगों ने उसे हड़प लिए। साइबर थाना पुलिस मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

खेत पर काम कर रही महिला को सांप ने काटा

महिला को प्राथमिक उपचार के बाद जयपुर एसएमएस अस्पताल रेफर किया।

मनोहरपुर, (निसं)। कस्बे के हंसराज तिराहा निवासी एक महिला को कोबरा सांप ने ढस लिया, जिससे वह घायल हो गई। जानकारी देते हुए पूर्व सरपंच अर्जुन मोहनपुरिया व महेश जड़वाल ने बताया कि हंसराज तिराहा निवासी बनारसी यादव पत्नी राजेन्द्र यादव जो कि सुबह छ: बजे खेत में कार्य कर रही थी कि अचानक उसे कैरेत (कोबरा) सांप काट लिया, जिसको तुरंत सरकारी अस्पताल में भर्ती करवाया तो प्राथमिक उपचार के बाद उसे जयपुर एसएमएस अस्पताल के लिए डॉक्टरों ने रेफर कर दिया।

इसी दौरान सांप पकड़ने वाले शाहरुख खान तोपचीवाडा को बुलाया गया। उसने सांप को रेस्क्यू कर एक प्लास्टिक के पारदर्शी डिब्बे में बंद कर एसएमएस अस्पताल लेकर गए, जिससे इलाज होने में डॉक्टरों को सुविधा हो गई।

फरार चल रहा शातिर नकबजन राजू मोग्या गिरफ्तार

पूर्व में गैंग के तीन सदस्यों को गिरफ्तार किया जा चुका है

बौली-बामनवास, (निसं)। मित्रपुरा थाना पुलिस ने चार माह से फरार चल रहे शातिर नकबजन राजू मोग्या को गिरफ्तार किया है। इससे पूर्व इस गैंग के तीन सदस्यों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

- **जून माह में मझेवला गांव में चोरी की वारदात को अंजाम दिया था**

मित्रपुरा थाना प्रभारी यशपाल सिंह ने बताया कि पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता के निर्देशन में वांछित अपराधियों की धरपकड़ अभियान के तहत अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दिनेश यादव, पुलिस उपाधीक्षक अंगद शर्मा के सुपरविजन में मित्रपुरा थाना प्रभारी यशपाल सिंह के नेतृत्व में गठित विशेष टीम ने चार माह से फरार चल रहे शातिर नकबजन गैंग के मुख्य आरोपी राजू मोग्या को गिरफ्तार किया है। इस गैंग ने 8 जून को रात्रि में मझेवला गांव के अंदर घरों में घुसकर चोरी की वारदात को अंजाम दिया था।

मित्रपुरा थाना पुलिस ने शातिर नकबजन राजू मोग्या को गिरफ्तार किया है।

मुख्य वांछित आरोपी राजू मोग्या को न्यायालय में पेश कर पीसी रिमांड पर लिया गया है। इससे अनेक वारदातें खुलने की संभावना है। इस गैंग के खिलाफ मध्य प्रदेश व राजस्थान के कई थाना में अनेक मामले दर्ज हैं। इससे पूर्व गैंग के जीतू उर्फ बूचरया, रिंकू मोग्या व मोहन उर्फ मोनू उर्फ मुन्ना को गिरफ्तार किया जा चुका है। मुख्य आरोपी राजू मोग्या निवासी मदनपुर (अगरा) थाना बर्घावा जिला जिला शोपुर मध्य प्रदेश है।

परिवार के तीन घरों से 15 लाख के जेवर सहित नगदी चोरी

बयाना/भरतपुर, (निसं)। भरतपुर स्टेट हाईवे पर स्थित गांव बिडयारी में अज्ञात चोरों ने एक ही रात में एक ही परिवार के तीन घरों पर धावा बोल कर लाखों रुपए के जेवरात व नगदी पार क चंपत हो गए। पीड़ितों की माने तो अज्ञात चोर तीनों घरों से करीब 15 लाख रुपए के सोने-चांदी के जेवरात व करीब 1.20 लाख की नकदी को चोरी कर ले गए हैं।

- **चोरों ने घरों के अंदर सोए लोगों के कमरों के गेटों को बाहर से रस्सियों से बांध दिया था**

चोरों ने अपने घरों के अंदर सोए लोगों के कमरों के गेटों को बाहर से रस्सियों से बांध दिया था ताकि जगार होने पर उनमें सोए लोग कमरों से बाहर आसानी से नहीं आ सके। खटपट की आवाज से जागी एक महिला व उसकी बेटी ने शोर शराबा किया। जिसे सुनकर परिवार के अन्य लोग व पड़ोसी मौके पर पहुंचे और कमरों की रस्सियां खोलकर पीड़ित परिजनों को कमरों से बाहर निकाला और सभी ने खेतों में चोरों की तलाश की। जिनका कहीं कोई सुराग नहीं लगा। सूचना पर बयाना से पुलिस भी पहुंची। गांव बिड़यारी निवासी पीड़ित देवेश जाटव ने पुलिस में दी रिपोर्ट में बताया है कि उसका व भाई संजय जाटव और चाचा बलवीर के घर पास पास बने हैं। बीती रात्रि को तीनों के घरों में घुसे अज्ञात चोर करीब 15 लाख रुपए के सोने चांदी के जेवरातों व 1 लाख 20 हजार नगद एवं पानी की मोटर आदि सामान को चोरी कर ले गए हैं। पुलिस ने मामला दर्ज कर चोरी का सुराग लगाने के प्रयास शुरू किए हैं।

संभागीय आयुक्त के गांधी जयंती कार्यक्रम में शामिल होने से पहले शुरू की सर्च की कार्रवाई

कोटा संभागीय आयुक्त राजेन्द्र विजय का टोंक रोड स्थित मकान।

जयपुर के सी-स्कीम स्थित अशोक मार्ग पर आई.ए.एस. राजेन्द्र विजय का शोरूम।

- एसीबी ने आय से अधिक संपत्ति के मामले में कोटा संभागीय आयुक्त राजेंद्र विजय के चार ठिकानों पर सर्च किया।
- राजेंद्र विजय ने 25 सितम्बर को पदभार ग्रहण किया था। बीते कांग्रेस शासन में एक साल तक बारां जिले के कलेक्टर पद पर रहे।
- दौसा जिले के दुब्बी गांव में एसीबी ने मकान को सील किया।

जयपुर। कोटा संभागीय आयुक्त आईएएस ऑफिसर राजेंद्र विजय को बुधवार को गांधी जयंती के अवसर पर चंबल गार्डन में पुष्पांजलि कार्यक्रम में जाना था, लेकिन इससे पहले सुबह करीब छह बजे एसीबी की टीमें उनके सर्किट हाउस स्थित निवास पर सर्च की कार्रवाई करने पहुंच गई।

कोटा संभागीय आयुक्त आईएएस ऑफिसर राजेंद्र विजय के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति के मामले में बुधवार को एसीबी की टीमों ने उसके जयपुर, कोटा और दौसा में चार ठिकानों पर छापा मारकर तलाशी अभियान चलाया।

राजेंद्र विजय मूलत: दौसा जिले के दुब्बी गांव के निवासी हैं। बुधवार सुबह एसीबी की टीम दुब्बी में उनके घर पहुंची तो गांव में खलबली मच गई। डिप्टी एसपी नवल मीना ने कार्रवाई करते हुए उनके मकान को सील कर दिया। कार्रवाई के दौरान विजय के पैतृक घर पर कोई मौजूद नहीं था। ऐसे में उच्चाधिकारियों के निर्देश के बाद सर्च की कार्रवाई होगी।

राजेंद्र विजय ने सात दिन पहले ही 25 सितम्बर को कोटा के डिविजनल कमिश्नर का पदभार ग्रहण किया था। वे अभी सरकारी आवास में शिफ्ट नहीं हुए थे। वह कोटा में ही सर्किट हाउस में ठहरे हुए थे। सर्किट हाउस पर एसीबी के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मुकुल शर्मा टीम के साथ पहुंचे। जिस समय एसीबी की टीमों ने उनके ठिकानों पर दबिश दी तब वो कोटा सर्किट हाउस में ही थे। उन्हें सुबह गांधी जयंती के अवसर पर चंबल गार्डन में पुष्पांजलि कार्यक्रम में जाना था। एसीबी की टीमों ने सुबह 6 बजे से ही अपनी कार्रवाई को अंजाम देना शुरू कर दिया था। इसकी मॉनिटरिंग खुद एसीबी के डीजी रवि प्रकाश मेहरड़ा कर रहे हैं। सभी टीमों को एक दिन पहले ही ब्रीफ कर दिया गया था। बीते कांग्रेस शासन में राजेंद्र विजय एक साल तक बारां जिले के कलेक्टर पद पर रहे। उन्हें जनवरी 2021 में बारां जिला कलेक्टर के पद पर नियुक्त किया गया था। उसके बाद राज्य सरकार ने उनका तबादला कर दिया था। हाड़ौती में यह उनकी पहली पोस्टिंग थी और उसके बाद कोटा में सम्भागीय आयुक्त के पद पर उनकी दूसरी नियुक्ति थी।

इससे पहले कलेक्टर इंद्र सिंह राव को 9 दिसंबर, 2020 को एसीबी ने रिश्वत लेने के मामले में गिरफ्तार किया था। एसीबी टीम सर्किट हाउस भी पहुंची और जांच पड़ताल की है। इसके अलावा संभागीय आयुक्त के सरकारी आवास पर भी टीम को भेजा गया। हालांकि वह अभी वहां शिफ्ट नहीं हुए हैं लेकिन एक दो बार जाकर आए हैं। उनके ऑफिस में भी जांच पड़ताल की जा रही है।

खादी उत्पादों पर लें आकर्षक छूट का लाभ : मुख्यमंत्री

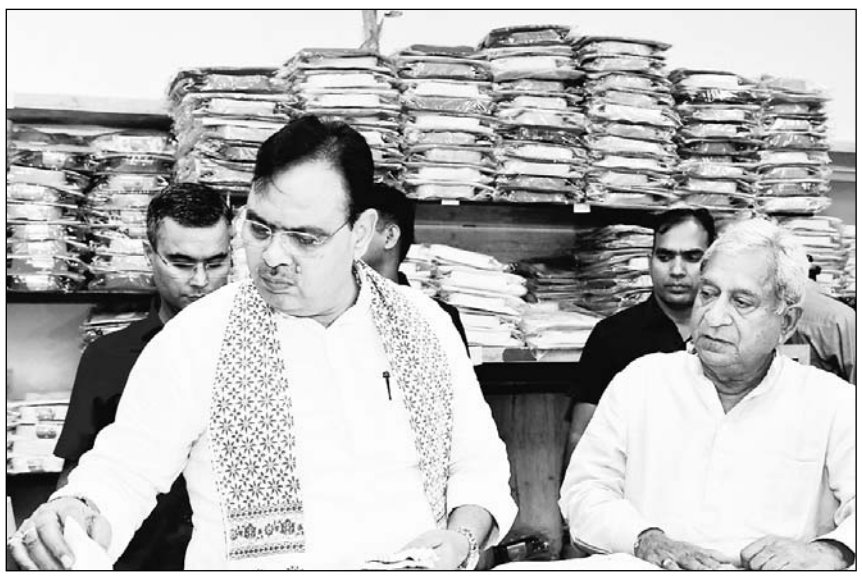

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को राजस्थान खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड परिसर स्थित खादी प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

- खादी वस्त्रों की खरीद कर यू.पी.आई. से भुगतान किया

जयपुर। गांधी जयंती के अवसर पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को राजस्थान खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड परिसर स्थित खादी प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि खादी देश की पहचान है। इसके उत्पाद पर्यावरण हितैषी होते हैं तथा हानिकारक रसायनों से मुक्त होते हैं। उन्होंने कहा कि खादी उत्पादों पर 50 प्रतिशत छूट दी जा रही है। आमजन इस छूट का लाभ उठाते हुए खादी उत्पादों का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें, ताकि कतिनों एवं बुनकरों को आर्थिक संबल मिल सकें। शर्मा ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया और खादी उत्पादों के बारे में विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने खादी उत्पादों का क्रय कर यूपीआई माध्यम से भुगतान भी किया। मुख्यमंत्री ने परिसर स्थित राष्ट्रिपता महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। उन्होंने खादी वस्त्रों को खरीदकर यूपीआई से भुगतान भी किया। इस अवसर पर केकड़ी विधायक शत्रुघ्न गौतम सहित खादी संस्थान से जुड़े कार्मिक भी उपस्थित रहे।

हाईकोर्ट ने डेढ़ दशक पुराने मामले का निपटारा किया

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने मेडिकल राशि के पुनर्भरण के करीब डेढ़ दशक पुराने प्रकरण का निस्तारण करते हुए राज्य सरकार को आदेश दिए हैं कि वह याचिकाकर्ता को चिकित्सीय इलाज में हुए खर्च का सरकारी दर पर गणना कर तीन माह में भुगतान करे। ऐसा नहीं करने पर अदालत ने छह फीसदी ब्याज का भुगतान करने को कहा है। जस्टिस अनूप कुमार ढंड की एकलपीठ ने यह आदेश साहब सिंह की याचिका का निस्तारण करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता विजय पाठक ने बताया कि याचिकाकर्ता जलदाय विभाग, हिंडौन में कार्यरत था। वर्ष 2007 में आपातकाल में उसे जयपुर के निजी अस्पताल में इलाज कराना पड़ा। जिसमें करीब 80 हजार रुपए खर्च हुए। याचिकाकर्ता ने बाद में इस राशि के पुनर्भरण के लिए विभाग में बिल पेश किए। जिसे सहायक अभियंता ने भुगतान की सिफारिश के साथ अधिशासी अभियंता को भेज दिए।

वहीं बिल राशि को विभाग ने यह कहते हुए देने से इनकार कर दिया कि याचिकाकर्ता ने सरकारी अस्पताल या मान्यता प्राप्त निजी अस्पताल में इलाज नहीं कराया है। वहीं जिस अस्पताल से याचिकाकर्ता ने इलाज कराया है, वह राज्य सरकार से अधिकृत भी नहीं है। इसे चुनौती देते हुए कहा गया कि इमरजेंसी में याचिकाकर्ता को इलाज कराना जरूरी था। सुप्रीम कोर्ट भी तय कर चुका है कि इमरजेंसी में कहीं भी इलाज कराया जा सकता है और पुनर्भरण राशि की गणना सरकारी अस्पताल में खर्च होने वाली राशि के आधार पर की जा सकती है। इसलिए याचिकाकर्ता को इलाज में खर्च राशि का पुनर्भरण किया जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने याचिकाकर्ता को तीन माह में राशि का पुनर्भरण करने को कहा है।

आईकोल्ड की बैठक में प्रदेश के 20 अधिकारियों ने भाग लिया

जयपुर। इंटरनेशनल कमिशन ऑन लार्ज डैम्स (आईकोल्ड) की 92वीं वार्षिक बैठक नई दिल्ली में 29 सितम्बर से 3 अक्टूबर तक "डैम्स फोर पीपल, वाटर, एन्वायरमेंट एंड डवलपमेंट" विषय पर आयोजित की जा रही है, जो सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण में बांधों की महत्वपूर्व भूमिका पर जोर देता है।

भारत मंडपम में होने वाला यह कार्यक्रम 65 से अधिक सदस्य देशों के विशेषज्ञों और हित धारकों को विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श और अमूल्य अनुभवों का आदान-प्रदान करने के लिये एक साथ लाता है। राजस्थान राज्य की ओर से एक अक्टूबर को जल संसाधन विभाग के एसीएस अभय कुमार कार्यक्रम के उद्घाटन में सम्मिलित हुए तथा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों के साथ आईकोल्ड की थीम पर चर्चा की एवं अपने अनुभव साझा किये। कार्यक्रम में विभाग के 20 अधिकारियों ने भाग लिया।

राजस्थान की ओर से 2 अक्टूबर

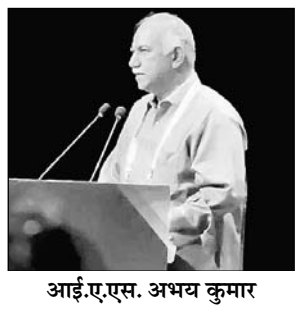

आई.ए.एस. अभय कुमार

को जल संसाधन विभाग के नोडल ऑफिसर और मुख्य अभियंता रवि सोलंकी ने "रोल ऑफ डैम्स एंड नीड ऑफ देयर रिहैबिलेशन इन क्लाइमेट चेंज एडेप्शन" विषय पर पेपर भी पेश किया। जिसमें सतत विकास सुनिश्चित करने के लिये एक लचीले जलवायु परिवर्तन अनुकूलन उपाय के रुप में बांधों का महत्व और उनकी सुरक्षा और परिचालन प्रदर्शन और संबंधित उपकरणों को स्थाई तरीके से बेहतर बनाने के लिये बांधों के पुनर्वास की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

स्वच्छ भारत मिशन करोड़ों भारतवासियों की अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक : नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री के अथक प्रयासों से स्वच्छता बना जन आंदोलन : भजनलाल शर्मा

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गांधी जयंती के अवसर पर 'स्वच्छता ही सेवा' कार्यक्रम के तहत देश में विभिन्न विकास कार्यों का वर्चुअल लोकार्पण किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भी मुख्यमंत्री निवास से वीसी के माध्यम से जुड़े। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने कहा कि राष्ट्रिपता महात्मा गांधी ने आजादी के आंदोलन के समय स्वच्छता का संदेश दिया था जिसे आगे बढ़ाते हुए हमने देश में स्वच्छ भारत मिशन की शुरूआत की थी। अपार जन भागीदारी से यह मिशन अब जन आंदोलन बन चुका है।

मोदी ने कहा कि 'स्वच्छता ही सेवा' पखवाड़ा के तहत देशभर में स्वच्छता से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन 15 दिनों में 27 लाख कार्यक्रम हुए जिनमें 28 करोड़ से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लिया।

इस दौरान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अथक प्रयासों से स्वच्छता अब जनसेवा तथा जन आंदोलन बन चुकी है तथा स्वच्छ भारत की बुनियाद पर बढ़ते हुए विकसित भारत-विकसित राजस्थान का विजन साकार किया जा रहा है। शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री सामाजिक सरोकारों के काम में हमेशा अग्रणी हते हैं।

उन्होंने कहा कि बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, एक पेड़ मां के नाम तथा स्वच्छता ही सेवा जैसे अभियानों से उन्होंने देश में विकास कार्यों में जनभागीदारी को एक नई दिशा दी है।

स्वच्छता पखवाड़े में उत्कृष्ट कार्य पर जयपुर ग्रेटर निगम सहित 15 निकायों का सम्मान

नगरीय विकास मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने अवार्ड देकर सम्मानित किया

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । स्वच्छता ही सेवा अभियान इस वर्ष 17 सितंबर से 1 अक्टूबर तक पूरे राज्य में चलाया गया। जिसका राज्य स्तरीय समापन कार्यक्रम बुधवार को राष्ट्रिपता महात्मा जी की जयंती पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन स्वास्थ्य शासन विभाग एवं जयपुर नगर निगम के संयुक्त तत्वाधान में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा और विशिष्ट अतिथि नगर निगम ग्रेटर मेयर डॉ सौम्या गुर्जर उपस्थित रहीं व कार्यक्रम की अध्यक्षता जयपुर सांसद मंजू शर्मा ने की।

उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम के तहत पूरे राज्य की नगरीय निकायों द्वारा शहरी क्षेत्र में 7000 से ज्यादा अपेक्षित कचरा पॉइंट्स की सफाई की गई। पखवाड़े में 2618 जन भागीदारी के कार्यक्रम जैसे स्वच्छता शपथ, स्वच्छता संवाद, हैरिटेज वॉक ,कल्चरल प्रोग्राम, स्कूलों में संवाद के कार्यक्रम, मैराथन इत्यादि आयोजित किए गए। इसके अलावा स्वच्छता योद्धाओं के स्वास्थ्य की जांच व लोक कल्याणकारी योजनाओं के लाभ देने के लिए 333 सफाई मित्र शिविरों का आयोजन भी किया गया।

- स्वच्छता पखवाड़े के दौरान पूरे राज्य की निकायों द्वारा शहरी क्षेत्र में 7000 से ज्यादा अपेक्षित कचरा पॉइंट्स की सफाई की गई।
- इसके साथ ही 2618 जन भागीदारी के कार्यक्रम जैसे स्वच्छता शपथ, स्वच्छता संवाद, हैरिटेज वॉक, कल्चरल प्रोग्राम, स्कूलों में संवाद कार्यक्रम व मैराथन का आयोजन भी किया गया

नगरीय विकास मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने स्वच्छता पखवाड़े में प्रथम रहे जयपुर ग्रेटर नगर निगम की महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर और आयुक्त रुक्मिणी रियाड को प्रमाण पत्र और ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। इस दौरान सांसद मंजू शर्मा भी मौजूद थीं।

जयपुर ग्रेटर, अजमेर व जोधपुर दक्षिण पुरस्कृत

नगर परिषदों की श्रेणी में चित्तौड़गढ़ एवं जैसलमेर तथा नगर पालिकाओं की श्रेणी में अजीतगढ़, नोखा, बोली, निवाई, रानीवाड़ा, श्रीमाधोपुर, बेंगू, सादड़ी को सम्मानित किया गया। इसी कड़ी में प्रधानमंत्री स्वनिधि यानी प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेण्डर्स आत्मनिर्भर निधि योजना के तहत बेहतरीन कार्य करने वाले नगरीय निकायों और बैंकों को गांधी जयंती पर केंद्र सरकार की अनुशंसा पर यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा द्वारा सम्मानीत किया गया।

15 नगरीय निकाय व 3 बैंकों को मिला अवॉर्ड

योजना के तहत बेहतरीन कार्य करने पर जयपुर ग्रेटर, जयपुर हेरिटेज, कोटा दक्षिण, बीकानेर और अजमेर नगर निगम के साथ ही 10 अन्य मकराना, भवानीमंडी, नोहर, बांसवाडा, बालोतरा, दौसा, झालावाड़, पीलीबंगा, बाड़मेर, सरदारशहर नगरीय निकाय को भी सम्मानित किया गया। इनके अलावा राज्यस्तर पर स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, बैंक ऑफ बड़ौदा तथा राजस्थान मरुधारा ग्रामीण बैंक को सम्मानित किया गया। साथ ही निकाय स्तर से 12 बैंक शाखाओं को सम्मानित किया गया।

डिजिटलाईजेशन के प्रति जागरुक किया

झाबर सिंह खर्रा ने कहा कि योजना के समस्त लाभार्थियों को डिजीटल लेन-देन करने पर जागरूक करें। इसके लिए उन्होंने बैंकों एवं निकायों द्वारा संयुंक्त रूप से शिविर आयोजित करने के भी निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने स्वनिधि से समृद्धि कार्यक्रम के तहत विशेष शिविरों के आयोजन में बैंकों से सम्बन्धित योजनाओं जैसे जन-धन योजना, जीवन सुरक्षा बीमा योजना तथा जीवन ज्योति बीमा योजना से लाभान्वित करने हेतु सभी बैंक की शाखाओं को भाग लेने हेतु भी निर्देशित किया।

स्वच्छता यात्रा जारी रहेगी:कुमार पाल गौत्तम

डीएलबी निदेशक कुमार पाल गौतम ने कहा, पीएम स्वनिधि योजना ने राज्य के स्ट्रीट वेन्डर्स को न केवल आर्थिक संबल प्रदान किया है, बल्कि डिजिटल लेन-देन की ओर प्रेरित कर उन्हें वित्तीय समावेशन की दिशा में एक बड़ा कदम उठाने में मदद की है। हमारा उद्देश्य है कि इस योजना के लाभार्थी अपने व्यावसायिक जीवन में आत्मनिर्भर बनें और उनकी आजीविका स्थायी हो सके। स्वच्छता यात्रा निरंतर जारी रहेगी।

डॉ. सतीश पूनिया का अपेंडिक्स का रोहतक में सफल ऑपरेशन हुआ

रोहतक। विश्व के लोकप्रिय नेता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में हरियाणा विधानसभा चुनाव में भाजपा के विजय संकल्प अभियान में दो महीने से अधिक समय से निरंतर अथक परिश्रम कर रहे। भाजपा हरियाणा प्रभारी एवं भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया का मंगलवार देर रात को रोहतक (हरियाणा) में अपेंडिक्स का सफल ऑपरेशन हुआ।

- दो महीने से अधिक समय से हरियाणा विधानसभा चुनाव में जुटे हैं पूनिया
- भाजपा केंद्रीय नेतृत्व से लेकर हरियाणा एवं राजस्थान प्रदेश नेतृत्व ने सतीश पूनिया के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की

भाजपा हरियाणा प्रभारी एवं भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया का मंगलवार देर रात को रोहतक (हरियाणा) में अपेंडिक्स का सफल ऑपरेशन हुआ।

गौरतलब है कि भाजपा केंद्रीय नेतृत्व के निर्देशानुसार हरियाणा भाजपा संगठन प्रभारी सतीश पूनियां 2 महीने से अधिक समय से हरियाणा विधानसभा चुनाव में कार्यकर्ताओं के परिश्रम से पूरे हरियाणा प्रदेश में प्रवास, बैठकें और सभाओं के माध्यम से भाजपा के विजय संकल्प अभियान में जुटे हुये हैं। इस बीच मंगलवार रात को सतीश पूनिया के पेट में अचानक तेज दर्द हुआ। जहां उन्हें रोहतक के एक निजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया। जांच में उन्हें अपेंडिक्स होने की जानकारी सामने आई, ऐसे में चिकित्सकों ने देर रात अपेंडिक्स का सफल ऑपरेशन किया। अब चिकित्सकों की सलाह के अनुसार सतीश पूनिया कुछ दिन स्वास्थ्य लाभ पर रहेंगे। ऐसे में वह अस्पताल से ही दूरभाष के माध्यम चुनाव प्रबंधन में जुटे हुए हैं और आगामी दिनों में वह जयपुर आकर पूर्णत: स्वस्थ होने के बाद राजस्थान एवं हरियाणा के कार्यकर्ताओं और आमजन के बीच सदैव की तरह उपस्थित रहेंगे। भाजपा केंद्रीय नेतृत्व से लेकर भाजपा हरियाणा एवं भाजपा राजस्थान प्रदेश नेतृत्व एवं अन्य पार्टियों के नेताओं ने सतीश पूनिया के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की है। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, केंद्रीय मंत्री एवं हरियाणा भाजपा चुनाव प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान, केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर, त्रिपुरा के पूर्व सीएम एवं चुनाव सह प्रभारी विप्लव देव, हरियाणा भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहनलाल बडोली, सह प्रभारी सुरेंद्र नगर, भाजपा राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़, राजस्थान की डिप्टी सीएम दिया कुमारी, पूर्व प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी, केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल, पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़, छत्तीसगढ़ कांग्रेस के प्रभारी एवं राजस्थान के पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, राजस्थान कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा, राजस्थान सरकार में मंत्री किरोड़ी लाल मीणा, राज्यवर्धन सिंह राठौड़, सुमित गोदारा सहित प्रदेश के तमाम विधायकों, सांसदों, जनप्रतिनिधियों एवं भाजपा पदाधिकारियों ने सतीश पूनिया के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की है।

मुख्यमंत्री ने नवरात्रा स्थापना पर शुभकामनाएं दीं

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने नवरात्रा स्थापना (3 अक्टूबर) के पावन अवसर पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। शर्मा ने कहा कि शारदीय नवरात्र का यह पर्व हमें मातृ शक्ति की आराधना की प्रेरणा देता है। इस पावन अवसर पर हम सभी समाज में लिंग भेद तथा कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियों को समाप्त करने, महिलाओं का सम्मान करने तथा बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने का संकल्प लें, जिससे एक सशक्त समाज का निर्माण हो सके और देश प्रगति के नए कीर्तिमान बना सके।

आमजन की समस्याओं का समाधान जल्द

जयपुर । नगर निगम हैरिटेज मुख्यालय में बुधवार को हवामहल विधानसभा क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं के निराकरण के लिए बैठक का आयोजन किया गया। इस दौरान महापौर कुसुम यादव, हवा महल विधायक बाल मुकुंद आचार्य, आयुक्त अरुण कुमार हसीजा, अतिरिक्त आयुक्त सुरेंद्र सिंह यादव ने हवामहल विधानसभा क्षेत्र की समस्याओं के बारे में चर्चा की।

टूटी सड़कों की पेच रिपेयरिंग का काम 15 अक्टूबर तक पूरा करवाएं : आनंदी

जयपुर (कासं)। जयपुर विकास प्राधिकरण (जे.डी.ए.) कमिश्नर आनंदी ने बुधवार को इंजीनियर्स, उपायुक्तों और प्रवर्तन शाखा के अफसरों की बैठक ली। उन्होंने कहा कि टूटी सड़कों की पेच रिपेयरिंग का काम 15 अक्टूबर तक पूरा कराएं। पेचवर्क का काम पूरी गुणवत्ता के साथ होना चाहिए। उन्होंने कोर्ट कैसेज का निस्तारण त्वरित गति से करने एवं इससे संबंधित प्रकरणों की निरंतर मॉनिटरिंग कर पेन्डेन्सी शून्य करने के निर्देश दिये। उन्होंने निदेशक अभियांत्रिकी को जयपुर शहर में चल रहे मुख्य प्रोजेक्ट्स की प्राथमिकता तय करते हुए पूर्ण करने के लिए कहा। राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट-2024 से संबंधित आवश्यक सुधारीकरण व सौंदर्यीकरण कार्य शीघ्र प्रारंभ कर तुरंत करवाने को कहा। उन्होंने डीटीएस-सम्पर्क पोर्टल पर लम्बित प्रकरणो को गुणात्मक रूप से निस्तारित करने एवं 30 दिवस से पूर्व लंबित प्रकरणों का तत्काल निस्ताकरण करने के निर्देश दिये। बैठक में सेक्टर व्यावसायिक भूखण्डों, मुख्यत: जोन-9, 10 व 11, रिंग रोड परियोजना में नीलामी के लिए उपलब्ध भूखण्डों को चिह्नित करके नीलामी में रखने पर चर्चा की। इसके साथ ही जोन-10, जोन-11 एवं जोन-12, जोन-14 में विभिन्न नई योजनाएं लॉन्च करने को कहा।

गांधी जयंती पर साइक्लिंग के जरिए दिया अच्छा स्वास्थ्य रखने का संदेश

बीकानेर, (कासं)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े का बुधवार को गांधी जयंती पर सफाई अभियान के साथ समापन हो गया।

इस अवसर पर कृषि विश्वविद्यालय परिसर में छात्र कल्याण निदेशालय की ओर से आयोजित सफाई अभियान कार्यक्रम में कुलपति डॉ अरुण कुमार, अनुसंधान निदेशक डॉ विजय प्रकाश, प्रसार निदेशक डॉ पी. एस.शेखावत, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ पी. के. यादव, आईएबीएम निदेशक डॉ आई.पी. सिंह, छात्र कल्याण निदेशक डॉ निर्मल सिंह दहिया, लाइजन ऑफिसर डॉ वाई. के. सिंह, सिमका प्रभारी डॉ सुजीत कुमार यादव, डॉ वी. एस. आचार्य, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की डॉ नीना सरीन, डॉ मंजू राठौड़, कृषि महाविद्यालय के एनएसएस प्रोग्राम ऑफिसर डॉ सीपी मीना, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की प्रोग्राम ऑफिसर डॉ परीमिता, एनसीसी इंचार्ज डॉ आर. के. जाखड़, सभी छात्रावासों के वार्डन समेत बड़ी संख्या में एनसीसी, एनएसएस के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। सभी ने झाड़ू लगाकर करीब एक घंटे तक सफाई अभियान चलाया।

स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरूण कुमार सिंह ने साइक्लिंग के जरिए अच्छा स्वास्थ्य रखने का संदेश दिया।

- **छात्रावासों के वार्डन समेत बड़ी संख्या में एनसीसी, एनएसएस के विद्यार्थियों ने झाड़ू लगाकर करीब एक घंटे तक सफाई अभियान चलाया**

इससे पूर्व छात्र कल्याण निदेशालय परिसर में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर कुलपति डॉ अरूण कुमार और कृषि विश्वविद्यालय के सभी डीन डायरेक्टर्स व स्टूडेंट्स ने दोनों महापुरूषों के चित्रों पर पुष्पांजलि अर्पित की।

कुलपति डॉ अरूण कुमार ने बताया कि कृषि विश्वविद्यालय में 15 अगस्त से 2 अक्टूबर तक स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा मनाया गया। इसके तहत कृषि महाविद्यालय बीकानेर, आईएबीएम और सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने छात्रावासों में, कृषि विश्वविद्यालय कार्यालयों, सड़कों इत्यादि पर साफ-सफाई की। स्वच्छता ही जीवन को आधार मानते हुए सफाई अभियान चलाया गया। सफाई अभियान के समापन पर भी कृषि विश्वविद्यालय कार्यालयों, मुख्य सड़कों इत्यादि पर सफाई की गई।

कुलपति ने बताया कि कार्यक्रम में सभी को कृषि विश्वविद्यालय परिसर को क्लीन एंड ग्रीन रखने को लेकर प्रेरित किया गया। स्वच्छता पखवाड़े के आयोजन से विद्यार्थियों में भी स्वच्छता को लेकर जागरूकता पैदा हुई है।

छात्र कल्याण निदेशक डॉ निर्मल सिंह दहिया ने बताया कि स्वच्छता ही सेवा अभियान के अंतर्गत 15 अगस्त से 02 अक्टूबर तक सभी कृषि महाविद्यालयों, आईएबीएम, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय में प्रतिदिन सफाई अभियान चलाया गया। जिसमें स्टूडेंट्स ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

विद्यार्थियों को छात्रावासों, महाविद्यालय परिसर को साफ सुथरा रखने हेतु प्रेरित किया गया। खास बात ये कि गांधी जयंती के अवसर पर कृषि विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित सफाई अभियान कार्यक्रम में कुलपति डॉ अरूण कुमार अपने आवास से कार्यक्रम स्थल तक साइकिल चलाते हुए पहुंचे। इससे उन्होने स्टूडेंट्स और स्टाफ को साइकिल का अधिक से अधिक इस्तेमाल करने और साइकिलिंग के जरिए अच्छा स्वास्थ्य रखने का संदेश भी दिया।

साइंस प्रदर्शनी में दिखाया हुनर

बीकानेर, (कासं)। रामपुरा लालगढ स्थित मघी देवी सरस्वती सीनियर सैकण्डरी स्कूल में साइंस एग्जीबिशन का आयोजन किया गया। स्कूल के लगभग 115 स्टूडेंट ने हिस्सा लिया।

सभी स्टूडेंट ने अपने-अपने ग्रुप बनाकर साइंस के प्रोजेक्ट तैयार किये। इन प्रोजेक्ट में आईवर्किंग, वेस्ट मटेरियल से बॉडी वर्किंग, चंद्रयान, कंप्यूटर वेबसाइट व प्रोजेक्टर बनाने आदि के प्रोजेक्ट का प्रजेंटेशन किया गया। स्टूडेंट के अभिभावक व अन्य जन सामान्य वर्ग इस साइंस एग्जीबिशन को देखने के लिए बड़ी मात्रा में आए। सभी ने स्टूडेंट की बहुत प्रशंसा की।

सभी लोग स्टूडेंट द्वारा बनाए गए इन प्रोजेक्ट को देखकर आश्चर्यचकित हो गए कि इस उम्र के स्टूडेंट भी इतना अच्छा कार्य कर सकते हैं। प्रोग्राम में वोटिंग द्वारा फर्स्ट, सेकंड व थर्ड स्थान का चयन किया गया। जिसमें कक्षा 12 द्वारा बनाए गए स्कूल वेबसाइट प्रोजेक्ट को प्रथम सिलेक्ट किया गया।

कक्षा 11 के स्टूडेंट द्वारा बनाए गए प्रोजेक्टर के प्रोजेक्ट को द्वितीय स्थान मिला। कक्षा 12 के ही स्टूडेंट द्वारा बनाया गया चंद्रयान के प्रोजेक्ट को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। प्रथम स्थान वाले स्टूडेंट ख्यालचंद जयपाल, मोनू सिंह, जितेंद्र घारु, संदीप पाल, विष्णु प्रजापत तथा श्यामू है तथा द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले स्टूडेंट का नाम कौशर है। सानिया का ग्रुप तथा तीसरा स्थान प्राप्त करने वाले स्टूडेंट का नाम साहिल है।

सार-समाचार

पर्यावरण के लिए सफाई जरूरी

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर में स्वच्छता अभियान का शुभारंभ महापौर सुशीला कंवर राजपुरोहित ने किया।

बीकानेर, (कासं)। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर स्वच्छता पखवाड़ा के तहत स्वच्छता अभियान एवं राष्ट्रीय सेवा योजना का एक दिवसीय शिविर आयोजित किया गया। इसका आयोजन राजकीय डूंगर महाविद्यालय के कन्या छात्रावास में महिला प्रकोष्ठ एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में किया गया। इस अवसर पर बीकानेर नगर निगम की महापौर सुशीला कंवर राजपुरोहित मुख्य अतिथि, डॉ. सत्यप्रकाश आचार्य विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। महापौर सुशीला कंवर ने अपने संबोधन में अपनी विद्यार्थी जीवन की स्मृतियों को ताजा करते हुए स्वयंसेवकों को स्वच्छ भारत अभियान में अपना अमूल्य योगदान देने की अपील की। विशिष्ट अतिथि सत्यप्रकाश आचार्य ने स्वच्छता को स्वभाव में लाने की आवश्यकता जताई व स्वयंसेवकों से आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखने की अपील की। प्राचार्य डॉ. पुरोहित ने स्वयंसेवकों व छात्रावास की विद्यार्थियों से कहा कि स्वच्छता को स्वभाव एवं संस्कार बनाए। कन्या छात्रावास में महापौर सुशीला कंवर, समाजसेवी डॉ. सत्यप्रकाश आचार्य व प्राचार्य डॉ. राजेन्द्र पुरोहित ने स्वच्छता अभियान का आगाज किया। इसके बाद स्वयंसेवकों ने श्रमदान कर परिसर को साफ-सुथरा बनाने में अपना श्रमदान दिया। स्वयंसेवकों के एक दिवसीय शिविर में विद्यार्थियों ने भी अपनी बेहतरीन अभिव्यक्तियां प्रदान की। स्वयंसेवकों द्वारा नृत्य, देशभक्ति गीत, भाषण इत्यादि प्रस्तुत किए गए। इस अवसर पर एन. एस. एस. के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. निर्मल कुमार रांकावत, डॉ. संपत भादू, डॉ. राजेन्द्र सिंह, नेहरू युवा केन्द्र बीकानेर की युवा अधिकारी रुबीपाल एवं अनेक विद्वान संकाय सदस्य, स्वयंसेवक उपस्थित थे। इस अवसर पर कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुमन चौधरी ने किया।

शायर डॉ.नासिर जैदी का अभिनंदन

शब्दरंग साहित्य एवं कला संस्थान के तत्वावधान में शायर डॉ. सैयद नासिर जैदी का अभिनंदन किया।

बीकानेर, (कासं)। शब्दरंग साहित्य एवं कला संस्थान के तत्वावधान में शायर डॉ.सैयद नासिर जैदी का अभिनंदन किया गया। बर्तन बाजार में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. जैदी ने अपनी चुनिंदा रचनाएं पेश कर भाव विभोर कर दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कवि कथाकार राजेंद्र जोशी ने कहा कि डॉ. सैयद जैदी की शायरी राष्ट्रप्रेम, मानवीय भावनाओं से ओत प्रोत है, जिनमे मानवता और भाईचारे का संदेश भरा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ लेखक अशफाक कादरी ने कहा कि डॉ. सैयद जैदी के कलाम में समय का सच है जो आम इंसान को सोचने पर मजबूर करता है। कार्यक्रम संयोजक कवि कथाकार राजाराम स्वर्णकार ने डॉ. सैयद नासिर जैदी के व्यक्तित्व कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम में आर. के. भटनागर, पवन प्यारे, प्रेमनारायण व्यास ने भी अपने विचार व्यक्त किए। प्रो डॉ. सैयदा सोफिया जैदी ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

रैली से दिया स्वच्छता का संदेश

चूरू, (कासं)। स्वामी गोपाल दास राजकीय कन्या महाविद्यालय की एनएसएस की छात्राओं ने बुधवार को महात्मा गांधी जयंती को स्वच्छ-भारत दिवस के रूप में मनाया। इस अवसर पर चूरू के धर्मस्तूप के आस-पास सिंगल यूज प्लास्टिक के कचरे को इकट्ठा कर उसका निस्तारण किया गया। इस दौरान एक रैली का आयोजन किया गया। रैली को महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. चंपालाल वर्मा ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान छात्राओं ने स्वच्छता संबंधी नारे लगाये और मुख्य मार्ग पर दुकानदारों और रेहड़ी पटरी वालों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रमदान कर किया गया। कार्यक्रम में भाजपा युवा नेता भंवर गुर्जर ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि जोश और जज्बे के साथ इस कार्य को करें। उन्होंने बताया कि ऐसे कार्यक्रम केवल औपचारिक रूप से नहीं होने चाहिये, बल्कि इससे लोगों को जागरूक करना चाहिये। उन्होंने स्वच्छता संबंधी गतिविधियों से भी छात्राओं को अवगत कराया। सेवानिवृत्त सेना अधिकारी मंगतू राम गुर्जर ने स्वच्छता को समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण के लिए उपयोगी बताया। प्राचार्य डॉ. चंपालाल वर्मा ने छात्राओं को ऐसे अवसरों पर योगदान देने के लिए आठाह किया।

सातों विधायक बैठक से गायब, नहरी पानी से सबका किनारा

हनुमानगढ़, (कासं)। भाखड़ा परियोजना की नहरों का रेग्युलेशन निर्धारित करने के लिए कलेक्ट्रेट सभागार में भाखड़ा रेग्यूलेशन कमेटी की बैठक की गई। श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिले की अर्थव्यवस्था में नहरों का अहम योगदान माना जाता है। सिंचाई पानी को लेकर बड़े आंदोलन भी दोनों जिलों में हो चुके हैं। भाखड़ा रेग्युलेशन कमेटी की बैठक में शामिल होने के लिए सभी विधायकों को सूचित किया गया था।

इस अहम बैठक में किसान हित की बात करने को श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिले के कोई विधायक व सांसद बैठक में शामिल नहीं हुए। इस तरह उपस्थिति मामले में विधायकों व सांसद की संख्या जीरो रही। इस दौरान बैठक की अध्यक्षता कलेक्टर कानाराम ने की। किसान प्रतिनिधि ओम जांगू ने कहा कि विभाग की ओर से तैयार रेग्युलेशन से किसानों की कोई फसल नहीं पकेगी। सरसों व चने को भी कोर दबाने के लिए दिसम्बर में पूरा पानी चाहिए। जांगू ने जनवरी तक नहरों में 1200 क्यूसेक पानी चलाने की बात कही। उन्होंने कहा कि विभाग ने जो रेग्युलेशन तैयार किया है वह आंकड़ों के हिसाब से ठीक है लेकिन खेती के लिहाज से उचित नहीं है।

- **नहरों का रेग्युलेशन निर्धारित करने के लिए कलेक्ट्रेट सभागार में भाखड़ा रेग्यूलेशन कमेटी की बैठक में सभी विधायक नहीं पहुंचे**

इस स्थिति में विभाग से मांग करते हैं कि वह जनवरी तक पूरा पानी चलाए। किसान प्रतिनिधि अशोक चौधरी ने कहा कि सिंचाई विभाग 1200 क्यूसेक पानी देकर रबी फसलों की बिजाई करवा दें। पकाई ऊपर वाला अपने आप करवा देगा। सभी पक्षों को जानने के बाद जिला कलेक्टर कानाराम ने कहा कि जिला प्रशासन का प्रयास रहेगा कि नहरों में अधिकतम पानी अधिकतम समय के लिए चलाया जाए। लेकिन बांधों में भंडारित पानी का ध्यान रखना बेहद जरूरी होगा।

उपलब्ध पानी को ही सही तरीके से वितरित करने के लिए यह बैठक बुलाई गई है। भाखड़ा रेग्युलेशन कमेटी की संपन्न हुई बैठक में सात में से एक भी विधायक बैठक में किसान हित की बात करने नहीं पहुंचे।

विभागीय अधिकारियों के अनुसार हनुमानगढ़ विधायक गणेशराज बंसल, सादुलशहर विधायक गुरवीर सिंह बराड़, संगरिया विधायक अभिमन्यु पूनियां, पीलीबंगा विधायक विनोद गोठवाल, सूरतगढ़ विधायक डूंगरराम गेदर, श्रीगंगानगर विधायक जयदीप बिहाणी, श्रीकरणपुर विधायक रूपिंदर सिंह कुन्नर व सांसद कुलदीप इंदौरा को बैठक में शामिल होना था। इसकी सूचना सभी को भिजवाई गई थी।

किसान नेता ओम जांगू ने आरोप लगाया कि चुनाव के वक्त किसानों को हक का पानी दिलाने की बात करने वाले सभी नेता इस बैठक में गैर हाजिर रहे। जो उनकी किसान हित की सोच को साफ दर्शाती है।

संतोष अहलावत ने गिनाई सरकार की उपलब्धियां

चूरू, (कासं)। पूर्व सांसद और भाजपा प्रदेश महामंत्री संतोष अहलावत ने प्रदेश की सरकार के कार्यकाल को प्रदेश के लिए स्वर्णिम कार्यकाल बताया। पूर्व सांसद और भाजपा प्रदेश महामंत्री संतोष अहलावत ने सरकार की जलजीवन मिशन, कुसुम योजना, रसोई गैस सिलेंडर सब्सिडी योजना और तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण, लखपति दीदी योजना, लाडो प्रोत्साहन योजना के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सीएम भजनलाल शर्मा कि यह डबल इंजन की सरकार प्रदेश के विकास के लिए कार्य कर रही है।

जिस प्रकार केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी नीतियां देश को विकसित देश बनाने की ओर अग्रसर हो रही है। उसी प्रकार प्रदेश सरकार उसी रास्ते पर चलते हुऐ प्रदेश को विकसित प्रदेश बनाने की और अठासर है। विधायक हरलाल सहारण ने कहा कि सीएम भजनलाल शर्मा से मिलकर हमने जो चूरू के विकास के लिए योजनाएं मांगी हैं। उन सभी योजनाओं को प्रदेश के बजट में इस सरकार ने जारी किया।

गांधी व शास्त्री की जयंती मनाई

सीकर, (निसं)। समाज कल्याण सप्ताह के दूसरे दिन राष्ट्रिपता महात्मा गांधी जयन्ती के अवसर पर जिला कलेक्ट्रेट परिसर में बुधवार को जिला कलेक्टर मुकुल शर्मा, अतिरिक्त जिला कलेक्टर रतन कुमार, अतिरिक्त जिला कलेक्टर शहर हेमराज परीडवाल, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी नरेन्द्र पुरोहित, सहायक निदेशक जनसम्पर्क पूरण मल, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की उप निदेशक प्रियंका पारीक सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारियों ने गांधीजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

इस मौके पर जिला कलेक्टर मुकुल शर्मा ने महात्मा गांधी के आदर्शों को आज के युग में अधिक प्रासंगिक बताते हुए इनकों अपने जीवन में आत्मसात करने की बात कही। उन्होंने बापू के आदर्शों, जीवनदर्शन, सिद्धान्तों को अपनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि गांधीजी ने सत्य, अंहिसा के मार्ग पर चलने की बात कही थी जिसकी शुरूआत हमें अपने स्वयं से ही करनी चाहिए। गांधीजी का पूरा जीवन हमें प्रेरणा देता है। गांधीजी हमेशा मंशा, वाचा, कर्मणा की बात कहते थे, उन्होंने जीवन में स्वच्छता के महत्व पर बल दिया।कार्यक्रम में पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती के अवसर पर शास्त्री की प्रतिमा पर भी माल्यार्पण किया गया तथा शास्त्री की सादगी एवं आदर्शों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के दौरान सर्वधर्म प्रार्थना सभा में रघुपति राघव राजा राम, वैष्णव जन तो तेने कहिए, हर देश में तू हर भेष में तू गांधीजी के प्रिय भजनों का स्काउट गाईड के बच्चों ने गायन के साथ ही स्वच्छता की लघु नाटिका का मंचन कर उपस्थित जनों को स्वच्छता के महत्व का प्रेरक संदेश दिया।कार्यक्रम के बाद जिला कलेक्टर मुकुल शर्मा ने कलेक्ट्रेट के लॉन में पौधारोपण किया तथा पांच दिव्यांगों को माला पहनाकर स्कूटी प्रदान की। इस दौरान महात्मा गांधी जीवन दर्शन समिति के जिला संयोजक, जिला सह संयोजक राजेन्द्र प्रसाद सैनी, यूआईटी सचिव जगदीश प्रसाद गौड, जिला परिषद सदस्य उर्मिला धायल, सहायक निदेशक प्रशासनिक सुधार विभाग इंदिरा शर्मा, जिला खेल अधिकारी अशोक कुमार, सहायक निदेशक शिक्षा राकेश गढवाल आदि मौजूद रहे।

साफ-सफाई व श्रमदान किया

पाटन, (निसं)। स्वच्छता पखवाड़े के तहत पशुपालन विभाग के जिला कार्यालय सहित समस्त 171 संस्थाओं में साफ सफाई एवं श्रमदान कार्य संपन्न हुए।

विभाग के जिला उपनिदेशक डॉ रणजीत मेहरानिया ने बताया कि विभाग के उपनिदेशक कार्यालय, 6 ब्लॉक कार्यालय, 10 प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय, 56 पशु चिकित्सालय एवं 98 पशु चिकित्सा उपकेंद्रों में रिकॉर्ड, स्टोर एवं स्टोक का नियमित संधारण, साफ सफाई, श्रमदान के कार्य कर स्वच्छता को लेकर शानदार संदेश दिया गया। जिसकी प्रशंसा प्रमुख शासन सचिव पशुपालन विभाग द्वारा भी की गई। डॉ मेहरानिया ने बताया कि गांधी जयंती के अवसर पर उक्त कार्य पूर्ण किया जाकर उत्कृष्ट कार्य करने वाली संस्थाओं का नाम संबंधित जिला कार्यालय द्वारा उच्च अधिकारियों को भी भिजवाए गए है।

ब्लॉक कार्यालय उदयपुरवाटी, पशु चिकित्सालय छापोली, जीलो, जसरापुर, नेवरी, पशु चिकित्सा उपकेंद्र करडका, डेहरा जोहडी, स्यालोदडा आदि संस्थाओं की भवन व कार्यालय की शानदार व्यवस्था ने सभी संस्थाओं के लिए उदाहरण पेश किया है।

10 लाख रूपये का चैक सौंपा

सीकर, (निसं)। सीकर केन्द्रीय सहकारी बैंक शाखा सूरजपोल द्वारा ग्राम सेवा सहकारी समिति रसीदपुरा के ऋणी सदस्य ताराचंद निवासी मैलासी की मृत्यु हो जाने पर समिति द्वारा दुर्घटना बीमा क्लेम तैयार कर बीमा कम्पनी को भिजवाया गया था। जिस पर बैंक के ब्रांच मैनेजर हिमांशु सोनी, सहकारी जिला कर्मचारी यूनियन के अध्यक्ष दुर्गा सिंह सुण्डा, पैक्स मैनेजर राकेश कुमार, रिछपाल सुंडा ,नरेश सुंडा द्वारा नोमिनी मृतक की पत्नी संजू देवी को 10 लाख रूपये की राशि का चैक सौंपा गया। इस दौरान सहकारी समिति के अध्यक्ष ताराचंद, सरपंच प्रतिनिधि अनिल एवं गणमान्य ठाामवासी मौजूद रहे।

मंत्री गोदारा ने भाजपा सरकार की उपलब्धियां गिनाई

बीकानेर, (कासं)। भारतीय जनता पार्टी संभाग मुख्यालय में आज प्रदेश की भाजपा सरकार और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के 10 माह के कार्यकाल और उपलब्धियों पर खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा ने प्रेस वार्ता कर सरकार के द्वारा किए कार्यों की जानकारी दी।

मंत्री गोदारा ने कहा कि भजनलाल सरकार हर वर्ग के लिए हर क्षेत्र में काम कर रही है। 10 माह के कार्यकाल में सरकार ने संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चम्बल लिंक परियोजना (ई.आर.सी.पी.) के लिए केन्द्र सरकार, राजस्थान एवं मध्यप्रदेश के मध्य एमओयू, ताजेवाला हैड से यमुना के पानी के राजस्थान में उपयोग के लिए केन्द्र सरकार, हरियाणा एवं राजस्थान सरकार के मध्य एमओयू, पेयजल योजनाओं पर 5870 करोड़ रूपये व्यय, जल जीवन मिशन में 9.03 लाख नल कनेक्शन, राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम एवं एनटीपीसी, एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी, कोल इंडिया एवं एनएलसी इंडिया के मध्य 28,500 मेगावाट की अक्षय ऊर्जा एवं 3325 मेगावाट की थर्मल परियोजनाएं स्थापित करने के लिए 1 लाख 50 हजार करोड़ रूपये के निवेश के लिए एमओयू, प्रसारण तंत्र को 10 हजार करोड़ रूपये के निवेश से सुदृढ एवं विकसित करने हेतु पावरग्रिड कॉर्पोरेशन के साथ एमओयू किया। कुसुम सी के अंतर्गत 1783 स्थानों पर 4524 मेगावाट के संयत्रों की स्थापना के लिए कार्यादेश जारी, लगभग 3 लाख कृषि कनेक्शन धारको को दिन में बिजली उपलब्ध हो सकेगी।

इसी तरह पेपर लीक में एस.आई.टी. द्वारा 52 एफआईआर दर्ज की गई। 173 दोषियों की गिरफ्तारी हुई।

कपड़े के थैलों का उपयोग ही पर्यावरण सुरक्षा के लिए बेहतर उपाय : रविन्द्र जैन

बीकानेर, (कासं)। महावीर इंटरनेशनल जनसेवार्थ- जनहितार्थ सेवा कार्यों के अंतर्गत अपने 50 वें वर्ष को गोल्डन जुबली वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

इसके तहत पर्यावरण जन जागृति अभियान महावीर इंटरनेशनल के चारों केन्द्र महावीर इंटरनेशनल बीकानेर, गंगाशहर, बीकाणा वीरा केन्द्र और गंगाणा वीरा केन्द्र द्वारा चलाया जा रहा है। 2 अक्टूबर बुधवार को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जयंती अवसर पर महावीर इंटरनेशनल केन्द्र के चारों केन्द्र की ओर से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सुजानदेसर में पर्यावरण जन जागृति अभियान 'सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त बीकानेर' संगोष्ठी आयोजित की गई।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सुजानदेसर के विद्यार्थियों को महावीर इंटरनेशनल ने कपड़े के थैले वितरित किए।

मुख्य वक्ता महावीर इंटरनेशनल पर्यावरण संरक्षण के अंतरराष्ट्रीय निदेशक वीर रविन्द्र जैन ने विद्यार्थियों को प्लास्टिक की थैलियां इस्तेमाल नहीं करने और अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखने की शपथ दिलाई। इस मौके पर विद्यालय के बालक-बालिकाओं को संबोधित करते हुए जैन ने प्लास्टिक से पर्यावरण को होने वाले नुकसान से अवगत कराया और कहा कि हमें जितना हो सके प्लास्टिक की थैलियों का, बोतलों और अन्य वस्तुओं का दैनिक जीवन में कम से कम उपयोग करना चाहिए। यह पर्यावरण के लिए ही नहीं हम सबके लिए घातक है। इनके कम से कम इस्तेमाल से हम पर्यावरण संरक्षण में बहुत बड़ा योगदान दे सकते हैं। संगोष्ठी में कार्यक्रम प्रभारी उप निदेशक पर्यावरण रीजन 5 वीरा भारती गहलोत, महावीर इंटरनेशनल बीकानेर के अध्यक्ष वीर नरेन्द्र सुराणा, गंगाशहर अध्यक्ष वीर टोडरमल चौपड़ा, गंगाणा वीरा केन्द्र अध्यक्ष वीरा रक्षा बोथरा, सचिव वीरा सरिता नाहटा, बीकाणा वीरा केन्द्र कोषाध्यक्ष वीरा मिथिला भूरा, सदस्य वीर त्रिलोकचंद बाफना, वीर चन्द्र कुमार राखेचा, जेठमल नाहटा, वीर प्रवीण मित्तल, वीर सुरेश गुप्ता सहित समस्त विद्यालय स्टाफ मौजूद रहा। कार्यक्रम के अंत में सभी विद्यार्थियों को कपड़े के थैले वितरित किए गए।

- **विद्यार्थियों को प्लास्टिक की थैलियां इस्तेमाल नहीं करने और स्वच्छता की शपथ दिलाई**

अग्रसेन जयंती महोत्सव के तहत शोभायात्रा निकाली

बीकानेर,(कासं)। भगवान अग्रसेन जयंती महोत्सव के तहत आज शहर में शोभायात्रा निकाली। शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई यह यात्रा अग्रसेन सर्किल पहुंची।

शोभायात्रा का जगह जगह पुष्प वर्षा कर स्वागत सत्कार किया गया। तीन अलग- अलग स्थानों से संचेतन झांकियो से सुभोषित शोभायात्रा में समाज की महिला, पुरूष व बच्चों का उत्साह देखते ही बन रहा था। अग्रसेन भवन व्यास कॉलोनी, समता नगर तथा अग्रवाल सभा भवन गोगागेट से रवाना हुई इन शोभायात्राओं में सजे धजे उंट गाड़े, घोड़े, रथ व पैदल तथा वाहनों पर चलते सजातीय बंधु भगवान अग्रसेन के जयकारे लगा रहे थे। इस शोभायात्रा का त्रिवेणी संगम डीआरएम ऑफिस के पास स्थित अग्रसेन सर्किल पर हुआ। जहां भगवान अग्रसेन की पूजा अर्चना की गई।

अग्रसेन जयंती महोत्सव के तहत सजे धजे ऊंटगाड़े, घोड़े, रथ व पैदल तथा वाहनों पर शोभायात्रा निकाली।

भगवान अग्रसेन जयंती का मुख्य समारोह तीन अक्टूबर को आयोजित होगा। कार्यक्रम में पूजन आरती के बाद मेधावी विद्यार्थियों, समाज के विशिष्ट जनों का सम्मान, उद्यमियों व विभिन्न वर्ग की प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नगर विकास न्यास की सचिव अर्पणा गुप्ता, विशिष्ट अतिथि राजस्थान राज्य अभिलेखागार के निदेशक नितिन गोयल, जिला परिषद के अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी अवि गर्ग होंगे। जबकि अध्यक्षता उद्योगपति बुलाकी दास अग्रवाल करेंगे। इस दौरान विचित्र वेशभूषा प्रतियोगिता भी 12 वर्ष तक आयु वर्ग के लिये रखी गई है।

कार्यक्रम में उद्यमी राजेन्द्र अग्रवाल, राधेश्याम अग्रवाल, अरूण रंगवाला, भगवानदास को उद्यमी सम्मान, गोविन्दराम चौधरी, प्रेमरतन अग्रवाल, शिवशंकर सिंघानिया को दानदाता सम्मान से नवाजा गया।

मैंने फिर से गेंदबाजी शुरू कर दी है और जल्द ही प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी करने की राह पर हूं। लेकिन मेरे घुटने की चोट हाल ही में फिर से उभर आई है। बोर्ड की मेडिकल टीम चोट का आकलन कर रही हैं लेकिन इसके लिए काफी समय लगेगा। - मो. शमी

टीम इंडिया के गेंदबाज, अपनी चोट को लेकर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

स्मृति मंधाना

मंधाना ने कहा कि फैंस की भावनाओं के कारण है ये एक अहम मुकाबला बन जाता है। मंधाना ने कहा कि, मेरे हिसाब से भारत और पाकिस्तान प्रतिद्वंद्विता किसी और चीज से ज्यादा फैंस की भावनाओं के बारे में है। ऐसा नहीं होता कि खिलाड़ी एक दूसरे से बात नहीं करते। ये दोनों देशों की भावनाएं हैं जो इस मैच को अहम बनाती है। मेरे लिए वर्ल्ड कप का हर मैच खास है और हम हर खेल में समान प्रयास करते हैं। लेकिन निश्चित रूप से भारत पाकिस्तान खेलों से बहुत सारी भावनाएं जुड़ी हुई हैं। ऑस्ट्रेलिया के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि, विश्व कप में हर गेम अहम है।

क्या आप जानते हैं ?... जिम्बाब्वे के तातेन्द्र तेबु ने मई 2004 में श्रीलंका के विरुद्ध अपनी टीम की कप्तानी करके सबसे कम उम्र का टेस्ट कप्तान बनने का रिकार्ड अपने नाम कर लिया।

बुमराह नंबर वन गेंदबाज, यशस्वी और कोहली की छलांग

दुबई, 2 अक्टूबर। कानपुर टेस्ट में छह विकेट लेने वाले भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह हमवतन रविचंद्रन अश्विन को पछाड़ते हुए टेस्ट रैंकिंग में नंबर वन गेंदबाज बन गए हैं। इसके अलावा बल्लेबाजी रैंकिंग में यशस्वी जयसवाल तीसरे पायदान और विराट कोहली छठें स्थान पर पहुंच गये हैं।

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की जारी ताजा रैंकिंग के अनुसार गेंदबाजी में बुमराह 870 अंकों के साथ पहले पायदान पर है। वहीं आर अश्विन 869 अंक के साथ दूसरे स्थान पर पहुंच गये है। यह दूसरी बार है जब बुमराह टेस्ट रैंकिंग में नंबर वन बने हैं। इससे पहले फरवरी में भी वह नंबर वन गेंदबाज बने थे और वह ऐसा करने वाले पहले भारतीय तेज गेंदबाज थे।

कानपुर टेस्ट में दो अर्धशतकों के साथ प्लेयर ऑफ द मैच बनने वाले सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल अब बल्लेबाजो की टेस्ट रैंकिंग में तीसरे स्थान पर आ गए हैं, वहीं विराट कोहली ने शीर्ष 10 में वापसी करते हुए छठे स्थान पर पहुंच गये। कोहली ने कम स्कोरिंग वाले कानपुर टेस्ट में 47 और नाबाद 29 का स्कोर खड़ा किया था। न्यूजीलैंड के खिलाफ गाले में खेले गए दूसरे टेस्ट में नाबाद 182 रन बनाने वाले कामिंडु मेंडिस अब बल्लेबाजों की रैंकिंग में 11 वें स्थान पर हैं, वहीं बांग्लादेश के मेहदी हसन मिराज अब टेस्ट क्रिकेट के शीर्ष पांच ऑलराउंडर्स में शुमार हो गए हैं।

भारत में पहली बार होगा खो-खो विश्वकप, 24 देश लेंगे हिस्सा

नई दिल्ली, 2 अक्टूबर। भारत में अगले साल खो-खो विश्व कप का आयोजन किया जायेगा जिसमें छह महाद्वीपों के 24 देश हिस्सा लेंगे। भारतीय खो-खो महासंघ ने अंतर्राष्ट्रीय खो-खो फेडरेशन के सहयोग से 2025 में भारत में पहले खो खो विश्वकप के आयोजन का ऐलान किया है जिसमें छह महाद्वीपों के 24 देश भाग लेंगे। इसमें 16 पुरुष और 16 महिला टीमें भाग लेंगी।

खो-खो की जड़ें भारत में हैं। आज, यह खेल जो मिट्टी से शुरू हुआ और मैट पर आ गया है और दुनिया भर में 54 देशों के साथ वैश्विक उपस्थिति बना चुका है। विश्व कप से पहले खेल को बढ़ावा देने के लिए भारतीय खो-खो महासंघ 10 शहरों के 200 एलीट स्कूलों में खेल को ले जाने की योजना बना रहा है। महासंघ स्कूली छात्रों के लिए सदस्यता अभियान भी चलाएगा, जिसका उद्देश्य विश्व कप से पहले कम से कम 50 लाख खिलाड़ियों को पंजीकृत करना है।

भारतीय खो-खो महासंघ के अध्यक्ष सुधांशु मित्तल ने कहा,हम पहले खो-खो विश्व कप की मेजबानी करने के लिए बेहद उत्साहित हैं। यह टूर्नामेंट सिर्फ़ प्रतिस्पर्धा की मिसाल नहीं बनेगा बल्कि यह देशों को एक साथ लाने, सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने और दुनिया को खो-खो की सुंदरता और तीव्रता दिखाने का काम करेगा। हमारा अंतिम लक्ष्य 2032 तक खो-खो को ओलंपिक खेल के रूप में मान्यता दिलाना है और यह विश्व कप उस सपने की ओर पहला कदम है।

इस टूर्नामेंट में एक हफ़्ते तक चलने वाले मैचों की श्रृंखला होगी, जिसमें दुनिया भर के शीर्ष-स्तरीय एथलीट अपने कौशल, चपलता और टीमवर्क का प्रदर्शन करेंगे। इस बीच, खो-खो विश्व कप का उद्देश्य इस स्वदेशी भारतीय खेल को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर पहुंचाना है। इस ऐतिहासिक टूर्नामेंट की मेजबानी करके, केकेएफआई 2032 संस्करण तक ओलंपिक खेलों में खो-खो की जगह सुरक्षित करने की इच्छा रखता है।

अखिल भारतीय वन खेल प्रतियोगिता 16 अक्टूबर से

रायपुर, 2 अक्टूबर। छत्तीसगढ़ 27वीं अखिल भारतीय वन खेल प्रतियोगिता 2024 का मेज़बान बनने जा रहा है। इस प्रतिष्ठित खेल प्रतियोगिता का आयोजन केंद्र सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तत्वावधान में रायपुर में 16 से 20 अक्टूबर तक आयोजित किया जाएगा। छत्तीसगढ़ के लिए यह आयोजन एक महत्वपूर्ण अवसर है, जो राज्य की खेल प्रतिभाओं और वन विभाग के उत्कृष्ट प्रयासों को प्रदर्शित करेगा। इस खेल महोत्सव में देशभर से वन विभाग के खिलाड़ी विभिन्न खेल प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेंगे। प्रतियोगिता का मुख्य आकर्षण 20 अक्टूबर को आयोजित समापन समारोह में पेरिस ओलंपिक 2024 की पदक विजेता और विश्वप्रसिद्ध निशानेबाज मनु भाकर की उपस्थिति होगी, जो खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाएंगी। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय और वन मंत्री केदार कश्यप के नेतृत्व में राज्य की तैयारियां जोर-शोर से चल रहीं है। प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख व्ही. श्रीनिवास राव एवं नोडल अधिकारी श्रीमती शालिनी रैना के निर्देशन में राज्य के खिलाड़ी पेशेवर कोचों की देखरेख में कड़ी मेहनत कर रहे हैं। वन परिसर पंडरी, रायपुर में खिलाड़ियों के लिए उच्चस्तरीय आवास और पौष्टिक भोजन की समुचित व्यवस्था की गई है, ताकि वे अपनी फिटनेस बनाए रख सकें और सर्वोत्तम प्रदर्शन कर सकें। छत्तीसगढ़ की टीम को इस प्रतियोगिता में विभिन्न राज्यों और संस्थानों के खिलाडियों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा, जिसके लिए टीम पूरी तरह से प्रेरित तथा आत्मविश्वास से परिपूर्ण है। छत्तीसगढ़ के प्रमुख खिलाड़ियों में अंतरराष्ट्रीय बैडमिंटन खिलाड़ी संगीता राजगोपालन का नाम विशेष उल्लेखनीय है, जिन्होंने राज्य के लिए 100 से अधिक स्वर्ण पदक जीतकर गौरव बढ़ाया है।

भारत दौरे से पहले टिम साउदी ने छोड़ी न्यूजीलैंड की कप्तानी

नई दिल्ली, 2 अक्टूबर। श्रीलंका के खिलाफ 2 मैचों की टेस्ट सीरीज में क्लीन स्वीप के बाद टिम साउदी ने न्यूजीलैंड के कप्तान पद से इस्तीफा दे दिया है। भारत दौरे पर 3 मैचों की टेस्ट सीरीज में टॉम लैथम कप्तानी करेंगे। लैथम ने इंटरनेशनल क्रिकेट में 10 हजार से ज्यादा रन बनाए हैं। लैथम ने इससे पहले 2020 और 2022 के बीच टेस्ट टीम की कप्तानी संभाली थी। साउदी ने 2022 में केन विलियमसन के बाद टीम की कमान संभाली थी। उन्होंने 14 टेस्ट में टीम का नेतृत्व किया, जिसमें 6 जीत, 6 हार और दो मैच ड्रॉ रहे। न्यूजीलैंड ने गॉल में पहला टेस्ट कड़ा संघर्ष करते हुए गंवा दिया, लेकिन दूसरे टेस्ट में उसे एक पारी से हार झेलनी पड़ी। अफगानिस्तान के खिलाफ ग्रेटर नोएड में मैच धुल गया था। वहीं उससे पहले कीवी टीम को 2 मैच में शिकस्त मिली। इसके बाद भी टीम 2 मैच हार गई। न्यूजीलैंड को 3 मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए भारत दौरे पर आना है। 16 अक्टूबर से मैच होंगे।

बाबर आजम ने छोड़ी पाकिस्तान वनडे और टी-20 की कप्तानी

नई दिल्ली, 2 अक्टूबर। पाकिस्तान क्रिकेट में आए दिन कुछ न कुछ होता ही रहता है। फिर चाहे खिलाड़ियों के आपस में मनमुटाव की खबरें हो या पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड की तरफ से कोच और स्टाफ को बदलने की खबरें। वहीं अब बाबर आजम ने पाकिस्तान की वनडे और टी20 टीम की कप्तानी छोड़ दी है। उन्होंने पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड को अपना इस्तीफा सौंप दिया है। बाबर आजम ने पहले भी ऐसा किया था, उन्होंने वनडे वर्ल्ड कप 2023 के बाद भी ऐसा ही कुछ किया था लेकिन पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने उनको फिर से कप्तानी की जिम्मेदारी सौंप दी थी, लेकिन एक बार फिर से उन्होंने इस्तीफा देकर सभी को चौंका दिया है। इस बार उन्होंने इस्तीफा देने के पीछे अपनी खराब परफॉरमेंस को जिम्मेदार बताया है। साथ ही कहा है कि वह अपनी बल्लेबाजी पर फोकस करना चाहते हैं। बाबर आजम ने देर रात की गई एक पोस्ट के जरिए अपने फैंस को इसकी जानकारी दी। उन्होंने एक्स पर लिखा कि, प्रिय फैंस, मैं आज आपके साथ कुछ समाचार शेयर कर रहा हूं। मैंने पिछले महीने पीसीबी और टीम प्रबंधन को दी गई सूचना के अनुसार पाकिस्तान पुरुष टीम के कप्तान के पद से इस्तीफा देने का फैसला किया है। इस टीम का नेतृत्व करना मेरे लिए सम्मान की बात है, लेकिन अब समय आ गया है कि मैं पद छोड़ दूं और अपनी खेल भूमिका पर ध्यान केंद्रित करूं।

वायुसेना ने यूनाइटेड भारत को हराया

नई दिल्ली, 2 अक्टूबर। मैन ऑफ द मैच अमन खान के शानदार खेल की बदौलत बुधवार को भारतीय वायुसेना ने यूनाइटेड भारत को 3-0 से हराकर डीएसए प्रीमियर लीग में आसान जीत दर्ज की। आज यहां अंबेडकर स्टेडियम पर खेले गए एकतरफा मुकाबले में सीनियर डिवीजन से प्रोमोट हुई यूनाइटेड भारत एक बार फिर हार बचाने में नाकाम रही। उसे लगातार तीसरी हार का सामना करना पड़ा। हालांकि भारतीय वायुसेना ने शुरुआती मिनटों में ही दो गोल की बढ़त बना ली थी लेकिन दूसरे और पांचवें मिनट में अमन खान के गोलों से बढ़त लेने के बाद वायुसेना को तीसरा गोल जमाने में 74 मिनट तक इंतजार करना पड़ा। अंतत: 79वें मिनट में सौरव ने स्कोर 3-0 किया। जीत के साथ वायुसेना ने तीन मैचों में चार अंक हो गये हैं जबकि यूनाइटेड भारत लगातार तीसरा मैच हार कर जीरो अंक के साथ बारहवें और अंतिम स्थान पर है। गुरुवार को गढ़वाल एफसी और तरुण सांघा के बीच एक बजे तथा रॉयल रेंजर्स बनाम दिल्ली एफसी चार बजे मुकाबला खेला जायेगा।

सरफराज के दोहरे शतक से मुंबई मजबूत

लखनऊ, 2 अक्टूबर। सरफराज खान (221 नाबाद) के दोहरे शतक की बदौलत मुंबई ने ईरानी कप के पांच दिवसीय मुकाबले के दूसरे दिन बुधवार को शेष भारत के खिलाफ पहली पारी में नौ विकेट पर 536 रन बना कर अपनी स्थिति मजबूत कर ली। इकाना स्टेडियम पर आज के खेल के हीरो मुंबई के विशेषज्ञ मध्यक्रम के बल्लेबाज सरफराज थे जिनका जवाब शेष भारत के किसी भी गेंदबाज के पास नहीं था। यूपी में आजमगढ़ के मूल निवासी सरफराज ने अपने कल के स्कोर 54 रन से आगे खेलना शुरु किया और आज की एक अंतहीन पारी में अपनी पूरी लय में दिखायी दिये। उन्होने प्रथम श्रेणी क्रिकेट करियर का अपना 14वां शतक शान के साथ पूरा किया।

सबालेंका ने चीन ओपन में कीज को हराया, शंघाई मास्टर्स में मोनफिल्स जीते

बीजिंग, 2 अक्टूबर। महिलाओं की विश्व रैंकिंग में दूसरे स्थान पर काबिज बेलारूस की आर्यना सबालेंका ने बुधवार को यहां मैडिसन कीज को सीधे सेट में 6-4, 6-3 से हराकर चीन ओपन टेनिस टूर्नामेंट के क्वार्टरफाइनल में प्रवेश करने के साथ ही अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ 15 लगातार जीत की बराबरी की। तीन बार की ग्रैंडस्लैम विजेता सबालेंका ने अगस्त में सिनसिनाटी ओपन टूर्नामेंट जीतकर इस सिलसिले की शुरुआत की थी और उन्होंने पिछले महीने अमेरिकी ओपन का खिताब हासिल कर इस विजय अभियान को जारी रखा।

उन्होंने इस साल की शुरुआत में ऑस्ट्रेलियाई ओपन भी जीता था। इससे पहले सबालेंका ने 2020-21 के सत्र में लगातार 15 मैच जीते थे। 26 वर्षीय सबालेंका अब क्वार्टरफाइनल में चेक गणरज्य की कैरोलिना मुचोवा से भिड़ेंगी, जिन्होंने स्पेन की क्रिस्टीना बुक्सा को 6-2, 6-0 से हराया। वहीं पुरुष वर्ग में शीर्ष रैंकिंग वाले यानिक सिनर का फाइनल में सामना तीसरे नंबर के खिलाड़ी कार्लोस अल्काराज से होगा। सिनर और अल्काराज ने इस साल चारों ग्रैंडस्लैम जीते हैं।

दूसरी ओर जारी शंघाई मास्टर्स टूर्नामेंट में फ्रांस के अनुभवी खिलाड़ी गेल मोनफिल्स ने दामिर दजुमहुर को 6-4, 6-3 से पराजित करके दूसरे दौर में प्रवेश किया। 38 वर्षीय मोनफिल्स अगले दौर में अर्जेंटीना के सेबेस्टियन बाएज का सामना करेंगे। इसके अलावा आर्थर रिंडरकनेच ने अमेरिका के रीली ओपेल्का को 6-4, 7-6 (5) से तो नीदरलैंड्स के बोटिक वॉन डे जैंड्सचुल्प ने पाब्लो कैरेनो बुस्टा को 7-6 (5), 6-2 से हराया। एलेक्जेंडर मुलर ने भी एक सेट से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए इटली के लुका नार्डी को 4-6, 6-1, 6-1 से शिकस्त दी।

दिवांशी, मुकेश नेलवल्ली ने 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा में जीते स्वर्ण पदक

लीमा, 2 अक्टूबर। भारतीय निशानेबाजों दिवांशी, मुकेश नेलवल्ली ने आईएसएसएफ जूनियर विश्व चैंपियनशिप शानदार प्रदर्शन करते हुए 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा में दो स्वर्ण पदक जीते। पेरू की राजधानी लीमा में मंगलवार को दिवांशी ने महिलाओं की 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा के फाइनल में वापसी करते हुए शानदार जीत दर्ज करते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया। अपने पहले 11 शॉट्स में से सात में चूकने के बावजूद 18 वर्षीय दिवांशी ने संभावित 50 में से 35 का स्कोर दर्ज करने के लिए वापसी की और इटली की क्रिस्टीना मैग्नानी को दो अंकों से पीछे छोड़ दिया। भारतीय निशानेबाज जबरदस्त प्रदर्शन का सामना करने से पहले दोनों निशानेबाज पांच शॉट की अंतिम सीरीज में 31 के स्कोर पर बराबरी पर थे। फ्रांस की हेलोइस फोरे ने 30 के स्कोर के साथ कांस्य पदक जीता। वहीं मुकेश नेलवल्ली ने हमवतन सूरज शर्मा को पीछे छोड़ते हुए पुरुष वर्ग का खिताब जीता।

2025 में ये दो टीमें बिगाड़ सकती है भारत का खेल

नई दिल्ली, 2 अक्टूबर। भारत ने बांग्लादेश को 2 टेस्ट की सीरीज में पूरी तरह सफाया करके वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल की राह आसान कर दी है। अब मौजूदा वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप चरण में कुल 10 सीरीज यानी 26 टेस्ट बाकी हैं और फाइनल की रेस मेजदार हो गई है। इस रेस में अनुमान लगाया जा रहा है कि, भारत, ऑस्ट्रेलिया के अलावा श्रीलंका और साउथ अफ्रीका सबसे आगे हैं। जानते हैं कि इन चारों टीमों के फाइनल में पहुंचने की कितनी संभावनाएं हैं? फिलहाल भारत का डब्ल्यूटीसी पर्सेंटेज पॉइंट 74.24 हैं और भारत को कुल 8 टेस्ट खेलने हैं। इसमें से तीन न्यूजीलैंड के खिलाफ घर में और बाकी 5 ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उसके घर में हैं। वहीं अगर टीम इंडिया अपने सभी 8 टेस्ट जीत जाता है तो भारत के 85.09 पर्सेंटेज पॉइंट हो जाएंगे। सभी 8 टेस्ट जीतने इतने भी आसान नहीं होंगे। ऐसे में भारत का लक्ष्य होगा कि वो इतने अंक हासिल कर ले कि बिना दूसरी टीमों के नतीजे के डब्ल्यूटीसी फाइनल का टिकट पक्का हो जाए। इसके लिए भारत को बाकी बचे 8 टेस्ट में से कम से कम 4 जीतने ही होंगे।

कोषाध्यक्ष सहदेव ने अध्यक्ष पीटी उषा के दावों को गलत बताया

नई दिल्ली, 2 अक्टूबर। भारतीय ओलंपिक संघ के कोषाध्यक्ष सहदेव यादव ने आईओए कार्यकारी समिति के सदस्यों के पेरिस ओलंपिक पदक विजेताओं को सम्मानित करने के प्रस्ताव पर सहमत नहीं होने के अध्यक्ष पीटी उषा के दावे के लिए उन पर पलटवार करते हुए कहा उनका दावा बिलकुल गलत है। उषा ने सोमवार को कहा था कि ये बेहद चिंताजनक है कि कार्यकारी समिति के सदस्य ओलंपिक पदक विजेताओं को सम्मानित करने में विफल रहे और उन्होंने वित्त समिति पर पेरिस खेलों के लिए भारतीय खिलाड़ियों की तैयारी के लिए दिए जाने वाले कोष को रोकने का आरोप लगाया।

उषा के दावों का खंडन करते हुए सहदेव ने कहा कि, कार्यकारी समिति के सदस्यों के साथ कोई चर्चा नहीं हुई है और न ही पेरिस ओलंपिक 2024 के पदक विजेताओं के लिए सम्मान समारोह आयोजित करने के लिए लिखित में कोई आधिकारिक प्रस्ताव है। भारतीय भारोत्तोलन महासंघ के भी अध्यक्ष सहदेव ने उषा पर आईओए संविधान के अनुसार जिम्मेदारी लेने के बजाय झूठ फैलाने और मनगढ़ंत बातें करने का आरोप लगाया।

सहदेव ने आगे कहा कि, हम ये समझ पाने में असफल हैं कि आईओए अध्यक्ष पूरे देश में झूठ क्यों फैला रही हैं। कार्यकारी समिति के सदस्यों को नीचा दिखाने के लिए जबक इसका ना तो कोई सबूत है और ना ही कोई वास्तविक आधार है। उन्होंने कहा कि, उनके बार-बार के प्रयास और प्रस्ताव कुछ और नहीं बल्कि सफेद झूठ हैं जिन्हें अध्यक्ष हर बार मीडिया के सामने मगरमच्छ के आंसू बहाते हुए गढ़ती रहती हैं। पेरिस ओलंपिक खेलों में भारत ने युवा निशानेबाज मनु भाकर के दो कांस्य पदक सहित कुल 6 पदक जीते लेकिन उषा ने कहा कि, कार्यकारी समिति उनकी सफलता का जश्न नहीं मनाना चाहती हैं।

पीएम मोदी से मिलकर खिल उठे क्रिस गेल

नई दिल्ली, 2 अक्टूबर। वेस्टइंडीज के पूर्व दिग्गज क्रिकेटर क्रिस गेल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की है। गेल ने खुद मुलाकात का वीडियो शेयर किया है, जो तेजी से वायरल हो रहा है। उन्होंने पीएम मोदी को हाथ जोड़कर नमस्ते किया। गेल के नमस्ते पर भारतीय फैंस अपना दिल हार गए। उनके इस अंदाज की जमकर तारीफ हो रही है। बता दें कि पीएम मोदी और जमैका के प्रधानमंत्री एंड्रयू होलनेस के बीच मंगलवार को नई दिल्ली स्थिति हैदराबाद हाउस में द्विपक्षीय शिखर बैठक हुई। जमैका में जन्मे गेल हैदराबादस हाउस में ही भारतीय प्रधानमंत्री से मिले।

होलनेस ने पीएम मोदी को जो बल्ला गिफ्ट किया, उस पर गेल का साइन था। 45 वर्षीय गेल ने मुलाकात का वीडियो शेयर करते हुए लिखा कि, भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलकर सम्मानित महसूस कर रहा हूं। जमैका टू इंडिया वन लव। वहीं पीएम मोदी ने होलनेस से बैठक के बाद कहा कि, भारत और जमैका के संबंध हमारे साझा इतिहास, साझा लोकतांत्रिक मूल्यों और मजबूत जन आधारित संबंधों पर आधारित हैं। हमारे संबंधों को कल्चर, क्रिकेट, कामनवेल्थ और कैरीकॉम अंकित करते हैं।

नीरज की मां के हाथ का बना चूरमा खाकर मोदी हुये भावुक

नयी दिल्ली, 2 अक्टूबर। भारतीय भाला फेंक स्टार नीरज चोपड़ा की माँ के हाथ का बना स्वादिष्ट व्यंजन चूरमा खाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भावुक हुये। इस विशेष मुलाकात चूरमा खाने के बाद श्री मोदी ने नीरज की मां को एक पत्र लिखा और उनका धन्यवाद किया। कल जमैका के प्रधानमंत्री जी की भारत यात्रा के अवसर पर आयोजित भोज में मुझे भाई नीरज से मिलने का अवसर मिला। उनसे चर्चाओं के बीच मेरी खुशी तब और बढ़ गई, जब उन्होंने मुझे आपके हाथों से बना स्वादिष्ट चूरमा दिया। आज इस चूरमे को खाने के बाद आपको पत्र लिखने से खुद को रोक ना सका। भाई नीरज अक्सर मुझसे इस चूरमे की चर्चा करते हैं, लेकिन आज इसे खाकर मैं भावुक हो गया। आपके अपार स्नेह और अपनेपन से भरे इस उपहार ने मुझे मेरी मां की याद दिला दी।

टी-20 वर्ल्डकप में टकराएंगी भारत-पाक की टीम

नई दिल्ली, 2 अक्टूबर। आईसीसी महिला टी20 वर्ल्ड कप 2024 का आगाज 3 अक्टूबर से होगा। पहला मैच बांग्लादेश और स्कॉटलैंड के बीच होगा। वहीं, भारतीय महिला टीम अपने पहले मैच में 4 अक्टूबर को न्यूजीलैंड से भिड़ेगी। ये मुकाबला दुबई में खेला जाएगा। हालांकि, फैंस को भारत और पाकिस्तान मैच का बेसब्री से इंतजार है। भारत और पाकिस्तान महिला टी20 वर्ल्ड कप 2024 रविवार 6 अक्टूबर को खेला जाएगा।

भारत और पाकिस्तान महिला टी20 वर्ल्ड कप मैच भारतीय समयानुसार दोपहर 3.30 बजे शुरू होगा भारत और पाकिस्तान टी20 वर्ल्ड कप मैच दुबई के इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा। इस टूर्नामेंट में दुनिया की शीर्ष 10 टीमें दो समूहों में तीन से 20 अक्टूबर तक खिताब के हासिल करने के लिए स्पर्धा करेंगी। सभी टीमें राउंड-रॉबिन प्रारूप में ग्रुप स्टेज मुकाबले खेलने के बाद, प्रत्येक ग्रुप से शीर्ष दो टीमें सेमीफाइनल में पहुंचेंगी। भारतीय महिला क्रिकेट टीम रिकॉर्ड छह बार के चैंपियन ऑस्ट्रेलिया, प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान, न्यूजीलैंड और श्रीलंका के साथ ग्रुप ए में है। वहीं ग्रुप बी में दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, वेस्टइंडीज, बांग्लादेश और स्कॉटलैंड है।

आर्मी रेड ने कानोता को 10 गोल से और जयपुर यूएसपीए ने क्राईसिल पोलो को सात गोलों से हराया

क्राईसिल टीम के खिलाड़ी अलबेरदी को शॉट लगाने से रोकते हुए जयपुर यूएसपीए के खिलाड़ी पदमनाभ सिंह। - जाकिर हुसैन

जयपुर ,2 अक्टूबर। 61कैवेलरी मैदान पर खेले गये मैच में आर्मी रेड ने कानोता पोलो टीम को 6.5 के मुकाबले 10 गोलों से हराया। आर्मी रेड की ओर से मुकेश गुर्जर ने 5, कर्नल विशाल चौहान ने 3 और गोनजालों यनजोन ने 2 गोल किये। वहीं कानोता पोलो टीम को 2.5 गोल की बढ़त मिली। सलीम आजमी ने एक और गौरव सहगल ने तीन गोल किये। दूसरे मैच राजस्थान पोलो मैदान पर जयपुर यूएसपीए ने क्राईसिल पोलो टीम को 4 गोल के मुकाबले 7 गोलों से हराया। जयपुर यूएसपीए की ओर से हिम्मत सिंह बेदला ने पांच गोल, लांस वॉटसन और महाराजा सवाई पदमनाभ सिंह ने 1-1 गोल किये। वहीं क्राईसिल पोलो की ओर से बहेतरीन खिलाड़ी शमशीर अली पूरी टीम को संभालते नजर आये, केवल अलबेरदी ने 4 गोल किये।

मुख्यमंत्री ने 21 हजार घुमंतु परिवारों को आवासीय पट्टे दिये

भजनलाल शर्मा ने कहा कि घुमंतु व विभुक्त जातियाँ हमारी संस्कृति का जीवन्त हिस्सा हैं

- **उन्होंने कहा कि 2014 को गांधी जयन्ती पर प्रधानमंत्री द्वारा शुरु किया गया ''स्वच्छ भारत मिशन'' एक जन आंदोलन बन चुका है। इसका प्रभाव गाँवों, शहरों व कस्बों में दिखाई देता है।**
- **मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि स्थानीय निकायों के माध्यम से 23,820 सफाई कर्मचारियों की भर्ती की विज्ञप्ति भी सरकार ने जारी की है।**

जयपुर, 2 अक्टूबर। बुधवार को दुर्गापुरा -स्थित राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान में आयोजित 'स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण एवं आवासीय पट्टा वितरण कार्यक्रम' को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र और राज्य सरकार महात्मा गांधी जी की स्वच्छता और गरीब कल्याण के विचार को साकार करने की दिशा में लगातार कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने देश में मजदूर, किसान, युवा और महिला को ही चार जातियां माना है और इन वर्गों के उत्थान को ही केन्द्र में रखकर योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि 2 अक्टूबर का दिन देश के दो महापुरूषों, गांधी जी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म दिवस है। दोनों महापुरूषों ने राष्ट्र की मजबूती के लिए समर्पित भाव से कार्य किया। गांधीजी का मानना था कि 'स्वच्छता ही सेवा' है और यही विचार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा वर्ष 2014 में गांधी जयंती पर शुरू किए गए 'स्वच्छ भारत मिशन' का मूल आधार है।

इसी के तहत 17 सितंबर से आज 2 अक्टूबर तक 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान चलाया जा रहा है, जिसमें लक्षित इकाइयों को स्वच्छ स्थानों में परिवर्तित किया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने विमुक्त, घुमंतु एवं अर्धघुमंतु समुदायों के आवासहीन व्यक्तियों को भूमि आवंटित करने का ऐतिहासिक कदम उठाया है। करीब 21 हजार लाभार्थी परिवारों को भूमि का पट्टा दिया गया है। राजस्थान की घुमंतू, अर्धघुमंतु, विमुक्त जातियां हमारी संस्कृति का जीवंत हिस्सा हैं। इन्होंने अंग्रेजों की यातनाएं सहकर देश को आजादी दिलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि इन लोगों को स्वयं का आवास मिले, हम इस पर काम कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में राज्य सरकार के विभिन्न विभागों में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के लगभग 60 हजार पद रिक्त हैं, जिन पर पूर्ववर्ती सरकार ने ध्यान नहीं दिया और नियुक्तियां नहीं की। अब हमारी सरकार द्वारा स्थानीय निकायों के माध्यम से 23 हजार 820 सफाई कर्मचारियों की भर्ती की विज्ञिप्त भी जारी की गई है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने घुमंतु, अर्धघुमंतू एवं विमुक्त समुदाय के परिवारों को आवासीय भूखंड के पट्टे वितरित किए। मुख्यमंत्री ने कुछ लाभार्थियों से संवाद भी किया। बीकानेर जिले के लाभार्थी मनफूल नाथ ने कहा कि हम स्थाई आवास के अभाव में वर्षों तक भटकते रहे, मगर आज राज्य सरकार ने हमें आवासीय पट्टा देकर हमें आसरा दिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज भूखंड का पट्टा मिला है तो आगे प्रधानमंत्री आवासीय योजना में मकान भी बनाकर दिया जाएगा। प्रदेश के विभिन्न जिलों में आयोजित समारोहों में लगभग 21 हजार परिवारों को पट्टा वितरण किया गया।

मुख्यमंत्री ने ''स्वच्छता ही सेवा'' अभियान के तहत उल्लेखनीय कार्य के लिए विभिन्न ग्राम पंचायतों एवं पंचायत समितियों को सम्मानित भी किया। उन्होंने सफाई कार्मिकों को पीपीई किट बांटे तथा ''सबकी योजना-सबका विकास'' विषय पर आधारित पुस्तिका का विमोचन किया।

कार्यक्रम में पंचायतीराज मंत्री मदन दिलावर, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज राज्यमंत्री ओटाराम देवासी, जयपुर सांसद मंजू शर्मा सहित जनप्रतिनिधिगण, वरिष्ठ अधिकारी तथा बड़ी संख्या में घुमंतु, अर्धघुमंतु एवं विमुक्त समुदाय के लोग उपस्थित थे।

रिपेयर खर्चा नहीं दिया, बीमा कंपनी पर 55 हजार रूपए हर्जाना लगा

जयपुर, 2 अक्टूबर। जिला उपभोक्ता आयोग, जयपुर-द्वितीय ने बीमित बोलेरो पिकअप के एक्सीडेंट होने पर उसके रिपेयर का खर्चा नहीं देने पर रिलायंस जनरल इंश्योरेंस कंपनी पर 55 हजार रुपए का हर्जाना लगाया है। वहीं, कंपनी को निर्देश दिए हैं कि वह सर्वेयर की ओर से तय की गई राशि, 1,37,213 रुपए का एक माह में परिवादी को भुगतान करे। आयोग ने कहा कि बीमा अवधि के दौरान ही बीमित वाहन का ट्रेक्टर-ट्रोली की लापरवाही से अचानक एक्सीडेंट हुआ है और सर्वेयर ने भी उसकी रिपेयर का खर्चा बताया है। ऐसे में बीमा कंपनी अपनी जिम्मेदारी से पीछे नहीं हट सकती है। आयोग के अध्यक्ष ग्यारसीलाल मीना व सदस्य हेमलता अग्रवाल ने यह आदेश मंगलचंद जाट के परिवाद पर दिए।

परिवाद में अधिवक्ता आरपी कुमावत ने बताया कि परिवादी ने विपक्षी इंश्योरेंस कंपनी से अपने पिकअप वाहन का 24533 रुपए प्रीमियम देकर 24 नवंबर 2014 से 23 नवंबर 2015 तक की अवधि के लिए बीमा करवाया था। इस दौरान 15 जुलाई 2015 को कोटा से जयपुर लौटते समय वाहन का टोंक जिले में एक ट्रेक्टर-ट्रोली की लापरवाही से एक्सीडेंट हो गया और उसमें वाहन मालिक मंगलचंद के गंभीर व चालक सुरेन्द्र के मामूली चोट आई। एक्सीडेंट के बाद उन्होंने वाहन को वर्कशॉप में 45 दिनों तक छोड़ा, लेकिन उसे सही नहीं किया गया।

कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव एवं छत्तीसगढ़ प्रभारी सचिन पायलट ने छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा निकाली गई 130 कि.मी. की ''न्याय यात्रा'' को सम्बोधित किया।

छत्तीसगढ़ में जनता के हक की लड़ाई जारी रहेगी- सचिन पायलट

प्रदेश कांग्रेस की 130 किलोमीटर की ''न्याय यात्रा'' की रायपुर में आम सभा हुई

- **आम सभा को संबोधित करते हुए पायलट ने कहा, ''न्याय यात्रा'' ने भाजपा सरकार की नाकामियों को जनता के सामने उजागर करने का काम किया है।**

रायपुर, 2 अक्टूबर। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव एवं छत्तीसगढ़ प्रभारी सचिन पायलट ने कहा कि छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बने अभी 10 महीने ही हुए हैं और जनता सड़कों पर उतर आयी है। प्रदेश की कानून-व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई है। दलितों, आदिवासियों, महिलाओं, पिछड़ा वर्ग के लोगों, किसानों के साथ हिंसा की वारदातें लगातार बढ़ रही हैं और जनता को राहत पहुंचाने के स्थान पर झूठे आंकड़े दिखाकर सरकार अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ रही है।

पायलट आज छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा निकाली गई 130 कि.मी. की ''न्याय यात्रा'' के रायपुर पहुंचने पर आयोजित विशाल आमसभा को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा आयोजित इस न्याय यात्रा ने प्रदेश की भाजपा सरकार की नाकामियों को जनता के सामने उजागर करने का काम किया है। साथ ही, जनता को यह विश्वास दिलाने का काम किया है कि कांग्रेस कार्यकर्ता जनता के साथ सदैव खड़ा है। उन्होंने कहा कि जनता से किये गये भाजपा के तमाम वादे झूठे निकले और प्रदेश की जनता अपने-आप को ठगा सा महसूस कर रही है।

उन्होंने कहा कि हरियाणा और जम्मू-कश्मीर में चुनाव चल रहे हैं। लोग कांग्रेस की ओर बड़ी उम्मीद से देख रहे हैं। अहंकार और घमण्ड की राजनीति करने वालों तथा दमनकारियों की तरह राज करने वालों को हरियाणा और जम्मू-कश्मीर की जनता करारा जवाब देगी। उन्होंने कहा कि जो लोग 300 पार, 400 की बात करते थे, आज उनको बैसाखियों के सहारे सरकार चलानी पड़ रही है।

छत्तीसगढ़ पी.सी.सी. द्वारा निकाली गई ''न्याय यात्रा'' के सफलतापूर्वक पूर्ण होने पर पायलट ने प्रदेश के सभी कांग्रेस नेताओं व कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि इस यात्रा से पूरी पार्टी में एक नयी ऊर्जा का संचार हुआ है।

'भाजपा सरकार ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जब अग्निवीर रिटायर होते हैं तो उन्हें रोजगार के लिए फिर लाइन में लगना पड़ता है।

प्रियंका ने बताया कि कैसे हरियाणा में परिवार के सब सदस्यों की इन्कम को जोड़कर फैमिली आई.डी. कार्ड दिए गए, जिससे उनके बच्चों को सरकारी स्कूलों में एडमिशन न मिले तथा उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिले, क्योंकि उनकी आय ज्यादा है।

प्रियंका ने बच्चों का पालन पोषण करने वाली महिलाओं के सशक्तिकरण की बात कही। उन्होंने महिलाओं से कहा कि वो भाजपा नेताओं को फटकार लगाएं। उन्होंने कहा, भाजपा दस साल से शासन कर रही है क्योंकि महिलाओं ने उन्हें फटकार नहीं लगाई। प्रियंका ने जनता से कहा कि बदलाव के लिए तथा उन कानूनों को हटाने के लिए वोट करें, जिनके कारण महंगाई और बेरोजगारी बढ़ती है तथा हर तरह के घोटाले होते हैं।

प्रियंका ने विधवाओं, वरिष्ठ नागरिकों व दिव्यांगों को प्रतिमाह 6000 रुपए पैंशन की घोषणा की। इसके अलावा, हर महिला को 2000 रुपए प्रतिमाह पैंशन तथा 1200 की जगह 500 रुपए में गैस सिलैण्डर देने की घोषणा की। उन्होंने पिछले दस वर्षों से खाली पड़े रिक्त पदों पर दो लाख भर्तियों का वादा भी किया।

कोटा संभागीय आयुक्त के जयपुर सहित कई ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अधीक्षक पुष्पेन्द्र सिंह राठौड़ के नेतृत्व में न्यायालय से तलाशी वॉरंट लिया गया। इसके बाद एसीबी की टीमों ने अलसुबह आरोपी के जयपुर, कोटा और दौसा स्थित 4 ठिकानों पर तलाशी की कार्रवाई की। विजय के जयपुर में तारों की कूट स्थित आवास पर भी टीम सुबह से मौजूद रही।

इस दौरान आरोपी आई.ए.एस. राजेन्द्र विजय के जयपुर स्थित आवास की तलाशी में 13 आवासीय व व्यावसायिक भूखण्डों के दस्तावेज मिले। इनमें टोंक रोड़ पर आलीशान मकान और गौरव टावर में ग्राउंड फ्लोर पर व्यावसायिक शोरूम जीटी गलेरिया और अशोक मार्ग सी-स्कीम ब्लॉक बी में भी प्रॉपर्टी हैं। इसके अलावा 2 लाख 22 हजार से अधिक की नगदी, 335 ग्राम सोने के आभूषण, 11 किलो 800 ग्राम चांदी के आभूषण एवं 3 चार पहिया वाहन मिले हैं। वहीं अनेक बीमा पॉलिसियों में निवेश, एक बैंक लॉकर और 16 अलग-अलग बैंक खाते मिले हैं, जिनमें लाखों रुपये जमा हैं।

प्रथम सूचना रिपोर्ट एवं अब तक तलाशी में मिले दस्तावेजों के अनुसार आरोपी राजेन्द्र विजय द्वारा अपने सेवाकाल में भ्रष्टाचार के साधनों द्वारा करोड़ों रुपये की चल-अचल परिसम्पत्तियां अर्जित करने का अनुमान है। इसके अतिरिक्त आरोपी एवं उसके परिजनों द्वारा कई बेनामी परिसम्पत्तियों में निवेश के साक्ष्य मिले हैं, जिनकी जाँच की जायेगी। एसीबी की अतिरिक्त महानिदेशक स्मिता श्रीवास्तव के निर्देशन में ए.सी.बी. की विभिन्न टीमों द्वारा आरोपी के ठिकानों पर तलाशी अभियान जारी है।

राजेंद्र विजय ने सात दिन पहले ही कोटा के डिविज़नल कमिश्नर का पदभार ग्रहण किया था। वे अभी सरकारी आवास में शिफ्ट नहीं हुए थे। वह कोटा में ही सर्किट हाउस में ठहरे हुए थे।

राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

- **बाद में इस आवास को 21 जून 2013 को ''राजस्थान आवास विकास एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लि.'' को आवंटित कर दिया।**

आवास ''4 ट 24'' उपलब्ध नहीं है, इसलिए उन्हें ''4 स 24'' दिया जायेगा।

हैरानी की बात यह है कि राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड ने जो आवास ''4 ट 24'' उपलब्ध नहीं होने की बात कहकर देने से मना किया था, वह विभाग के पास वर्ष 2000 तक उपलब्ध था, जिसे 14 जून 2000 को राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड के तत्कालीन वरिष्ठ अधिकारी अब्दुल मजीद की पत्नी सीमा मतीम को आवंटित कर दिया। यानि कि विभाग ने चहेते तत्कालीन अधिकारी को यह आवास देने के लिए सरला जैन को आवंटित आवास करीब 12 साल तक छिपाये रखा।

इससे भी ज्यादा हैरतअंगेज बात यह है कि, हाऊसिंग बोर्ड ने सरला जैन को आवास ''4 स 24'' देने का वादा किया था, वह भी नहीं दिया और उसे 3 अक्टूबर 2007 को पत्र लिखकर बताया कि, राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड ने यह आवास ''हाऊसिंग कमिश्नर'' के नाम पर रिजर्व कर रखा है। बाद में इस आवास को 21 जून 2013 को ''राजस्थान आवास विकास एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लि.'' को आवंटित कर दिया।

पीड़ित सरला जैन की शिकायत का यह प्रकरण जब राज्य उपभोक्ता न्यायालय में पहुंचा तो अदालत ने इस मामले में यह टिप्पणी भी की थी, ''जिन आवासों ''4 ट 24'' और ''4 स 24'' को देने से राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड मना करता रहा, वह विभाग के पास उपलब्ध थे। परंतु फिर भी पीड़िता को इन आवासों का कब्जा नहीं सौंपा।''

सबसे ज्यादा शर्मनाक बात यह है कि वर्ष 1988 से 2024 तक पिछले करीब 36 सालों में राजस्थान हाऊसिंग बोर्ड में चेयरमैन, कमिश्नर और वरिष्ठ अधिकारी बदलते रहे, लेकिन किसी ने भी पीड़ित सरला जैन के इस दुःख को नहीं समझा। यहां तक कि वर्ष 2016 में जिला उपभोक्ता न्यायालय ने हाऊसिंग बोर्ड के निर्णय को गलत ठहराते हुए पीड़ित के पक्ष में फैसला सुनाया था, उसके बाद भी अधिकारियों ने उन्हें आवास नहीं दिया। इसके विपरीत राज्य और राष्ट्रीय उपभोक्ता न्यायालय में समय सीमा खत्म होने के बाद अपील दायर की, इससे पीड़ित का मामला लंबित रहा।

मामले में पीड़िता के वकील सिद्धार्थ रांका का कहना है कि पीड़िता सरला जैन को पिछले 36 सालों से इतना प्रताड़ित इसलिए किया गया कि, विभाग के तत्कालीन अफसरों को उन्होंने रिश्वत नहीं दी थी। वे अपने मूल आवंटित आवास ''4 ट 24'' के लिए भी इसलिए लड़ती रही, क्योंकि वह विभाग के पास वर्ष 2000 तक उपलब्ध था।

रेलवे स्टेशनों को बम से उड़ाने के पत्र ने हड़कम्प मचाया

हनुमानगढ़ जंक्शन के स्टेशन अधीक्षक को यह पत्र मिला था, जिसमें जैश-ए-मोहम्मद का नाम लिखा था

- **पत्र में हनुमानगढ़, गंगानगर, बीकानेर, जोधपुर, जयपुर, बूंदी और उदयपुर सिटी को बम से उड़ाने की धमकी दी गयी थी।**
- **पुलिस व सुरक्षा एजेन्सियों ने सभी शहरों में सर्च अभियान चलाया तथा सतर्कता बरतने के निर्देश दिये।**

हनुमानगढ़, 2 अक्टूबर (कासं)। कई शहरों में रेलवे स्टेशनों को बम से उड़ाने की धमकी भरा लैटर मिलने के बाद से पुलिस सर्च जारी है। यह लैटर हनुमानगढ़ जिले के जंक्शन रेलवे स्टेशन को मिला है। पुलिस प्रशासन ने रेलवे पुलिस के साथ मिलकर पत्र की पड़ताल की। साथ ही पुलिस और बीएसएफ के जाप्ते ने मिलकर रेलवे स्टेशन पर सर्च अभियान चलाया, हालांकि जांच के दौरान कोई संदिग्ध वस्तु वगैरह रेलवे स्टेशन पर नहीं मिली। इस संबंध में अज्ञात के खिलाफ जी.आर.पी. थाने में मामला दर्ज किया गया है। इसकी जांच जी.आर.पी. बीकानेर के डीएसपी कर रहे हैं।

ए.एस.पी. प्यारेलाल मीणा ने बताया कि जंक्शन रेलवे स्टेशन अधीक्षक को लिफाफे में एक पत्र मिला। उसे खोलकर देखा तो उसमें हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, बीकानेर, जोधपुर, जयपुर, बूंदी, उदयपुर सिटी आदि रेलवे स्टेशनों को बम से उड़ाने की धमकी लिखी हुई थी। पत्र में जैश- ए-मोहम्मद संगठन का नाम लिखा हुआ था। इसके बाद रेलवे पुलिस बल, जी.आर.पी., पुलिस व बी.एस.एफ. की टीमों ने रेलवे स्टेशन परिसर में सर्च अभियान चलाया। स्टेशन परिसर में रेलवे पुलिस का अतिरिक्त जाप्ता तैनात किया गया है। पुलिस भी गश्त के दौरान रेलवे स्टेशन क्षेत्र में अतिरिक्त निगरानी रख रही है। पत्र किसने लिखा, कहां से पोस्ट किया गया है, इसकी जांच पड़ताल की जा रही है।

जंक्शन रेलवे स्टेशन गत वर्ष 24 अक्टूबर को भी तब चर्चा आ गया था, जब स्टेशन परिसर स्थित रेलवे अस्पताल के पास वाली दीवार पर अंग्रेजी भाषा में खालिस्तान जिंदाबाद लिखा हुआ पाया गया था। इसको लेकर स्टेशन मास्टर की रिपोर्ट पर अज्ञात जने के खिलाफ जी.आर.पी. थाने में राजद्रोह, रेलवे सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाने के प्रयास, नफरत फैलाने आदि धाराओं में मामला दर्ज किया गया। बीकानेर जी.आर.पी. के डी.एस.पी. मामले की जांच की।

इस प्रकरण में आरोपियों की पहचान लवप्रीत सिंह निवासी बदर पट्टी चौकी कोट समीर जिला बठिंडा तथा हरमनप्रीत सिंह निवासी नसीबपुर तहसील तलवंडी साबो जिला बठिंडा के रूप में कर, उनको 13 जनवरी 2024 को गिरफ्तार किया गया था। आरोपियों ने पूछताछ में बताया कि उनको देश विरोधी नारे खालिस्तान जिंदाबाद लिखने के लिए पैसे मिलते थे।

सुप्रीम कोर्ट ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मामले में कोई भी ठोस सबूत नहीं मिले हैं। वहीं, राजस्थान हाईकोर्ट ने भी सह आरोपियों को जमानत देते हुए फर्जी एन.ओ.सी. जारी करने में उनकी कोई भूमिका नहीं मानी है। याचिका में कहा गया कि चिकित्सक ने अस्पताल प्रशासन को एन.ओ.सी. मिलने के बाद ही ऑपरेशन किए थे। ऐसे में यह नहीं कहा जा सकता कि चिकित्सक फर्जी एन.ओ.सी. लेने की कार्रवाई में शामिल रहे हैं या उन्हें फर्जी एन.ओ.सी. की जानकारी थी।

ऐसे में फर्जी एन.ओ.सी. के जरिए आर्गन ट्रांसप्लांट से याचिकाकर्ता का कोई भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर संबंध नहीं है।

इसलिए उसके खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई पर रोक लगाई जाए। याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने याचिकाकर्ता के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई पर रोक लगा दी है।

नड्डा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सदस्यता अभियान के प्रदेश संयोजक डॉ अरूण चतुर्वेदी ने बताया कि राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा रात 8.30 बजे से भाजपा प्रदेश कार्यालय में प्रदेश के जनप्रतिनिधियों से सदस्यता अभियान को लेकर संवाद करेंगे। इस दौरान बैठक में सांसद, पूर्व सांसद, सांसद प्रत्याशी, विधायक, पूर्व विधायक, जिला प्रमुख, मेयर, उप महापौर के साथ प्रदेश सदस्यता अभियान की टोली तथा प्रदेश पदाधिकारी उपस्थित रहेंगे। बैठक में सदस्यता अभियान की समीक्षा बैठक के साथ आगामी रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

'अमेरिका हमेशा इज़रायल के साथ खड़ा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

- **पर, यह उल्लेखनीय बात है कि खाड़ी देश हालांकि, इज़रायल-अमेरिका द्वारा हिजबुल्लाह पर आक्रमण की निन्दा करते पाये गये हैं, पर, ये देश नाखुश नहीं हैं, ईरान के ''प्रेशर'' में आने से और इसीलिये वे नहीं चाहते थे कि ईरान अपने न्यूक्लियर बम विकसित करे, क्योंकि इसके बाद ईरान अन्य खाड़ी देशों पर भी दादागिरी करेगा।**

रही हैं, जहां हिजबुल्लाह के लोग रहते हैं और वे अक्सर इज़राइली बस्तियों पर हमला करते हैं। इन हमलों की वजह से उत्तरी इज़राइल में एक लाख से ढाई लाख लोग बेघर हो गए हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि इज़राइल दक्षिणी लैबनान में सुनियोजित तरीके से आगे बढ़ रहा है और यहां से हिजबुल्लाह से जुड़े आतंकी गुटों का सफाया कर रहा है। पेजर विस्फोट जैसे काण्ड इस सोची समझी रणनीति का हिस्सा थे।

इसके अलावा इज़राइल ने दिखा दिया है कि शत्रु के बारे में इसका नैटवर्क कितना मजबूत है। इसके पास अपने टारगैट के घर का पता, यहां तक कि कार नम्बर भी है और वह उन पर सटीकता से निशाना साध सकता है।

इज़राइल जानता था कि ईरान हमला करेगा और वह इसी का इन्तजार कर रहा था। लैबनान हिजबुल्लाह ईरान का मोर्चा है और इज़राइल के हमले से हिजबुल्लाह कमजोर हो रहा है। यह सीधे तौर पर ईरान पर हमला है। ऊपरी तौर पर मध्यपूर्व के कई देश ईरान और हिजबुल्लाह पर इज़राइल के एक्शन की आलोचना कर रहे हैं, पर ईरान पर दबाव पड़ने से वे खुश हैं। मिडिल ईस्ट के एक भी देश को यह पसंद नहीं कि ईरान के पास परमाणु संयंत्र हों, क्योंकि इससे उनके लिए भी खतरा है। सऊदी अरेबिया तो ईरान से भयभीत है, क्योंकि ईरान अक्सर सऊदी ओबिया के सीमावर्ती भागों पर भी हमला करता रहता है।

चालान समय पर पेश नहीं हुआ, आरोपी तस्कर को जमानत मिली

जयपुर, 2 अक्टूबर। अतिरिक्त मुख्य महानगर मजिस्ट्रेट महानगर द्वितीय ने विदेशी ई- सिगरेट तस्करी के मामले में कस्टम विभाग की ओर से तय समय, 60 दिन, में चालान पेश नहीं करने पर आरोपी सुनील कुमार शर्मा को जमानत पर रिहा करने के आदेश दिए हैं। अदालत ने शर्त लगाई है कि आरोपी केस लंबित रखते हुए भारत नहीं छोड़ेगा। आरोपी की ओर से कहा गया कि आरोपी को 25 जुलाई को गिरफ्तार किया था और तब से वह न्यायिक अभिरक्षा में ही है। विभाग की ओर से कोई परिवाद दायर नहीं किया है और उसकी न्यायिक अभिरक्षा की अवधि 60 दिन से ज्यादा हो गई है। आरोपी के खिलाफ ऐसा कोई अपराध नहीं है जिसमें उसे मृत्युदंड या दस साल की कैद की सजा हो सकती है। ऐसे में आरोपी की धारा 187 के तहत जमानत प्राप्त करने का अधिकारी है। जवाब में विभाग ने कहा कि आरोपी व उसके साथी विद्याधर नगर- स्थित परिसर में बड़ी मात्रा में तस्करी की हुई विदेशी ई -सिगरेट का व्यापार करते हैं।

इजरायल का गाज़ा पर बड़ा हमला, 51 लोगों की मौत

दीर अल-बला (गाजा पट्टी), 02 अक्टूबर। दक्षिणी गाजा में इजरायल ने आज फिर भीषण हमला किया है। इजरायली सेना ने यह हमला तेल अवीव पर ईरान की एयर स्ट्राइक के बाद किया है। इजरायली सेना की ओर से गाजा पर रातभर किये गये हमलों में कम से कम 51 लोग मारे गए हैं। फिलस्तीन के चिकित्सा अधिकारियों के अनुसार, मृतकों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। बता दें कि हमास द्वारा सात अक्टूबर को किए गए हमले के बाद फिलस्तीनी क्षेत्र में युद्ध छिड़ जाने के लगभग एक वर्ष बाद भी इजरायल ने गाजा में स्थित आतंकवादी ठिकानों पर हमले जारी रखे हैं, जबकि इसका ध्यान लेबनान और ईरान की ओर भी है।

उधर अब इजरायली थल सैनिकों ने हिजबुल्ला के विरुद्ध लेबनान में घुसपैठ की है।

'जब मैं ओलंपिक्स में डिस्क्वालिफाई हुई, मोदी जी का फोन...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पुडुचेरी में एक (बॉस्केटबाल) टूर्नामैंट में भाग लेना था। गांधी ने सुनाया, ''उसके (मेरी बेटी) तथा एक और लड़की के अलावा, उनकी टीम की अन्य सभी लड़कियाँ हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों की थीं। टीम की कप्तान रितिका नाम की एक लड़की थी। मैच वाले दिन, रितिका को 102 डिग्री बुखार था लेकिन वह पूरी मजबूती के साथ खड़ी हो गई और मैच खेली। यह चीज हरियाणा की लड़कियों के दृढ़ निश्चय को दर्शाती है।''

प्रियंका गांधी ने फोगाट, जो जुलाना से अपना राजनैतिक कैरियर शुरु कर रही हैं, की प्रशंसा की। उन्होंने कहा, ''विनेश अब तक की अपनी यात्रा में मजबूती से खड़ी रही है। वे टूट गई थीं, लेकिन फिर उठ खड़ी हुईं तथा ओलम्पिक में खेलने गईं। मोदी जी की पुलिस ने उन्हें दिल्ली की सड़कों पर बाल पकड़ कर घसीटा, लेकिन वे और मजबूत होकर उभरीं। उन्होंने पेरिस ओलम्पिक में देश का प्रतिनिधित्व किया तथा जापान की ''गोल्ड मैडिलिस्ट'' और विश्व चैम्पियन को हराया।

गांधी ने कहा, जब वे भारत लौटीं तो मुझसे मिलीं। उन्होंने मुझसे कहा कि वे टूटकर बिखर गई हैं। उन्होंने राजनीति में आने के बारे में मुझसे मेरी सलाह चाही। मैंने उनसे कहा कि उन्हें बिल्कुल आना चाहिये तथा चुनाव भी लड़ना चाहिये, (उन्हें चुनाव) अपनी खातिर नहीं, बल्कि हरियाणा की सभी बेटियों, सभी महिलाओं की खातिर लड़ना चाहिये।'' प्रियंका गांधी ने कहा, ''महात्मा गांधी ने भगवद् गीता की शिक्षाओं के साथ हमारे स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया। आज उनकी जयंती है। जब हम उन्हें याद करते हैं, हमें सत्यमेव जयते, अहिंसा और सत्य की सीख मिलती है। नवरात्रि का पर्व आ रहा है। हम अन्याय पर न्याय की विजय का उत्सव मनायेंगे।''

उन्होंने कहा, ''आज, हर स्तर पर आपके साथ छल और धोखा हो रहा है। प्रधानमंत्री, जो तीन काले कृषि कानून लाये थे, उस समय एक बार भी आप लोगों से मिलने नहीं आये, जब आप उनके निवास से केवल कुछ किलोमीटर की दूरी पर ही विरोध-प्रदर्शन कर रहे थे। वे जानते थे कि वे कानून केवल बड़े व्यवसायियों को लाभ पहुँचायेंगे, किसानों को नहीं। उन्होंने वे कानून तब वापस लिये, जब उत्तर प्रदेश विधानसभा के चुनाव आ गये थे।''

फोगाट ने कहा कि पिछले साल, जब वे तथा अन्य पहलवान पूर्व भाजपा सांसद तथा रेसलिंग फैडरेशन ऑफ इंडिया के तत्कालीन अध्यक्ष बृज भूषण सिंह के खिलाफ यौन-उत्पीड़न का केस दर्ज कराने के लिए आंदोलन कर रहे थे, उस समय हम पुलिस से जूझ रहे थे तब दीपेन्द्र सिंह हुड्डा भागे-भागे आए थे, यह देखने कि हम सब ठीक तो हैं।''

फोगाट ने कहा, ''जब हमारे पक्ष में एक ऐसे भाई हैं, तो मुझे पूरा विश्वास है कि आप सबका आशीर्वाद हमें मिलेगा। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि मैं आपके स्नेह को कई गुना करके आपको लौटाऊँगी। आप सब ने मुझे ओलम्पिक में मुकाबला करते हुये देखा होगा। ओलम्पिक में मेरे हिस्सा लेने के मामले में प्रियंका गांधी की बहुत बड़ी भूमिका रही थी। जब मैं उनसे मिली, मैंने उनसे कहा कि ''दीदी, मैं इतनी बुरी तरह टूट और बिखर चुकी हूँ कि मैं ऐसा सोचने लगी हूँ कि मुझे यह देश छोड़ देना चाहिये तथा अन्य किसी देश में चले जाना चाहिये।''

फोगाट ने आगे कहा, ''दीदी ने मुझे अपने पिता के साथ हुई दुर्घटना की कहानी सुनाई। उन्होंने मुझ से कहा कि वे स्वयं भी ऐसा महसूस करती हैं कि इस देश ने उनके तथा उनके परिवार के साथ न्याय नहीं किया। लेकिन, जब वे इस देश की सड़कों पर आईं ते उन्हें महसूस हुआ कि उनका दर्द बाँटने के लिये पूरा देश उनके साथ है। उन्होंने मुझे से कहा था कि पूरा देश गलत नहीं हो सकता तथा उन्होंने मुझे आश्वस्त किया था कि यह देश मुझ (फोगाट) पर भी अपना अपार स्नेह बरसायेगा।''

फोगाट ने कहा, ''उन्होंने मुझ से पूछा था कि क्या मैं कुश्ती लड़ना जारी रखना चाहूँगी। उन्होंने मुझे फिर से खेलने के लिये प्रेरित-प्रोत्साहित किया। वह एक ऐसा दिन था, जब कमरे में प्रवेश तो एक टूट चुकी लड़की ने किया था, लेकिन जब वह बाहर निकली, उस समय वह दुर्गा के रूप में थी। मैं राजनीति के लिये नई हूँ। ऐसा मत सोचना कि चूँकि में कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गई हूँ, इसलिये मैं इन लोगों की तारीफ कर रही हूँ। अपने हृदय के अन्तरतम से मैंने ऐसा महसूस किय है कि प्रियंका गाधी, राहुल गांधी, सोनिया गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे ये सब वरिष्ठ कांग्रेस नेता मेरे परिवार की तरह हैं।''

फोगाट ने आगे कहा, ''मुझ जैसी टूट चुकी लड़की का ख्याल जिस तरह से इस देश ने रखा है, वह वास्तव में प्रशंसनीय है। आज, मैं अपनी बहिनों से कह सकती हूँ कि आपके जीवन में उतार-चढ़ाव भले ही आते रहें, लेकिन प्रियंका गांधी जैसे लोग और कांग्रेस पार्टी आपके साथ हमेशा खड़े हैं।''

हरियाणा में विधानसभा चुनाव शनिवार को होंगे। जुलाना में, फोगाट का मुकाबला ''आप'' की कविता रानी, जो डब्ल्यू.डब्ल्यू.ई. पहलवान है, इंडियन नैशनल लोक दल के सुरेन्द्र लाठर, भाजपा के योगेश कुमार तथा जननायक जनता पार्टी के 2019 के विजयी उम्मीदवार अमरजीत ढ़ाढ़ा से होगा। इससे पूर्व, विनेश फोगाट ने जोर देते हुये कहा कि डिस्क्वालिफिकेशन के बाद उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से बात करने से इनकार कर दिया था।

फोगाट ने मोदी से बात इसलिये नहीं की थी कि राजनैतिक प्रयोजनों के लिये उनकी भावनाओं तथा प्रयासों का शोषण न हो।

''द लल्लन टॉप'' को दिये एक इन्टरव्यू में विनेश फोगाट ने कहा, ''प्रधानमंत्री का कॉल आया था लेकिन मैंने बात करने से मना कर दिया था। उनका कॉल सीधा मेरे पास नहीं, बल्कि भारतीय अधिकारियों के पास आया था। उन्होंने मुझे सूचित किया कि मोदी बात करना चाहते हैं मैं तैयार हो गई। लेकिन उन्होंने कुछ शर्ते लगाईं- मेरी टीम का कोई व्यक्ति (बातचीत के समय) मौजूद नहीं होगा तथा उनकी तरफ से दो लोग सोशल मीडिया के लिये बातचीत को रिकॉर्ड करेंगे।''

फोगाट ने कहा, ''मैं नहीं चाहती थी कि सोशल मीडिया पर मेरी भावनाओं और कड़ी मेहनत का मज़ाक उड़ाया जाये।''

मार्डन मीडिया, बीकानेर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 35214/79, जयपुर कार्यालयः सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय:-राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908